ससरफानी

मैथिली गल्प

लेखक
श्रीनगेन्द्रकुमार
विहार सिविल सर्विस

प्रकाशक
साहित्य-कार्यालय
पोस्ट—कुमर बाजितपुर
जिला—मुजफ्फरपुर

प्रथम संस्करण—१९४७
मूल्य २)

मुद्रक
श्रीजयनाथ मिश्र
हिमालय प्रेस, पटना

मैथिलीक आजन्म सेवक
पूज्य पिता
स्वर्गीय
पण्डित श्रीकुशेश्वर कुमरजीक
पुण्य
स्मृतिमें

आरम्भ

गत अक्तूबर मासमें ट्रेनक प्रतीक्षामें जखन हम वैद्यनाथधाम रेलवे स्टेशनक वेटिंग रूममें बैसल रही, ओही समयमें कालेजक दू गोट विद्यार्थीक परस्पर वार्त्तालापसँ एकटा कहानी लिखबाक इच्छा भेल। नवम्बरमें 'कालेजक विद्यार्थी' लिखल गेल जे एही संग्रहमें प्रकाशित कैल जाइत अछि। पश्चात् कोनो कोनो रविक दिन एक-आध घंटा समय बचा कऽ अन्यान्य गल्प लिखल गेल।

गल्प सभमें कतहु कतहु साहित्यिक पुट देबाक चेष्टा कैल गेल अछि; किन्तु कथानक वास्तविक घटना पर अवलम्बित अछि। अधिकांश पात्र-पात्रीक नाम कल्पित थिक। ककरो पर बदनियतीसँ आक्षेप नहिं कैल गेल छैन्ह। किन्तु यदि केओ ई मानऽ लेल तैयार नहिं होथि त हुनकासँ निवेदन जे पत्र-साहित्यमें जेना व्यंग्य चित्र द्वारा छोट-पैघ सब तरहक लोकक समीक्षा कैल जाइत अछि ओ हास्येक रूपमें सब केओ ओकरा ग्रहण करैत छथि, तहिना गल्पक कतिपय विषयकें ओ ग्रहण करथि। यदि इहो कैफियत स्वीकार नहिं होएन्ह त हम केवल एकेटा वाक्य हुनका स्मरण करा दैत छिऐन्ह जे 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।'

कएकटा गल्प प्रथम पुरुषमें लिखल गेल अछि। ई भेल लिखबाक एकटा शैली। ई आवश्यक नहिं जे प्रथम पुरुषमें जे किछु कहल गेल अछि से लेखकक निजी मत थिक।

मैथिली कथा-साहित्यमें सम्प्रति नव-जागरण उपस्थित भऽ रहल अछि। अतः एहि पुस्तकक प्रकाशनक हेतु कैफियत देब हम आवश्यक नहिं बुझैत छी।

पुर्णिया
१६ जुलाई, १९४६ } —लेखक

अवसान

'ससरफानी' प्रेसक ससरफानीमे आइ दस माससँ लटकल छल। एकरा मुक्त करवाक श्रेय छैन्ह हिमालय प्रेसक सुयोग्य सञ्चालक पण्डित श्रीजयनाथ मिश्रजीकें जनिक सहयोग नहि भेलासँ ससरफानीक गिरह काटव असम्भव भऽ जाइत।

उक्त प्रेसक मुद्रण-विभागक सम्पादक श्रीरमानाथ ठाकुरजी एवं अध्यक्ष श्रीमहादेव बाबूक से हो परम कृतज्ञ छी। कारण, हिनका लोकनिक सहानुभूतिक फल-स्वरूप 'ससरफानी' एहि रूपमें अपने सभक ओहि ठाम पहुँचल अछि।

आरा (शाहाबाद)
अप्रिल २५, १६४७

—लेखक

सादर भेंट

श्रीमान्

श्रीमती

ससरफानी

मैथिली गल्प

लेखक
श्रीनगेन्द्रकुमार
बिहार सिविल सर्विस

गल्प-क्रम

आरम्भ

गत अक्तूबर मासमें ट्रेनक प्रतीक्षामें जखन हम वैद्यनाथधाम रेलवे स्टेशनक वेटिंग रूममें बैसल रही, ओही समयमें कालेजक दू गोट विद्यार्थीक परस्पर वार्त्तालापसँ एकटा कहानी लिखबाक इच्छा भेल। नवम्बरमें 'कालेजक विद्यार्थी' लिखल गेल जे एही संग्रहमें प्रकाशित कैल जाइत अछि। पश्चात् कोनो कोनो रविक दिन एक-आध घंटा समय बचा कऽ अन्यान्य गल्प लिखल गेल।

गल्प सभमें कतहु कतहु साहित्यिक पुट देबाक चेष्टा कैल गेल अछि; किन्तु कथानक वास्तविक घटना पर अवलम्बित अछि। अधिकांश पात्र-पात्रीक नाम कल्पित थिक। ककरो पर बदनियतीसँ आक्षेप नहिं कैल गेल छैन्ह। किन्तु यदि केओ ई मानऽ लेल तैयार नहिं होथि त हुनकासँ निवेदन जे पत्र-साहित्यमें जेना व्यंग्य चित्र द्वारा छोट-पैघ सब तरहक लोकक समीक्षा कैल जाइत अछि ओ हास्येक रूपमें सब केओ ओकरा ग्रहण करैत छथि, तहिना गल्पक कतिपय विषयकें ओ ग्रहण करथि। यदि इहो कैफियत स्वीकार नहिं होएन्ह त हम केवल एकेटा वाक्य हुनका स्मरण करा दैत छिऐन्ह जे 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।'

कएकटा गल्प प्रथम पुरुषमें लिखल गेल अछि। ई भेल लिखबाक एकटा शैली। ई आवश्यक नहिं जे प्रथम पुरुषमें जे किछु कहल गेल अछि से लेखकक निजी मत थिक।

मैथिली कथा-साहित्यमें सम्प्रति नव-जागरण उपस्थित भऽ रहल अछि। अतः एहि पुस्तकक प्रकाशनक हेतु कैफियत देब हम आवश्यक नहिं बुझैत छी।

पुर्णिया
१६ जुलाई, १९४६ }

—लेखक

खसरफानी

ओहि दिन खगड़िया ओ मनसीक बीच मालगाड़ीक डब्बा पटरीसँ उतरि गेलाक कारणे अप पसिन्जर गाड़ीमे आध घंटासँ ऊपरसँ ठाढ़ छलैक। कतेक काल आओर रहतैक से बुझब कठिन छल। ५ बजे दिन। जेठ मास। प्लैटफार्मसँ आगि बहराइत छलैक। कम्पार्टमेंटक कुहू बिजली पंखा चलिते छल ; किन्तु ठंढइक नामोनिशान नहिं। एकटा पुस्तक पढ़ैत छलहुँ ; किन्तु मन उचटि गेल छल। कतय जाऊ ? की करू ? सोचिते छलहुँ तावत "पाठकजी, नमस्कार। चिन्हल की ?" कहैत एक नवयुवक बगल सँ हमरा सामने ऐलाह। एक मुहूर्त्त हुनका दिस देखि अनायासे मुँहसँ बहरा गेल, "अहा, हरिहर बाबू ? अहाँ कतय सँ ? एक युगक बाद भेंट भेल। कुशल त छैक ?"

"हँ, कोनो तरहें चल जाइत छैक। अपन कहू ?"

"गत छओ वर्षसँ प्रवासेमें छलहुँ। देश ऐला यैह चारि मास भेल अछि। सम्प्रति शिलांगमें पोस्टिंग अछि।"

"हूँ, से त मध्य मध्यमें अहांक खबरि लेबाक चेष्टा कैने छलहुँ। ज्ञात भेल छल जे पल्टनमें आफिसर बहाल भेल छी।"

"एखन अहाँ कतय छी?" हम पुछलिऐन्ह।

"सम्प्रति दू माससँ कोपरिया कचहरीमें छी। जमीनक बन्दोबस्त भऽ रहल छैक। अच्छा, वेश। आइ अहाँकें नहिं जाए देब। गाड़ियो आगाँ नहिए बढ़तैक।"

एगोट व्यक्ति कम्पार्टमेंटक दरवाजा लग ठाढ़ हमरा दुहू गोटेक गप्प बड़ तल्लीन भऽकऽ सुनैत छलाह। अवस्था ३५ क लगभग बुझि पड़ल। दाढ़ी बढ़ौने छलाह जाहिसँ आकृति भद्दा लगैत छलैन्ह। देखऽमें कारी कुचकुच। सामनेक दुइटा दाँत बाहर निकलल छलैन्ह। तमाकू चुनबैत छलाह; किन्तु एक टकसँ हमरे दिस तकैत रहथि। विभूतिक त्रिपुण्ड्र, लाल ठोप, एक मुट्ठी शिखा ओ धोतीक सीटल साँचीसँ हुनक आधा परिचय भेटल। पुछलिऐन्ह, "किछु चाही?" हरिहर बाबूक दिस संकेत कैलन्हि। बुझलौं हिनके संगे छथिन्ह।

"अहाँके त वेटिंग रूममें बैसा आएल छलहुँ त फेर एहि ठाम किए ऐलहुँ? सदिखन बेमतलब हमरा-पछुऔने चलैत छी। कनेको अहाँकें विचार नहिं? जाउ, ओहि ठाम बैसूगऽ।" दमसबैत हरिहर बाबू हुनका कहलथिन्ह।

"ई के थिकाह?" हम जिज्ञासा कैलिऐन्ह।

"यैह मनसीक कामत परक हमर जिरतिया थिकाह" लगले बातक तह दैत कहलन्हि। "अच्छा, आब अहाँक वस्तु-जात उतरबैत छी।"

"हमरा एहि ट्रेनसँ लखनउ जाएब परमावश्यक थिक। फिरती वरञ्च एक ट्रेन उतरि जाएब।" हम कहलिऐन्ह।

"पैरे त नहिंए जाएब? लाइन जाम भऽ गेल छैक। स्टेशन मास्टर लोक पठौने छलैक। देखी, की खबरि आएल छैक। तखन जे विचार हो" कहैत हरिहर बाबू झटकि कऽ स्टेशन दिस चल गेलाह।

जिरतिया कने हटि कऽ सर्वेन्टक कम्पार्टमेंट लग ठाढ़ छलाह। फेर हमरा कम्पार्टमेंट लग आबि कऽ ठाढ़ भेलाह। हम साकांच नहिं भेलिऐन्ह। थपड़ीसँ तमाकू झाड़ि कऽ एक जूम खैलन्हि आर खखासि कऽ बजलाह, "हे औ अहाँ! हमरा सोझे जिरतिए नहि बुझू। हम हिनक......" महा अश्लील शब्द कानमें प्रवेश कैलक। "आर छोट बहिनिक कथा हमरे ममिऔतसँ सम्प्रति उपस्थित छैन्ह। हमरा देखि कऽ भ्रममें जुनि पड़ी। अमुक जमीन्दार, अमुक जमीन्दार हमरे सम्बन्धी थिकाह। अमुक पोखरिया असामी हमरे घरमें सम्बन्ध करऽ लेल चारि माससँ दौड़ि रहल छथि।" आओरो अपन पैघ पैघ सम्बन्धी सभक परिचय देबऽ लग-

लाह। हम अवाक भऽ गेलहुँ। आइ सँ ८ वर्ष पहिलेक एक स्मृति-चित्र प्रत्यक्ष भऽ गेल।

× × ×

मिन्टो होस्टलक पुबरिया ब्लाकक ग्राउन्ड फ्लोरमें जे चारिटा सिंगिल सीट रूम अछि ओहिमें ओहि साल दरबाजा दिससँ क्रमागत विनयकृष्ण, सदानन्द, हमर ओ हरिहर बाबूक आवास छल। सभ गोटे चतुर्थ वार्षिकमें छलहुँ। विनय ओ हम समवयसी छलहुँ। लगभग १८ वर्ष। हरिहर हमरा दुहू गोटे सँ दू वर्ष ओ सदानन्द चारि वर्ष जेठ छलाह।

विनयकृष्ण मैट्रिक ओ आइ-एस-सी० में प्रथम श्रेणीमें सर्वोत्तम स्थान प्राप्त कैने छलाह। एहि वर्ष अंगरेजी-साहित्यमें सम्मान सहित रेकर्ड नम्बर आनि प्रथम हैताह ताहिमें ककरो एको रत्ती सन्देह नहिं छलैक। आरमर एवं हिल साहेब दुहू गोटे खुल्लमखुल्ला क्लासमें कए बेर कहने छलथिन्ह जे विरले भारतीय विद्यार्थी एहन सुन्दर अंगरेजी लिखि सकैत अछि। वक्तृता ओ लेखोमें विनयक तेहने गति छलैन्ह। स्वस्थ, कान्तिमान, सदाचारी एवं मितभाषी ई युवक ओहि समयमें मिन्टो होस्टलक आदर्श मानल जाइत छल। सोन सुगन्ध, दुहूक एहन समन्वय बहुत कम भेटैत छलैक। प्रत्येक विद्यार्थीक जवान पर छलैक जे ई आइ-सि-एस अवश्य हैताह। पिता कोनो सरकारी हाइ स्कूलमें अध्यापक छलथिन्ह।

सदानन्द जी० बी० बी० कालेजसँ प्रथम श्रेणीमें आइ० ए० पास कऽ आएल छलाह। व्याकरणक मध्यम कऽ साहित्यक द्वितीय खण्डमें जखन ओ पढ़ैत छलाह त भाई कहलथिन्ह, "हम तीन शास्त्रक आचार्य कऽ भाम गुड़ै छी त तों पण्डितारे करबह? छोड़ ई सभ फक्की। हम तोरा भीख माँगि कऽ खर्च देबौह। वाटसन स्कूलमें नाम लिखाबह।" सदानन्द ए-बी-सी-डी सँ शुरू कैलन्हि। मैट्रिक ओ आइ० ए० दुहू प्रथम श्रेणीमें पास कैने छलाह। सम्प्रति २०) मास वजीफा भेटैत छलैन्ह। कालेजमें फीस माफ रहैन्ह। कहुना चलि जाइत छलैन्ह। इतिहासमें ऑनर्स ओ पास कोर्समें संस्कृत नेने छलाह। संस्कृतक प्राय: सभ महाकाव्य कण्ठ छलैन्ह। संस्कृत विद्यालयक वातावरणक छाप हिनका पर स्पष्ट छल। कथा-कथा में वचन ओ श्लोक उद्धृत करैत छलाह। पारिवारिक परम्परासँ ई पण्डिते छलाह; किन्तु अंगरेजी शिक्षाक सहयोगसँ विचार उदार भऽ गेल छलैन्ह ओ दृष्टिकोण छलैन्ह आशा एवं सहानुभूतिसँ पूर्ण।

हरिहर हिन्दू-विश्वविद्यालयसँ आइ० ए० पास कऽ तृतीय वार्षिकमें पटना कालेजमें आएल छलाह। विनयक संग अंगरेजी-साहित्यक अध्ययन करैत रहथि। किन्तु हिनक विशेष ख्याति छल शतरंजक प्रवीण खेलाड़ीक हैसियतसँ। एक धनी-मानी श्रोत्रिय परिवारमें हिनक जन्म भेल छलैन्ह। पिन्टू, सिनेमा आदिक हमरा सभक अधिकांश खर्च हिनके होइत छलैन्ह।

तिनू गोटेक घर मिथिलेमें छलैन्ह। हमर सम्बन्ध सम्प्रति मिथिलासँ छुटि गेल छल। लगभग सत्तरि वर्ष पूर्व हमर प्रपितामह प्रवासमें बसि गेल छलाह।

× × ×

अपराह्न में कालेजसँ आबि कऽ देखल जे हरिहर अत्यन्त चिन्ताग्रस्त भेल अपना रूममें चौकी पर पड़ल छथि। कुरसी पर वैस गेलहुँ। जिज्ञासा कैलिऐन्ह। गेड़ुआक तरसँ निकालि कऽ एक चिट्ठी बढ़ा देलन्हि।

"श्रीहरिः! भाद्र शुक्ल–चतुर्थी।

स्वस्तिश्रीचिरञ्जीविपु शुभाशिषः सन्तु।

आगाँ समाचार जे ज्योत्स्ना सम्प्रति १३म वर्षमें प्रवेश कैलन्हि अछि। अहाँक इच्छानुसार हम पढ़बामें एखन धरि कोनो रोक-टोक नहिं कैने छिऐन्ह। मास्टर कहैत अछि जे एहि बेर मिडिल इंगलिशक परीक्षामें हिनका छात्रवृत्ति अवश्ये भेटतैन्ह। किन्तु कन्याकें की वालिस्टरी करक छैक? चिट्ठी-चपातीक ज्ञान भऽ गेलैक त पर्याप्त। अहांक माय की पढ़ने छथि? ई विषय लऽक गाममें सम्प्रति बड़ गोलैशी चलि रहल अछि। यदि साधारण लोकक घर में ई कथा होइतैक त ओकरा एखन धरि समाज पतित कऽ देने रहितैक। लोक हमरा सभक बड़ निन्दा कऽ रहल अछि। कहैछ जे समाज में एतेकटा पैघ अविवाहिता कन्या कत छैक? पछ्धारि टोलक एक-दू गोटे परोक्षमें एक-आध ठाम बाजलो अछि जे

अगहनक शुद्धमें कन्यादान नहिं कैलासँ हमरा सभकें श्रोत्रिय-समाजसँ बहिष्कृत करबा लेल आन्दोलनो करत। अहींक हेतु हमरा ई सभ फजीहति सहऽ पड़ैत अछि। हम गते वर्ष कन्यादानक भारसँ मुक्त भऽ गेल रहितहुँ। अस्तु।

सम्प्रति दिगम्बर बाबूक बालकक प्रति कथा उपस्थित कैने छी। कथा ठीके बुझू। यद्यपि द्वितीयवर विआह ओ स्त्री वर्त्तमान छथिन्ह, तथापि देशमें एहिसँ बाढ़ि आर कोनो कथा नजरि पर नहि अबैत अछि। आगामी अगहन सूदि तृतीयाकें कन्यादान करब। शुभमस्तु।

—श्रीवाणीश मिश्र"

वाणीश मिश्रक विद्याक प्रति एहन उद्गार! तेरह वर्षक अवस्थामें कन्यादान! नहि कैलासँ समाज में गोलैशी! ओहू पर द्वितीय वर! एहि प्रकारक उपर्युपरि समन्वय देखि एक मुहूर्त्त धरि चुप्पे रहलहुँ।

फेर कहलिऐन्ह, "अहांक समाजक आचारसँ परिचित नहि छी; किन्तु आब कोनो शिक्षित समाजमें एतेक कम अवस्थामें कन्यादान करब की उचित थिक? ताहू पर एक स्त्रीक रहैत केओ......? आर शारदा विधानोक डर नहिं छैक की?"

हरिहर नैराश्यक हँसी हँसैत बजलाह, "अहाँकें हम कोना बुझाउ? हमर समाज रसातलमें जा रहल अछि। एकर

आदर्श छैक 'अष्टवर्षा भवेद्गौरी नववर्षा च रोहिणी।' आर कन्या-शिक्षा ? एकर त ई घोर विरोधी थिक। अहां कहै छी शारदा-विधानक डर। देशक कोन समाजकें एहि विधानक डर छैक ? आर हमरा समाजमें ज्योतिषी लोकनि यावत धरि वर्त्तमान छथि, तावत १० कें १४ करैत कतेक विलम्ब लगतैन्ह ? हमरा समाजमें दश-बीस व्यक्तिविशेषक अतिरिक्त के दुइ-तीनटा विवाह एखनो नहि करैत छथि ? अहाँके स्मरण राखक हैत जे हमर समाज ओतेक पैघ नहिं थिक। श्रुति-स्मृति-सदाचारक परम्पराक अनुसरण कैनिहार कतेक गोटे मैथिल थिकाह ? हरिसिंहदेवी प्रथौक पालन त कर५ पड़ैत छैक ? त कहू एकटा वर दुइ-तीनटा विवाह नहि करथि त कन्या सभक की गति हेतैक ?"

हम कहलिऐन्ह, "देशक कथा फराक रहौ। अहाँ सभ जे एतेक गोटे पटनामें छी ओहिमें कतेक गोटे श्रुति-स्मृति-सदाचारक पालन करैत छी ? अपने उदाहरण लिअ। पिन्टूमें सब किछु खैबे करैछी। कोनो वर्णक संग बैस क५ खैबामें अहाँकें आपत्ति नहिए अछि। पूजा-पाठ किछु त ने देखैत छी ? तथापि देशक लोक अहाँकें श्रोत्रिय कोना मानैत छथि ?"

फेर नैराश्यक स्वरमें उत्तर देलन्हि। "विदेशमें ई सभ नहिं धराइत छैक। देशमें जे परम्परा छैक ताहिमें कोनो बाधा नहिं पड़ैक त समाजकें कोनो आपत्ति नहिं छैक।"

"किन्तु अहांक पिता जे एहन अनुचित काज कर५ जा रहल छथि ताहूमें की अहाँ प्रतिवाद नहि करबैन्ह ?"

हुनका आँखिमें नोर डबडबा गेलैन्ह। मुँहसँ कोनो बात बाहर नहिं भेलैन्ह।

एही अवसर पर सदानन्दो पहुंचलाह। कथाक सूत्र धरैत बजलाह, "एकसर बृहस्पतिओ झूठ। ई बेचारे की करताह ? पैघ पैघ लोको जखन देश अबैत छथि त देखैत छिऐन्ह वैह आडम्बर—पूजा-पाठ, त्रिपुण्ड्र। आर गामसँ बाहर फेर वैह समाज-सुधारक !!"

"त तात्पर्य जे समाजक युवक लोकनिक कोनो दायित्व नहि छैन्ह ? जे सभ अत्याचार भ५ रहल अछि, तकर प्रतिवाद नहिं कैल जाय ? प्रतीकारक चेष्टो नहि हो ?" हम पुछलिऐन्ह।

निदान, हमरा सभ एहि निष्कर्ष पर पहुँचलहुँ जे विवाहटा कें रोकब असम्भव भ५ जैतैक। किन्तु कन्याक हत्या रोकब हमरा सभक कर्त्तव्य थिक। कैकटा सैनक समीक्षा आरम्भ भेल। सदानन्द प्रायः चुप्पे छलाह, एक बेर बजलाह, "प्रायेण गृहिणीनेत्राः कन्यार्थेषु कुटुम्बिनः।" यदि कन्याक माय सहमत भ५ जाथि त सम्भव जे गोटी लाल भ५ जाए।

हुनके सूत्र पर समस्त सैन बनाओल गेल।

× × ×

पहलेजा घाटमें सूर्य-ग्रहण-स्नान कय हरिहर बाबूक माय,

ओ हुनक बहिन ज्योत्स्ना एवं भारती साढ़े चारि बजेक स्टीमर सँ एहि पार एलीह। ओहि दिन एल्फिन्सटनमें 'कृष्णसुदामा' खेल भऽ रहल छल। ओहीमें हुनका लोकनिकें लऽ जैवाक विचार कैल गेल छल। हमर अनुमान छल जे माय एहि पार आवऽ लेल प्रायः उद्यत नहि होइथिन्ह। किन्तु शहरक आकर्षण अत्यन्त प्रवल प्रतीत भेल! हरिहर कहलन्हि, 'ई लोकनि आइए रातिमें एक बजेक स्टीमरसँ आपस चल जैतीह।' सदानन्दकें पुछलिऐन्ह, "आव की होमक चाही? कन्याक अवस्था कम रहवाक कारणेँ विनयकें यदि द्विधा होएन्ह?" ओ कहलन्हि, "शुक्ले चान्द्रमसी कला। कन्याक वृद्धिमें की देरी लगैत छैक?"

"त हरिहर बाबूकें स्वयं ई प्रस्ताव उपस्थित करैक चाही।" असम्मतिसूचक भावसँ माथ डोलबैत सदानन्द बजलाह, "हिनक प्रस्ताव उपस्थित करव हमरा उपयुक्त नहि बुझि पड़ैछ। दैवात् विनयकें यदि अस्वीकार होएन्ह त हरिहर कने उठल्लू भऽ जैताह। अहां किएक नहि कहवैन्ह?"

एक मुहूर्त्त धरि चुप रहि कहलिऐन्ह, "अच्छा, हम सब ठीक कऽ लेव। अहां तावत आगाँ बढ़ू।"

विनयकें सिनेमा चलवा लय तैयार होम कहलिऐन्ह त ओ बजलाह, "आइकाल्हि त कोनो हाउसमें बढ़ियाँ खेल नहिए छैक? जैवाक त हम कोनो मतलब नहि देखैत छी?"

कहलिऐन्ह, "एहि पर हमरा सभ पाछां विचार करव। आब वेशी समय नहि छैक।"

विनय प्रतिवाद नहि कैलन्हि।

सिनेमा पहुँचैत १५ मिनटसँ अधिक विलम्ब भऽ गेल। खेल शुरू भऽ गेल छलैक। हॉलमें अन्धकार छलैक। हरिहर कतय बैसल छथि से खोज लेव असम्भव छल। चुपचाप बैस गेलहुँ। विनयकें उकरू जकाँ बुझि पड़ैत छलैन्ह। आइ एके टिकटसें दूटा खेल होइत छलैक।

ग्रहण-स्नानसँ फिरती यात्री सभसँ हॉल खचाखच भरल छल। 'कृष्ण-सुदामा' खेल समाप्त भेला पर जखन विराम भेलैक त हॉलमें हूलि मचि गेल। चारू दिस नजरि दौड़ौलहुँ। हरिहरक कतहु पता नहिं। की सब प्रयास व्यर्थ हैत? कोनो तरहें भीड़सँ बाहर निकलि जखन गेटक निकट एलहुँ त देखल सदानन्द ओ हरिहर हॉलसँ बाहर होइत जन-समुदायकें खूब गौरसँ देखि रहल छथि। हुनका सभक निकटे देखल एकटा कन्या ठाढ़ि छथि।

तन्वी। कमनीया। श्वेतांगी। स्वस्थ शरीर। चकित मुखाकृति। सिनेमा, एहन जन-समुदाय, गाड़ी-घोड़ा-मोटर-रिक्शाक एहन समागम बुझि पड़ल बहुत कम्मे देखने छथि। वसन्ती रंगक साड़ी। पीठ पर छितरायल कृष्ण केश-राशि। कएटा एहन सुन्दरी कन्या देखने छथि? पैरमें अपने आप ब्रेक भऽ गेल। विनयो निर्निमेष नेत्रेँ हुनके देखऽ लगलथिन्ह।

"भैया, आब कतेक काल हुनका लोकनिक बाट देखबैन्ह ? बाजार बन्द नहिं भऽ जैतैक ?" कन्या हरिहरकें कहलथिन्ह।

मधुर कण्ठ। विनम्र स्वर। बुद्धिक आभास।

विनय आओरो मन्त्रविमुग्ध भऽ हुनका देख लगलथिन्ह।

दू-चारि धाप आगाँ बढ़लहुँ। कन्या एक सेकेण्डक हेतु हमरा दिस तकलन्हि। हुनक आँखिक सौन्दर्य अनुपम छल।

"ह, ह, धन्य छी महराज ! कतय बैसल छलहुँ ? हम दुहू गोटे अहाँ सभकें जोहैत जोहैत परेशान भऽ गेलहुँ।" सात्तात् होइते हरिहर कहलन्हि।

आगां बढ़लहुँ। कनछिया कऽ देखल विनय यन्त्र-चालित भावसँ हमरा पाछां पाछां चल अबैत छथि; किन्तु दृष्टि कन्याक मुखाकृतिए पर छैन्ह।

दू गोट अपरिचितकें निकट अबैत देखि हरिहरक माय कने हटि कऽ ठाढ़ भेलथिन्ह। कन्याक दृष्टि नत भऽ गेल छलैन्ह; किन्तु विनय हमरा सभक दृष्टि बचा कऽ कन्येक दिस तकैत छलाह। एक बेर पकड़ा गेलाह। हम हुनका दिस बिनु देखनहि मुस्कुरा देलिऐन्ह। सदानन्द सेहो हुनक कमजोरी लक्ष्य कैलथिन्ह।

गम्भीर भावे आस्तेसँ हमरा कहलन्हि, 'रम्याणि वीक्ष्य मधुरांश्च निशम्य शब्दान्'। उद्देश्य छलैन्ह जे विनय सुनथु। विनयक समस्त मुंह आरक्त भऽ उठलैन्ह।

"भैया, अहां सभक कालेज कोन दिस अछि ?" कन्या पुछलथिन्ह। "कने हमरा सभकें देखा नहि देब ?"

कन्याक स्वरमें आग्रह छल ओ आकृति पर उत्सुकताक छाप। सँगहि मुस्कुराहट ओ समस्त शरीरमें चापल्यक सञ्चार।

"ई हमर सहपाठी विनय बाबू छथि," कहि हरिहर मायक ध्यान विनयक दिस आकृष्ट कैलथिन्ह। विनय संकोचक भाव देखबैत दुहू हाथ जोड़ि कऽ प्रणाम कैलथिन्ह।

"आर ई छथि पाठकजी। हम सब एके ठाम रहैत छी।"

सदानन्द कहलथिन्ह, "ई हमरा सभक परम सौभाग्य थिक जे अपनेक चरण-धूलि लेबाक अवसर भेटल। अपने सन धर्मात्माक दर्शन भेटब पूर्व जन्मक पुण्येक फल थिक।"

माय गद्गद भऽ गेलथिन्ह। कन्याकें आदेश देलथिन्ह, "ज्योति, तों हिनका सभकें प्रणाम नहि कैलहुन्ह ?"

"अहा-हा-हा, भऽ गेलैक", कहि बारण करिते छियैन्ह कि अत्यन्त चपलतासँ पैर छूबि हमरा प्रणाम करैत कन्या विनयक दिस बढ़लीह। हुनक समस्त मुखाकृति लाल भऽ गेल छलैन्ह। केवल हाथ जोड़ि नतमस्तक भऽ एक कातमें ठाढ़ भऽ गेलीह। विनय सेहो ससव्यस्त जकां बुझि पड़लाह। चेहरा एहन सन जे झेंपि रहल छथि। हम एखन धरि सिनेमा ऐबाक अपन उद्देश्यक लेशोमात्र चर्चा हुनकासँ नहि कैने छलहुं। बुझि पड़ल आब स्वतः काज सिद्ध भऽ जैतैक।

विनय स्वयं कवि छलाह। सम्भव, कविताक साकार मूर्त्तिक साक्षात् दर्शन आइ उनका भेल छैन्ह।

भीड़ पतरएला पर हरिहर कने हटि कऽ जखन बग्गी ठीक करैत छलाह, माय विनयसँ प्रश्न कैलथिन्ह, "बाबू, अहाँक घर कतय अछि? की मूलग्राम थिक?"

विनय एकदम अन्यमनस्क छलाह। कहलथिन्ह, "हं, हं, चलब.क चाही। विलम्ब भऽ रहल अछि।"

सदानन्द हुनका तरफसँ जबाब देलथिन्ह, "घर अमुक ग्राममें छैन्ह। दियवे सन्नहपुर थिकाह। आ' यत्राकृतिस्तत्र गुणाः वसन्ति। जेहने देखैत सुन्दर छथि, विद्यो तेहने छैन्ह। हिनका मोकाबिलाक समस्त पटनामें एकोटा विद्यार्थी नहि छथि।"

विनय स्वभावतः लजीला प्रकृतिक छलाह। कने संकुचित होइत बजलाह, "नहि, नहि। ई लोकनि एहिना बढ़ा चढ़ा कऽ कहैत छथि।"

हम मायकेँ कहलिऐन्ह, "जहाजमें त एखनो तीन घण्टाक देरी छैक। यदि हिनका लोकनिकेँ कालेज, छात्रावास इत्यादि देखा दिऐन्ह त कोनो आपत्ति हैतैक?"

ज्योत्स्नाक मुख-मण्डल आनन्दसँ उद्भासित भऽ उठलैन्ह। छोट बालिका भारती त खुशीसँ कुरचऽ लागल।

बग्गी आबि गेल छल। एक पर हरिहर, हुनक माय एवं दुहू बहिन ओ दोसर पर हमरा सभ सवार भेलहुँ।

मनीबैग खोलि कऽ देखल। अस्सी टाकासँ ऊपर छल। आइए एक सेमाहीक छात्रवृत्ति ७५) भेटल छल। आगां आगां हमरा सभक बग्गी जाइत छल।

बिजलीक रोशनीसँ समस्त राजपथ चकचक करैत छल। अन्हरिया रातिमें ओकर शोभा शतोगुण अधिक बढ़ि गेल छलैक।

"गाड़ीवान, जरा गाड़ी रोक लेना जी!" बाँकीपुर पोस्ट आफिसक सामने तिमुहानी पर सम्प्रति आबि गेल छलहुँ। हरिहर बाबूक गाड़ी से हो रुकल। माथ बहारकऽ जिज्ञासा कैलन्हि, "गाड़ी रोकलहुँ जे?" बुझि पड़ल, विनय एखनो स्वप्नेलोकमें छथि। गाड़ीसँ उतरि, "यैह किछु फल लेबाक अछि" कहैत दक्षिण दिस बढ़ि गेलहुँ। सदानन्दो पाछां-पाछां ऐलाह।

रास्ताक दुहू दिसक दोकानमें फलक शोभा दर्शनीय छल। कैलिफोर्नियाक लाल लाल ओ काश्मीरक लाल आभापूर्ण श्वेत सेब, चमनक हरियर अंगूर, कवेटाक अंजीर, सिली-गुरीक अनानास, सिलहटक पियर-पियर नारंगी, नागपुरक सरवती, सिंगापुरक बनाना, राँचीक हरियर-पियर पपीता— फलक एहि प्रदर्शिनीमें रंगक ई जीवन्त विन्यास देखि आँखि जुरा गेल। आर संगहि छल सुखायल नारियरक गोला, धूमिल किसमिस, जीर्ण छोहारा ओ कठिन काबुली बादाम। नहि रंग आर ने गन्ध!

दू टोकड़ी फल लऽक जखन बग्गी पर चढ़लहुँ त हरिहर बाबू टोकलन्हि, "एतेक फल लऽकऽ की करब ? बाजार की कतहु चल जाइत छलैक ?"

पिन्टू होटलक सामने बग्गी रोकि कऽ एक कोहा रसगुल्ला ओ एक पैघ दोनामें सन्देश लेल। सदानन्द बजलाह, "पहिने ने किएक कहल ? मेसमें सीधा बन्द करा दितिऐक ?"

होस्टलक अन्दर हिनका सभकें लऽ जैबाक मौका नहि भेटल। किन्तु समस्त यूनिवर्सिटीक परिधिक परिक्रमा करा देलिऐन्ह। पञ्चवर्षीया कन्या भारती हरिहरसँ प्रश्न कैलकैन्ह, "भैया, दीदी कहिया एहि स्कूलमें पढ़ऽ लेल अओतैक ?" हरिहरक माय जखन सुनलन्हि जे एहि सभ विद्यालयमें कन्यो सभ पढ़ैत छथि त हुनका बड़ घृणा भऽ गेलैन्ह। निदान फिरती काल बग्गी पटना कालेजक दछिनबरिया गेटक सामने ठाढ़ भेल। एखन धरि विनय एक दू बेर हां-हूं कऽ अतिरिक्त आर किछु नहि बाजल छलाह। एखन तपाकसँ बजलाह, "एही ठाम हिनका लोकनिकें छोड़ि दैबैन्ह ? भल, महेन्द्रूमें स्टीमर पर चढ़ा दिऔन्ह।"

घड़ी देखल। ११ बजैत छल। सुपरिंटेंडेंट शास्त्रीजीक उग्र मूर्त्तिक स्मरण भेल। विनय के सेहो स्मरण करा देलिऐन्ह। कहलन्हि, "देखल जैतैक। एहि होस्टलमें नियमक पालन करैत करैत त हेहर भऽ गेलों।" किन्तु सदानन्द सकपकैलाह। डर भेलैन्ह जे यदि पकड़ैलाह त आर किछु

नहि त शास्त्रीजी फ्री स्टूडेंटशिप अवश्ये तोड़ि देथिन्ह। जहिना पौदान पर लात दऽ क उतरैत छथि कि ज्योत्स्ना कहलथिन्ह, "भैया, अतिथिकें बीचे मार्गमें छोड़ि देब की उचित थिक ?"

एहि कन्याक एहन प्रगल्भता देखि आश्चर्य भेल। सदानन्द की करितथि ? फेर बग्गी पर बैस गेलाह।

महेन्द्रूघाट पर जहाजक दुइटा सीटी भऽ गेल छलैक। हरिहर हुनका लोकनिकें सोनपुरमें चढ़ा कऽ अबितथि। माय अपना दुहू कन्याकें हमरा सभकें प्रणाम करऽ लेल आदेश कैलथिन्ह। भारती तैखन आज्ञाक पालन कैलन्हि। ज्योत्स्ना सदानन्द ओ हमरा प्रणाम कऽ ठाढ़ भऽ गेलीह। कहलिऐन्ह, 'एगोटे इम्हर छुटि गेल छथि'। सुनतहिं मुँह लाल भऽ गेलैन्ह। विनयक दिस बदलीह। विनय कहलथिन्ह, "अहा-हा, कोनो हर्ज नहिं। भऽ गेलैक।" देखल, ज्योत्स्नाक मुख-मण्डल पर विद्युत खेल गेल।

मायकें कहलिऐन्ह, "हमरा सभ अपनेक की स्वागत करू ? त्रुटिक मार्जना करब। हिनका लोकनिक हेतु फल ओ मधुर अनने छिऐन्ह। यदि आज्ञा हो त......?"

कहलन्हि, "आज्ञा की ? अहां सभ की आन लोक छी ?"

× × × ×

"सोन ओ सुगन्धक एहन योग कत भेटत ? दिघवे सन्नहपुर मूल। बालक एहन सुन्दर। विद्या-व्यवसाय हरिहर कहिते छथि। आस्थो-पात कोनो बेजाय नहिंए छैन्ह। जोतिक भाग्य बुझक चाही", हरिहर बाबूक माय अपना स्वामीसँ कहलन्हि।

ओ कहलथिन्ह, "छौंड़ा-मांड़रसँ कतहु कथा टीक भेल छैक ? अंगरेजिया सभक फुसि-फटाका बुझल नहिं अछि ? यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवाणि निषेवते । एकटा कथा टीके भेल अछि आर कहैत छी दोसराक पाछू दौड़ऽ के ?"

किन्तु गृहिणी नहिं मानलथिन्ह । तैं पटना आबऽ पड़लैन्ह । हुनका होस्टलमें ठहरैबाक हमरा सभ निश्चय कैने छलहुँ । किन्तु कहलथिन्ह, "हमर बालक क्रिस्तानीमें चल गेल छथि त की हमहुँ सैह पथ ग्रहण करब ?" निदान होस्टलसँ लगे गंगा किनारक मठियामें हुनका ठहराओल गेल । सन्ध्याकाल सदानन्द ओ हम हुनका ओहि ठाम पहुँचलहुँ । "अपनेकें एहि ठाम बड्ड कष्ट भऽ रहल अछि । हम अपन कमरा खाली कऽ दैत छी । होस्टल में अपनेकें कोनो कष्ट नहिं हैत । होस्टलक केशो हलुआइ अत्यन्त पवित्रतासँ सोहारी, अनून तरकारी, मधुर इत्यादि अपने दुहु गोटेक हेतु बना देत ।" इत्यादि अपनैतीक भात्र देखौलाक पश्चात् सदानन्द कहलथिन्ह, "लोकोक्ति थिक,

'कन्या वरयते रूपं माता वित्तं पिता श्रुतम् ।'

सम्प्रति उपस्थित कथामें अपनेकें उपर्युपरि गुण भेटैत अछि । विनयक सन स्वस्थ, सुन्दर ओ मेधावी युवक अपन समाजक कोन कथा समस्त प्रान्तो भरिमें दू चारि टा सँ अधिक नहिं भेटताह । पिता सरकारी हाइ स्कूलमें प्रधानाध्यापक छथिन्ह । ४००) मासिक पाबि रहल छथि । हिनक विद्याक विषयमें त किछु कहबे व्यर्थ बुझैत छी । अध्यापक लोकनिक

कथन छैन्ह जे गत १०-१५ वर्षक अभ्यन्तर विश्वविद्यालयमें एहन मेधावी छात्र नहिं आएल अछि । कहू, आर अपने की चाहैत छी ?"

"हँ, से बुझल । किन्तु श्लोकक द्वितीय चरण अहाँ किएक छोड़ि देलिऐक ?

'बान्धवाः कुलमिच्छन्ति मिष्टान्नमितरे जनाः ।'

हमरा समाजक आधार थिक यैह 'कुल' । सर्व पदं हस्तिपदे निमग्नम् । बुझल, बालक विद्वान्, श्रीमान्, कान्तिमान् सभ किछु छथि । किन्तु हिनक कुलक परिचय पहिने दिअ ? आङ्गनमें कहलन्हि जे ई लोकनि दिघवे सन्नहपुर थिकाह । हिनक घर कतय छैन्ह ? ककर दौहित्र थिकाह ? भाइ-बहिनिक सम्बन्ध कतय भेल छैन्ह ?" हरिहर बाबूक पिता जिज्ञासा कैलथिन्ह ।

सदानन्द प्रश्नक एहन बौछारक हेतु प्रस्तुत नहिं छलाह । कनें सकपका गेलाह । किन्तु फेर तुरन्ते सम्हरि कऽ जबाब देलथिन्ह । "विनयक केवल एकटा छोट भाई ओ एकटा छोट बहिन छथिन्ह । भाइ सम्प्रति मैट्रिकमें फर्स्ट भऽ सायन्स कालेजमें पढ़ि रहल छथिन्ह आर बहिन एहि साल मैट्रिक परीक्षा देथिन्ह । छोट भायक त कोनो कथे नहिं । बहिनिओ सम्प्रति अविवाहित छथिन्ह ।"

"हँ, से बुझल । किन्तु हिनक परिचय-पात की छैन्ह ?"

सदानन्द जबाब देलथिन्ह, "पूर्ण परिचय त हम पाछां देब । किन्तु मूल-ग्राम कहबामें हमरा कने त्रुटि भऽ गेल छल । ई लोकनि लगुड़धरे लोआम थिकाह ।"

कन्यागतक मुँह लाल भऽ गेलैन्ह। पहिने क्रोध पश्चात् घृणाक भाव देखौलन्हि। हुनक बगलमें एगोटे बैसल रहथिन्ह। हुनका दिस ताकि कऽ कहलथिन्ह, "हम तोरा कहैत छलिऔह। अंगरेजिया सभक लुचपन देखलह ?"

किन्तु सदानन्द यथामानापमानयोः। क्रोधक लेशो नहिं देखौलन्हि। शान्त स्वरसँ कहलथिन्ह, "त्रुटि त सबसँ होइत छैक। ई त्रुटि त कोनो एहन...?"

ओ व्यँगक स्वरमें कहलथिन्ह, "श्रोत्रियक कन्याक प्रति कुग्रामक जैबारक कथा उपस्थित करैत अहांकें कनेको संकोच नहिं भेल ? अहां त देशेमें रहैत छी ? भाय व्यापक पण्डित थिकाह। भलमानुसक आचार-व्यवहारसँ परिचित नहिं छी की ? हिनक की जाति-पांजि छैन्ह जे अहां हरिहरकें सनका देलिऐन्ह अछि ?"

"ई कुग्रामक नहिं थिकाह। हिनक घर अमुक ग्राममें छैन्ह जे अंगरेजी विद्यामें सम्प्रति मिथिलामें अग्रगण्य अछि।"

विद्रूपक स्वरमें हरिहर बाबूक पिता प्रतिवाद कैलथिन्ह, "अहां बारम्बार गौले गीत गबै छी ? शिक्षा! अंगरेजी-शिक्षा!! एकर अतिरिक्त संसारमें अहांकें आर कोनो वस्तु देखनामें नहि अबैछ ? मिथिलाक आचार-विचार अंगरेजी-शिक्षा पर नहिं, हरिसिंहदेवक व्यवस्था पर अवलम्बित छैक। श्रोत्रिय, योग एवं जैबारक जे श्रेणी भेल छैक से यावच्चन्द्रदिवाकरौ रहतैक। एकरा तोड़बा में अहां सन हजारो हजार अंगरेजियाक प्रयास अरण्यरोदने मात्र हैत।"

"मानल जे कोनो कारण विशेषसँ एहि प्रथाक श्रीगणेश भेल हो। किन्तु आइसँ ५०० वर्ष पूर्व देशमें जे स्थिति छलैक से त एखन नहिं अछि ? विद्या एवं आचार-विचारक आधार पर ई सभ श्रेणी कैल गेल छल। किन्तु विद्या त कोनो श्रेणी विशेषक सम्पत्ति नहिं छैक ? रहल आचार-विचार। ई त देश, काल ओ पात्रक अनुसार बदलैत रहैछ। जे सभ गोटे ओहि समयमें उच्च श्रेणीमें राखल गेल छलाह ओहिमें कतेक गोटे एखन श्रुति-स्मृति ओ सदाचारक पालन करैत छथि ? कतेक गोटे वेद ओ स्मृतिक अर्थ बुझैत छथि ? आर कहब मानन, त्रिपुण्ड्, पूजा-पाठ ? एकरा सभक युग आइ सँ बहुत पहिने समाप्त भऽ गेल छैक। ई सभ सम्प्रति ढकोसलाक चिह्न मानल जाइछ। श्रोत्रिय योग ओ जैबारक श्रेणी मनुष्ये द्वारा बनाओल गेल छलैक ओ मनुष्ये द्वारा टूटतैक। ई अनादि नहिं थिक जे यावच्चन्द्रदिवाकरौ रहत" सदानन्द कहलथिन्ह।

तीक्ष्ण दृष्टिसँ देखैत ओ कहलथिन्ह, "सनातन धर्मक अवहेला करब त आइ कांल्हिक चालि भऽ गेल छैक। किन्तु तैं की ? हाथी चलै बजार, कुकुर भुकै हजार। श्रोत्रिय कथमपि पतित नहिं भऽ सकैत छथि। श्रोत्रियक कन्याक सम्बन्ध लठधरक सन्तानसँ हो ? अहाँ स्वयं व्यापक परिवारक छी। एहन प्रस्तावक ओकालती करैत अहाँकें कनेको संकोच नहिं होइत अछि ?"

"लगुड़धरेक अर्थ लठियल बरनिक हो। किन्तु ई कोन इतिहासमें लिखल छैक जे एहि मूलक ब्राह्मण लठियल छलाह ? आर

यदि शब्दक अनुसारे कोनो समाजक इतिहासक अनुमान कैल जाय त अपने सभक पुरखा त गाछीक ओगरवाहे हैताह ? कारण, अपने सभ 'हरिअम्मे रखवारी' छी ? आर रखबारोक हाथमें त लाठी रहिते छैक ?"

हरिहर बाबूक पिता कने सकपकैलाह। हिनका दुहू गोटेक शास्त्रार्थ अकछ जकाँ बुझि पड़ैत छल। किन्तु चुप्पे रहलहुँ। ओ यावत किछु कहऽ चाहैत छथि कि सदानन्द दोसर बौछार देलथिन्ह।

"जैबारसँ सम्बन्ध कैलासँ अपने पतित भऽ जाएब, तकरो अर्थ हमरा नहिं बुझि पड़ैछ। अपनेक समाजक सैकड़ो व्यक्ति खाद्य-अखाद्यक कोनो विचार नहिं रखैत छथि। कतेको गोटे धनवान जैवारसँ सम्बन्ध करऽ लेल लालायित रहैत छथि। बहुतो गोटे कैनहुँ छथि। की हुनका लोकनिसँ अपने सम्बन्ध विच्छेद कैने छी ?"

सदानन्दक तीव्रता देखि आस्तेसँ हुनक हाथ दबा देलिऐन्ह। किन्तु चुप नहिं भेलाह।

"अपनेक ग्रामक अमुक बाबू त अपन कन्याक विवाह जैबारेक बालकसँ कैलन्हि अछि। की अपने सभ हुनका गामसँ हटा देलिऐन्ह अछि ? की अपने सभ हुनका ओहिठाम नहिं खाइत छी ?"

हरिहर बाबूक पिता क्रोधसँ लाल होइत कहलथिन्ह, "हुनका सभक छुइल जलसँ हमरा सभ लघिओ नहिं करबैन्ह। हुनका

पतित कए हमरा सभ जैबार बना देने छिऐन्ह। बालकक उपनयनमें दूघरा भऽक रहलाह। गाममें आठो टा ब्राह्मण नहिं भेलथिन्ह।"

"अच्छा, से बुझल। किन्तु अमुक व्यक्ति श्रोत्रिय होएबाक अधिकारी कोना भेल छथि ? पिता, पितामह, मसिऔत, पिसिऔत सभक सम्बन्ध त जैबारे में छैन्ह ? तहिना कन्यादानक पश्चात्......"

सुनितहि हरिहर बाबूक पिता क्रोधसँ बमकि उठलाह। अपन सहयात्रीक दिस तकैत दाँत पिसैत बजलाह, "पढ़ै फारसी वेचै तेल! भाय नौत-पिहानमें दू चारि टाका लऽक गुजर करैत छथिन्ह। आर एहि ठाम हिनक पिंगिल देखू! जेना पादरी सभ लोकके क्रिस्तान बनबैत अछि, तहिना श्रोत्रियके जैबार बनाबऽ चललाह अछि!"

किन्तु सदानन्द अपदस्थ नहिं भेलाह। आब दोसर पहलूसँ ऐलाह। कहलथिन्ह, "अच्छा, हमरासँ कोनो त्रुटि भेल हो त क्षमा कैल जाय। किन्तु हमर एकटा कथा सुनल जाय।"

क्रोधक बिहारि बहि गेला पर हरिहर बाबूक पिता शान्त भऽ गेल छलाह। चुप्पे रहलाह।

"विनयके यदि कलक्टरक पद नहिं भेटतैन्ह त पुलिसक कप्तान अवश्ये हैताह। आर सरकारी कालेजमें अंगरेजीक अध्यापकी त ब्रह्माक पितामहो नहिं रोकि सकैत छथिन्ह। बंगाली-समाजमें एहन पात्र बीसो हजार टाकाक दहेज देने

नहिं भेटैत छैक। पैघ पैघ राजा-महराजा सेहो एहन पात्रकें अपन कन्या देबाक हेतु लालायित रहैत छथि। ई त अपनेकें भाग्य बुझक चाही जे एहन पात्र अनायासे भेटि रहल अछि। एको कैंचाक खर्चो नहिं थिक। एहन पात्रकें कन्या देम में अपनेकें गौरव बोध होमक चाही। कोनो निरक्षर भट्टाचार्य, कुसंस्कारी व्यक्ति—जे एक दूटा विवाह कैने अछि—तकरासँ विवाह भेला पर की अपनेक कन्या सुखी हैतीह ? अपने त स्वयं विज्ञ छी। एक क्षणक हेतु मानि लेल जाओ जे कन्या अवाञ्छिते होथि। किन्तु जन्म त अपनहिक घरमें भेल छैन्ह ? हुनक उच्छेद करब की उचित थिक ? 'विषवृक्षोऽपि सम्वर्द्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम्।' ताहू में अपनेक कन्या ? हिरण्यमयी, साललतेव जङ्गमा। एहन सुन्दरी, गुणवती कन्या मैथिल-समाजक कोन कथा समस्त प्रान्तो में कएटा छथि ? 'शशिना सह याति कौमुदी सह मेघेन तड़ित् प्रलीयते।' विनयक संग अपनेक कन्याक सम्बन्ध ? मणि-काञ्चनक योग हैत।"

हरिहर बाबूक पिता व्यंगक स्वरमें कहलथिन्ह, "अपनेक काव्य बुझल। किन्तु जाहि कुलमें बालकक जन्म भेल छैन्ह 'गजस्तत्र न हन्यते'।"

सदानन्द तमातमा कए ठाढ़ भए गेलाह। "हाथी मारब त श्रोत्रियवंशावतंस अपने सन सिंहेक अधिकारमें पड़ल अछि", कहैत ओसारासँ नीचा उतरि गेलाह।

हरिहर बाबूक पिता हँसैत बजलाह, "खिसियाएल बिलाड़ि

धुरखुर नोचय!" फेर शोर कैलथिन्ह, "ओ, पड़ैलों किए ? बैसू, बैसू।"

सदानन्द घूरि कऽ नहिं तकलन्हि। मठियासँ बाहर भऽ गेलाह।

सहयात्री कहलथिन्ह, "सब तरहक लोक होइछ। जाय देल जाओ। 'द्विषन्ति मन्दाश्चरितं महात्मनाम्'।"

हम बैसले रहलहुँ। वातावरण शान्त भेला पर कहलिऐन्ह, "सदानन्द बाबू कथावार्तामें कने उग्र भऽ जाइत छथि। किन्तु ......"

"किन्तु की ? एहन अनर्गल कथा लोककें बर्दास्त भऽ सकैत छैक ?" सहयात्री बीचेमें टोकलन्हि।

"हम त अपने सभक आचार-व्यवहारसँ परिचित नहिं छी। यैह एके ठाम रहैत छी तें किछु किछु आभास भेटल अछि। सम्बन्ध करब, नहिं करब अपने सभक विचारणीय विषय भेल। किन्तु एहिमें मानवताक दृष्टिसँ एकटा विचार छैक जाहि पर अपने सभकें ध्यान देब आवश्यक थिक।"

दुहू गोटे साकांक्ष भए हमरा दिस ताकए लगलाह।

"विवाह-दानक अवसर पर ढोल-पिपही, बाजा-गाजा अवश्ये बजैत हैत ? अतिथि-अभ्यागत, कुटुम्ब-आत्मा सभ अवश्ये निमन्त्रित होइत हैताह ?"

सहयात्री टोकलन्हि, "कोन समाजमें विवाह-दान बिनु उत्सवे होइत छैक ?"

"सैह त हमहुँ कहै छी। हमरा ज्ञात भेल अछि जे अपने सभ कन्याक हेतु पात्र ठीक कऽ चुकल छी। द्वितीय वर थिकाह। स्त्री जीवित छथिन्ह। तीन चारिटा सन्तानो छैन्ह। आस्था-पात सेहो कोनो......?"

सहयात्री कहलन्हि, "ताहूमें कोनो सन्देह थिकैक? कहाँ राजा भोज, कहाँ भोजबा तेली? जाति-पांजिक अतिरिक्त हुनका आर की छैन्ह? दिन खाइत छथि त रातिक लेल भखैत छथि। किन्तु कन्याकें की हुनका घर जाए देथिन्ह? जमीन जमा दऽ गामेमें घर बना देथिन्ह।"

"अच्छा, त एहन पात्रकें कन्या देब की कन्याक बध करब नहिं थिक? आर महा उल्लास एवं आनन्दसँ अतिथि-अभ्यागत, स्वजन-परिजनक समक्ष? विवाह-मण्डपक वेदी की कन्याक लेल यूप-दारु नहिं थिक? जाहि तरहें छागर काटल जाइछ ताहि तरहें यदि कन्याक बध कैल जाइत त विशेष कष्ट-प्रद नहिं होइतैक। किन्तु एहन मृत्यु त शनैः शनैः अबैछ। मरणमें जीवन! एहि तरहें कष्ट दएकऽ मारब की उचित थिक?"

दुहू गोटेक मुद्रा गम्भीर भए गेलैन्ह। कन्याक पिता बजलाह, "स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः। विवाह-दान सामाजिक विषय थिकैक। अन्यदेशी लोककें अनुचित दखल नहिं देबाक चाही।"

× × ×

विवाहसँ पूर्व हरिहर प्राणपन चेष्टा कैलन्हि जे ज्योत्स्नाक विवाह विनयक संग हो। किन्तु प्रयास विफल भेलैन्ह। माय

कहलथिन्ह जे बेशी जिद्द करबह त धतूरक बीया पीसि कऽ पीबि लेब। पिता धमकी देलथिन्ह जे तुरुक भऽ जाएब। रूसि कऽ गाममेँ चल गेलाह। लोक बजाबऽ ऐलैन्ह; किन्तु कहलथिन्ह जे हमरा घरसँ कोनो प्रयोजन नहिं थिक।

× × ×

पूर्व स्मृतिक ई चित्र यावत आँखिक सामने छलैह की हरिहर बाबू स्टेशन दिससँ घूमि कऽ ऐलाह। कहलन्हि, "२७ टा डब्बा पटरीसँ उतरि गेल छैक। सोनपुरसँ क्रेन आबि त कहूँ लाइन साफ हैत। ई गाड़ी आइ कथमपि नहिं जाएत। आब मेष-वृषक कोनो काज नहिं। कल्हुका गाड़ीसँ चल जाएब। कमलामें घड़ियारो खूब आएल छैक। भिनसरेसँ उपलाइत छैक।" विचारलहुँ, एहि वीरान स्टेशन पर बैस कऽ कोन काज करब? घड़ियारक शिकारे सही। कहलिऐन्ह, "किन्तु हमरा संगमें राइफल त नहिं अछि?" उत्तर देलन्हि, "कोनो चिन्ता नहिं। नबाब साहेबक ओहि ठामसँ मँगा देब।"

जिरतिया महाशयकें दमसबैत कहलथिन्ह, "ठाढ़ भेल मुलुर मुलुर की तैकत छी? असबाब-पत्र उतरबा कऽ लऽ चलक चांखि अहांकें नहिं होइत अछि?"

"अहा-हा, हिनका कष्ट किए दैत छिऐन्ह?" हम कहलिऐन्ह। "ऑर्डरली!"

बलूची अरदली अलीदादखां तपाकसँ सर्वेन्टक डब्बासँ उतरि हमरा सामने आबि एटेन्शनमें ठाढ़ भऽ गेल।

कोपरिया स्टेशनसँ कचहरी लगे छलैक । सूर्यास्तसँ पहिनहि पहुँचलहुँ । बुझि पड़ल हरिहर बाबू सपरिवार ठहरल छथि । लगले जलखइक आग्रह कैलन्हि । कहलिऐन्ह एके बेर भोजन करब ।

"वाह, रे । एके बेर भोजन करब !" पाछां घूरि कऽ देखलहुँ एक कन्या ठाढ़ छथि । मुखाकृति आनन्दसँ उद्भासित छैन्ह ।

हरिहर आश्चर्यसँ पुछलन्हि, "एकरा चिन्हलिऐक नहिं ? ई भारती थिक । गत वर्ष मिडिल इंगलिशमें वजीफा पौलक अछि । एखन प्राइवेट पढ़ैत अछि ।"

जिरतिया महाशयक स्मरण कऽ रोमाञ्च भऽ गेल ।

भूमध्यसागरसँ सिंगापुर पर्यन्त एहन कोनो प्रमुख स्थान नहिं जहां गत पाँच वर्षमें हमर पोस्टिंग नहिं भेल हो । किन्तु कोन देशमें एहन आतिथ्य-सत्कार होइत छैक ? आतिथ्य-सत्कारोमें एहन सूक्ष्मता ओ कोमलता कोन समाजमें छैक ? हमरा सामने एक बड़का थार राखल छल जाहिमें कमसँ कम पाँच गोट खाधुर व्यक्तिक खोराक छलैक । नहिं वेशी त तीस-पैंतीस टा कटोरा-कटोरीमें जे सभ वस्तु छलैक ताहिमें बहुतोक हमरा नामो नहिं ज्ञात छल । हरिहर बाबूकें कहलिऐन्ह जे एहि ठाम रेशनिंग नहिं छैक तकर तात्पर्य ई नहिं जे खाद्यक दुर्दशा कैल जाय ? ओ चुप्पे रहलाह । किन्तु भारती तपाकसँ कहलन्हि, "वाह रे, एतबो नहिं खाएब त लड़ाई में बन्दूक कोना उठत ?" कोनो जवाब झट दऽ नहिं फुरल । एगोट घरैया व्यक्ति सेहो

ओही ठाम ठाढ़ छलाह । कहलन्हि, "कोनो हर्ज नहिं । एहि ठाम त चालीसटासँ उपरे नौकर-चाकर छैक ।"

गरमक दिन । एतेक वस्तु छलैक जे एक-एकटा खाइते-खाइते आन दिनक अपेक्षा दोबर भोजन कैल । ताहू पर आग्रह । एहि बेर उठबाक दृढ़ निश्चय कैल । भारती तपाकसँ कहलन्हि, "सब खाए पड़त नहिं त मोटरी बान्हि कऽ लऽ जाएक हैत । पटनामें हमरा सभकें मोटाक मोटा फल ओ मधुर देने छलहुँ । एहि ठाम त ओ सब नहिंए भेटत । देब यैह ऐंठ ।"

एहि आग्रहसँ कोनो तरहें जान बचबैत उठैक उपक्रम करैत छी कि "किछु नहिं खैलथिन्ह ! भारती तों आग्रह नहि कैलहुन्ह ?"

माथ उठा कऽ तकलहुँ ।

"दीदीकें चिन्हलिऐक नहिं ?" भारती प्रश्नसूचक भंगीसँ जिज्ञासा कैलन्हि ।

मुँहसँ कोनो कथा नहिं बहराएल । १५-२० सेकेण्ड धरि एक टकसँ हुनके दिस तकैत रहलहुँ ।

कङ्काल पर पातर चमड़ाक एक आवरण । जीर्ण-शीर्ण कलेवर । छाउर सनक रंग । ज्योतिहीन आँखि । १६-२० वर्षक अवस्था ; किन्तु तारुण्यक लेशो नहिं । की यैह ओ ज्योत्स्ना छथि जनिका छौ वर्ष पहिने देखने छलिऐन्ह ? जे कोनो घरक निराशाक अन्धकारकें नष्ट कए आशाक ज्योतिक संचार करितथि ? कतय अछि ओ लावण्य ? कतय अछि ओ उल्लास ?

तौलियासँ हाथ पोछि जखन बाहर जाय चाहैत छी कि एक खबासिन तश्तरीमें पान, सुपारी, एला इत्यादि आनि ज्योत्स्नाक हाथमें देलकैन्ह ।

कहलिऐन्ह, "हम त पान नहिं खाइत छी ।"

ज्योत्स्ना शान्त भावसँ हाथमें तश्तरी नेने हमरा दिस तकैत ठाढ़ रहलीह । किन्तु भारतीक हाजिरजबाबीसँ दंग रहि गेलहुँ । "एहि ठाम त अहां पल्टनक हाकिम नहिं छी जे लोक कहत पान खाइत छथि ?" ज्योत्स्नाक अधर पर कृत्रिम हास्यक एक रेखा देखल । पान हमरा दिस बढ़ा देलन्हि । हम द्विधा नहिं कैलिऐन्ह । पुछलिऐन्ह, "अहांक स्वास्थ्य बड्ड खिन्न देखैत छी ?"

नैराश्यक हँसी हँसैत बजलीह, हमरा सभकें नीक स्वास्थ्य लऽक की हैतैक ?" वाक्य शेष होइत होइत स्वर आर्द्र भऽ गेलैन्ह । देखल,

मिथिलाक वधु, हिय-भरा मधु,
नयने मूकक भाषा ।

विषयान्तर उपस्थित करैत जिज्ञासा कैलन्हि, "अच्छा, अहाँ की सन्यासिए रहब ?" हँसैत जबाब देलिऐन्ह, "हम त पल्टनमें रहि कऽ अज़ाति भऽ गेल छी । देशक कोन कन्यागत हमरा ओहि ठाम औताह ?"

ओहो हँसैत जबाब देलन्हि, "अच्छा, एहि घटकैतीक भार हम लेल ।"

× × ×

"अहाँ केहन ढहलेल छी ? साते बजे अहाँकें कहने छलहुँ

बेगार बजा कऽ माल-असबाब स्टेशन लऽ चलू । आर अहाँ एखन धरि गोरे-टाही कऽ रहल छी ?" बहिनोइकें दमसबैत हरिहर बाबू बजलाह । "आर मामा, अहूँके कनिको विचार नहिं ? भरि दिन भिसिण्ड जकां पड़ल रहैत छी !"

हरिहर बाबूक व्यवहार हमरा नीक नहिं बुझि पड़ल । जे हो कुटुम्बकें एहन तोड़ल-तोड़ल बात कहब की हुनका उचित होइत छैन्ह ? हिनका सभसँ यदि सामाजिक असमानता बुझैत छथि त फेर सम्बन्धक प्रहसने किएक ? किन्तु एहिमें दखल देब हमरा उचित नहिं बुझि पड़ल । चुप्पे रहलहुँ ।

मनसीमें मामा हमरासँ पुछलन्हि, "बाबू अहांक मूल की थिक ?"

कहलिऐन्ह, "हमरा ज्ञात नहिं अछि । किन्तु हमर प्रपितामह पञ्चक्रोशेसँ गेल छलाह ।

हुनक आकृतिसँ उपेक्षाक किञ्चित् आभास झलकल ; किन्तु किछु बजलाह नहिं । सुनल, वेटिंग रूमक बाहर, जिरतिया महाशय हुनका फुसुर-फुसुर कहैत छथिन्ह, "अहां कोन भ्रममें पड़ल छी ? दछिनाहा तेल बभना थिक तैं परिचय देम सँ धखाइत अछि । कालिह देखलिऐक जूते पहिरने गटगट शरबत पीबि गेल ।"

"हँ हौ, हमरो त तहिना बुझि पड़ैछ । हरिहर कें की ज्ञान भेलैन्ह जे एहन एहन छोट लोकसँ संसर्ग रखैत छथि ?" मामा कहलथिन्ह ।

मास्टर साहेब

पण्डित चुनचुन झा इनार पर बैसल मुँह धोइत रहथि। देखलन्हि, एकटा भरिया आम लेने चल अबैत अछि।

दावमनि हाथेमें रहि गेलैन्ह। तारतम्य करऽ लगलाह। कतयसँ अबैछ ? ककरा ओहि ठाम जाएत ? ककरहटाक महन्थजी त नहि पठौने छथि ? नहि, हुनका ओहि ठाम त बहुत दिनसँ नहि गेल छी ? साधु-वैरागीकेँ लौकित कतहु स्मरण रहैत छैक ? शिवशंकर बाबूक बालककेँ सासुरसँ पुछारी आबि रहल छैन्ह ? किन्तु हुनक कुटुम्ब ? ओ त महा चण्ठ थिक। भरिया अवश्ये राही थिक। दोसरा गाम जाइत अछि।

भरिया तावत आगां बढ़ल। आब स्पष्ट भऽ गेलैन्ह जे ओ यदि शिवशंकर बाबूक ओहि ठाम नहि जाएत त हिनका ओहि ठाम अवश्ये आओत। भरियाक दिस तकैत रहलाह। ओ एक पैरिया छोड़ि कऽ सड़क पर चढ़ल। पण्डितजी हताश भऽ

गेलाह। किन्तु एगोटेसँ नाम-धाम पुछैत भरिया फेर हिनके घर दिस घुमल। आनन्दसँ पुलकित भऽ गेलाह।

एक दिसक चंगेरामें छल कलमी आम। लंगड़ा, सफेदा बम्बई, कपुरिया, कृष्णभोग, मोहनभोग, जरदालु। दोसरमें छल लाल, पियर देखैत हिलसगर अनेको प्रकारक बीजू आम। दुरगीलालक केरबा, दुधम्मी, ककड़िया ओ धूनीसिंहक सिनुरिया सेहो छल।

आङनमें शोर पाड़लथिन्ह। "देखू महन्थजीक सौजन्य। दू वर्षसँ भेंटो नहि कैलिऐन्ह अछि। तथापि नहिं बिसरलाह। भानस-भात बन्द करू। आइ आर्द्रे होमक चाही।"

पण्डितजीक बालक कमलाकान्तो घरसँ बाहर आबि गेल छलाह। हुनका कहलथिन्ह, "हौ कमल, कने एकटा चक्कू लाबह त।"

"बाबूजी, खाली पेट आम कोना खैब ? दुःख नहि देत ?"

"आषाढ़क आममें गरमी कत पाबी ?" कहैत पण्डितजी स्वयं बाल्टीमें बीजू आम राखऽ लगलाह। कमलाकान्तकें आदेश देलथिन्ह, "ई चंगेरा कलमी आमक थिक। घर लऽ जाह। भोजनक समयमें देखल जैतैक। आ' हँ, भरियाकें किछु खाएक दऽक विदा कय दहोक।"

पण्डितजी दुरगीलालक केरबासँ परिचित छलाह। ई आम थिक त बिजुए; किन्तु कलमीक कान कटैछ। तौलमें आध-आध

सेर। सौरभमें बुभू मालदह। ताहू पर विशेषता जे पचश्रामें साबूदानाक काढ़ा। गोर पचीसेक श्राम लऽक पण्डितजी बैसलाह। तन्मय भऽक खाए लगलाह। किन्तु एकाग्रता वेशी काल नहि रहलैन्ह।

पहिने पीरा बिढ़नीक श्रागमन भेल। पश्चात् ललका बिढ़नी श्रपन प्रभुत्व जमौलक। बलियाक ठेंगा माथ पर। पीरा बिढ़नी सभ दबकि कऽ कोन पर फेंकल श्रांठी पर जा बैसल। ललका बिढ़नी खोइया श्रो श्रांठीक टालकें दखल कैलक। दू चारि गोट उड़ि उड़ि कऽ रससँ भरल पंडितजीक हाथ श्रो श्राँगुरो पर बैसक चेष्टा करऽ लागल। पण्डितजीकें उड़बैत उड़बैत पराभव भऽ गेलैन्ह। दू चारिटा श्रवाच्यो बजलाह; किन्तु बिढ़नी पर एकर कोनो प्रभाव नहिं पड़लैक। पण्डितजी खिसियैलाह। एक बेर, दू बेर, तीन बेर एगोट बिढनीकें उड़ौलन्हि। किन्तु नहिं मानलकैन्ह। तामसे पण्डितजीक मुँह लाल भऽ गेलैन्ह। दहिना हाथक तरहथ्थी पर फेर वैह ललका बिढनी बैस गेलैन्ह। "लैह सार" कहि पण्डितजी दाँत पिसैत पटाकसँ श्रपन तरहथ्थीकें भूमि पर पटकलन्हि। किन्तु लगले तिलमिला गेलाह।

"हौ कमल, कने गैसक तेल लाबह। बिढ़नी काटि लेलक।" पण्डितजी सिसिश्राइत बजलाह।

कमलाकान्त मायकें शोर पाड़लन्हि। माय कहलथिन्ह, "भोलासाहुक दोकानमें कालिह तेल श्राएले नहिं छलैक।"

"त चूने कने जल्दी लाउ"। पण्डितजी बामा हाथक तरहथ्थीसँ काटल स्थानकें मलैत सिसिश्राए लगलाह।

घरक पछुश्रारक बाटे सुपारीलाल महीस पर चढ़ल पाँच-सात टा महीस हँकने चल जाइत छलाह। पण्डिताइन हुनका देखितहि कहलथिन्ह, "हे बाबू, कने चून देने जाउ। ललका बिढ़नी काटि नेने छैन्ह।"

सुपारीलाल महीस सभकें हहकारि कऽ इनार पर ऐलाह। पण्डितजीकें कहलथिन्ह, "कक्का, श्रहां केहन मूर्ख छी? श्रोनाहू केश्रो बिढ़नी मारैश्र?"

जे बिढ़नी कटने छलैन्ह से कुचा कऽ श्रधमरू भऽ गेल छल; किन्तु एखनो भूमि पर छटपटाइत छल। सुपारीलाल श्रपन लाठीक हूरासँ श्रोकरा पञ्चत्व प्राप्त करबैत गर्वसँ बजलाह, "बिढ़नी एना मारेके चाही।" फेर श्रामक खोइया श्रो श्रांठीकें दू चारि बेर लाठीसँ पिटलन्हि। दू चारिटा बिढ़नी मरल; कतेको घायल भेल; श्राश्रोर सभमें भगदड़ मचि गेलैक। एहि देवासुर संग्राममें एकटा श्रांठी उछटि कऽ पण्डितजीकें पेटमें लगलैन्ह। श्रांठी श्रास्तेसँ उड़ल छल। चोट प्रायः नहिं लगलैन्ह। किन्तु यज्ञोपवीत दूरि भऽ गेलैन्ह। बिढ़नी समुदाय श्रपन श्रधिकारसँ वञ्चित होइतहि तुमुल युद्ध ठनना लेल प्रस्तुत भेल। श्रोकर घटा-टोप देखि पण्डित, पण्डिताइन, कमलाकान्त सभ गोटे घर दिस पड़ैलाह।

"जाउ, एतबेमें भाग गेली? बिढ़नी से एना डरै छी त गीदड़-

हुड़ारसे पाला परलासे की करब ?" सुपारीलाल गर्वसँ कहलथिन्ह।

पण्डितजीक तरहथ्थी बड्ड बिसबिसाइत छलैन्ह। सिसियाइत छलाह। "कमलाकान्त अनुनयक स्वरमें कहलथिन्ह, "औ सुपारी भाई, कने चून दिअ जे पहिने लगा दियौन्ह।" सुपारीलाल डाँड़सँ चुनौटी बहार कैलन्हि। चून शेष भऽ गेल छलैन्ह। दु-चारि बुन्द जल दऽ खखोरि कऽ देलथिन्ह। एतबहिमें टूटा महीस झब्बूलालक मकइक खेतमें हेल गेल छलैन्ह। "हइ-हा-हा-हा-हा" करैत माल रोमऽ लेल सुपारीलाल दौड़ैत चल गेलाह।

जटाशंकरो बाबू हो-हल्ला सुनि कऽ उपस्थित भेलाह। कहलथिन्ह जे सोमे चून लगौलासँ नहिं सुनत। चूनक संग हरदि सेहो गरम कए लगबिऔक। दर्द तुरन्ते खीच लेतैन्ह। हुनक उपचार चलल। किन्तु दर्द कम नहिं भेलैन्ह। वरञ्च तरहथ्थी फूलऽ लगलैन्ह। टनक सेहो देम लगलैन्ह।

किछु कालक पश्चात् नैयायिक विश्वेश्वर ठाकुरकें जखन वार्त्ता भेलैन्ह त ओहो जिज्ञासामें पहुँचलाह। सान्त्वना दैत कहलथिन्ह, "बिढ़नीक काटब त कोनो विशेष वस्तु नहि भेल। एकर विष तुरन्ते उतरि जाइत छैक। किन्तु चुनचुन एकर प्राण लेबक उद्देश्यसँ एकरा पर प्रहार कैने छलथिन्ह। अतः नितान्त खिसिया कऽ कटने छैन्ह ओ तदनुयायी विषक मात्रा सेहो विशेष बुझबाक चाही।"

पण्डिताइन केवाड़क आड़में ठाढ़ि छलीह। आङनमें जाकऽ

कानऽ बाजऽ लगलीह। महन्थकें शाप देब लगलथिन्ह। कतसँ आम पठौलक जे एहन अनर्थ भेल।

नैयायिक कहलथिन्ह, "कमलाकान्तक मायक कथन कोनो अनर्गल नहिं होइत छैन्ह। समस्त फसादिक जड़ि त आमे थिक ? यदि नहिं अबैत त चुनचुनक ई दशा त नहिंए होइतैन्ह ? अस्तु। आगतन्तु भयं वीक्ष्य प्रतिकुर्यात् यथोचितम्। हिनक हाथ जे फुलल जाइत छैन्ह तकर कारण थिक शरीरमें विषक सञ्चार ओ एहि विषक केन्द्र अछि बिढ़नीक कांट जाहिसँ बिढ़नी चुनचुनक तरहथ्थीमें विषक वपन कैलक अछि। एहि कांटकें यदि कोनो तरहें शरीरसँ पृथक कैल जाय त पीड़ा कमि सकैत छैन्ह। फुलल हाथो पचकि जैतैन्ह।"

पण्डितजीक तरहथ्थी सम्प्रति एतेक फूलि गेल छलैन्ह जे कोन ठाम बिढ़नी कटने छैन्ह तकर सन्धान पाएब असम्भव छल।

"हौ कमलाकान्त, एकटा सुई लाबह त।" नैयायिक आदेश देलथिन्ह।

पण्डितजी बजलाह, " मामा, छोड़ि दियौक। बिढ़नीक काटल एहिना आराम भए जाइत छैक। ललका छलैक कि ने तें कने टनक मारैत अछि।"

"तों की बजैत छह ? शरीरस्थ रिपुकें केओ एना छोड़ैत अछि ?" नैयायिक प्रतिवाद कैलथिन्ह।

निदान ओ सुईसँ कएक ठाम जांच कैलथिन्ह। किन्तु

काँट कतहु नहिं भेटलैन्ह । सुई बेशी गड़लासँ पण्डितजी दू एक बेर सिसिऐलाह । "हौ, तों की नेना छह जे एना सिसियाइत छह ?" कहि नैयायिक हुनका सान्त्वना देलथिन्ह । चलैत काल कहलथिन्ह, "यद्यपि शत्रु नहिं पकड़ायल, तथापि ओकरा ऊपर एहन हमला भेल छैक जे आब महा पराभवमें पड़त । फेर कोनो उपद्रव करबाक साहस नहिं हैतैक ।"

पण्डिताइन कहलथिन्ह, "औब आइ-माइक चुटकासँ अहाँक कष्ट दूर नहिं हैत । जन्दाहाक डाक्टरक दवाइ विनु कैने हाथ नहिं पचकत ।"

पण्डितोजीकें द्वितीय पन्था नहिं सुझलैन्ह । निदान मक्खू बाबूक दरवाजा दिस चललाह ।

मक्खू बाबूक अंगरेजी विद्याक धाक केवल गामेमें नहिं वरञ्च एहि परोपट्टामें सगरो छल । कारण, एहि दिस एखन धरि अंगरेजीक बहुत कम प्रचार भेल छलैक । एहि ग्राममें संस्कृतक प्रधानता छलैक । मक्खू बाबूक देखादेखी दू गोटे हाइ स्कूलमें गेल छलाह ; किन्तु केओ इन्ट्रैन्स धरि नहि पहुँचि सकलाह । बी०ए०क परीक्षामें अंगरेजीक पत्रमें तीन वेर असफल भेला पर मक्खू बाबूकें आर हिम्मत नहिं पड़लैन्ह । पित्ती रघुनाथझा साहस देलथिन्ह । 'जे घोड़ा पर चढ़ैछ सैह त खसैत अछि ? किन्तु मक्खू बाबूकें उत्साह नहिं भेलैन्ह । लगले हाइ स्कूलमें मास्टरी भेट गेलैन्ह ।

मक्खू बाबू गर्मीक छुट्टीमें सम्प्रति गामे छथि । ओसारा पर बैसल छलाह । दू गोटे आओर घेरने छलैन्ह । पण्डितजी कें अबैत देखि दूरेसँ कहलथिन्ह, "आइये, पण्डितजी । सुना है, आप आम खूब खा रहे हैं ?"

"की खेब ? बिढ़नी काटि लेलक अछि । हरदि चून लगौलों । विश्वेश्वर मामा सेहो कांट बहार करबाक प्रयास. कैलन्हि । किन्तु सब व्यर्थ । देखू हाथ फुलले जाइत अछि ।"

"पण्डितजी, इस सबसे कुछ होनेका नहीं । देहातका मामला है । देहाती नुस्खे काममें लाइये । मन्तर नहीं जानते ?—

'बिढ़नी रानी, तुम बौरानी तोरा मुँहमें आग न पानी ।'

बस, इसी मन्तरसे झाड़िये । फिर देखिये, क्या गुल खिलता है"—मास्टर साहेब कहलथिन्ह ।

'सब टोटमा कैल । किन्तु कोनो फल नहिं भेल' । पण्डितजी अत्यन्त दीन भावसँ कहलथिन्ह ।

दू गोटे जे बैसल छल ताहिमें सँ एगोटे बाजल, "से की कहल जाइअ पंडीजी ? ओझा गुनी फेन की कहलकै ? फेकू माझी के बोलाक झराऊ । फेन देखू बहोरन बाबा आइसके एक्के रोजमें कैसन चंगा क दै छथ । विना नेम धरम के आइस मन्तर पढ़ क झारब त बढ़म कैसे सुनतन ?"

मास्टर साहब कहलथिन्ह, "देखिये पण्डितजी, रायजी की बात पर अमल कीजिये । फेकू सवा रुपये की सिड़नी लेगा ज़रूर । लेकिन शर्त्तिया चंगा कर देगा ।"

अपन फुलल तरहथ्थी मास्टर साहेबकें देखबैत पण्डितजी बजलाह, "अपनेकें प्रायः विश्वास नहि होइछ । बड्ड कष्टमें छी । आब "सन्तप्तानां त्वमसि शरणम्" । जन्दाहाक डाक्टरक नामसँ अंगरेजीमें एकटा चिट्ठी लिखि दिअ जे कोनो बढ़ियां दवाइ दे जाहि सँ शीघ्र आराम भऽ जाय ।"

"चिट्ठी-उट्ठी से कुछ होने का नहीं । अंगरेजी दवा ही चाहते हैं तो खुद चले जाइये । मरीज देख के ही तो डाक्टर दवा देगा ?"

"से त हमरो विचार छल । कमलाकांतकें बरद-गाड़ी भाड़ा करक हेतु पठौने छलिऐन्ह । किन्तु कोनो बहलमान राजी नहिं भेलैन्ह । कहलकैन्ह, एखन धानक खेतमें कदबा भऽ रहल छैक । केओ नहिं जायत ।" पण्डितजी जबाब देलथिन्ह ।

"तो फिर आप खुद ही हिन्दीमें चिट्ठी लिखकर अपने लड़के को क्यों नहीं भेज देते ? डाक्टर कायस्थ है । हिन्दी पढ़ लेगा ।" मास्टर साहब पण्डितजीकें टारि देबाक उद्देश्यसँ कहलथिन्ह ।

"हँ, से त हिन्दीमें अनुप्रास, यमक सभ दऽ क लिखि सकैत छिऐन्ह; किन्तु 'रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय' । हिन्दीमें लिखलासँ डाक्टर साहेब पढ़बो नहि करताह । अंग-रेजीमें लिखलासँ पत्रमें गुरुत्व हैतैक । ताहूमें अपने सन विद्वान्क हाथसँ त कोनो कथे नहिं हो । बढ़ियां औषध अवश्ये देथिन्ह" । पण्डितजी अत्यन्त कातर भावसँ निवेदन कैलन्हि ।

बैसल दुहू गोटेमें सँ एगोटे मास्टर साहेबकें कहलकैन्ह, "पंडीजी ठीक कहै छथ । अंगरेजी और हिन्दीमें बहुत बीच है । हिनका जब डाक्टरीमें विश्वास हैन त एकठो चिट्ठी अंगरेजी में लिख देल जाएन जैसे अच्छा दवा देतैन । हिन्दीमें चिट्ठी भेजे से कुछ न गुदानतैन । और अपनेके कलम से हिनकर भलाइ हो जाएन त ऐसन काम जरूर करेके चाही ।"

मास्टर साहेब पसोपेसमें पड़ि गेलाह । समस्त परोपट्टामें अंगरेजीमें हुनक पाण्डित्यक धाख छल । सर्वसाधारणकें आश्चर्य होइत छलैक जे हुनका मस्तिष्कमें एतेक बात कोना रहैत छैन्ह । भुसकौलसँ भुसकौल विद्यार्थीकें हुण्डा लऽ क गणित में पास करा दैत छलथिन्ह । एखन पण्डितजीक आग्रह कोना टारथिन्ह ? ओहू पर दू गोटे सिफारिस कऽ रहल अछि ।

"अच्छा आप बैठिये । मैं आता हूँ ।" कहैत मास्टर साहेब अन्दर चल गेलाह । दू गोटे जे बैसल छल सेहो उठि कऽ जैबाक उपक्रम कैलक ।

लगभग १० मिनटक पश्चात् मास्टर साहेब बाहर ऐलाह । पण्डितजीकें कहलथिन्ह, "अभी नहाने खानेका वक्त है । बेरमें आइये । बदरीके पास कागज कलम है । वह स्कूलसे चार बजे लौटेगा ।"

"किन्तु अपराह्नमें चिट्ठी देलासँ अस्पताल बन्द भए जैतैक । एहि ठामसँ दू कोस जाहूके छैक । अपने सन उदारचेता व्यक्तिक समीप समीचीन निवेदने हम पर्याप्त बुझैत छी ।

परोपकाराय सतां विभूतयः ।" पण्डितजी विनम्र भावे निवेदन कैलन्हि । फेर "हौ, कमल ! कागत, कलम, मोसि जल्दी लऽक आवह"। कमलाकान्तकें आदेश देलथिन्ह ।

पण्डितजीक सुभाषितसँ मास्टर साहेब कने मोलायम भेलाह । बजलाह, "आप लोग सब काम बेमौके ले आते हैं। अच्छा, लाइये", कहि बैस गेलाह । १२ सँ ऊपर समय भऽ रहल छल ।

कमलाकान्त व्याकरणक मध्यमक तैयारी कऽ रहल छलाह। अपन लेखक कापी, हर्रे-कासीसक मोसि ओ करेरीक कलम मास्टर साहेबक सामने राखि देलथिन्ह ।

मास्टर साहेब कलमसँ लिखबाक चेष्टा कैलन्हि ; किन्तु नहिं उजिऐलैन्ह । कमलाकान्तसँ पुछलथिन्ह, "क्याजी, पेंसिल नहीं है ?" विद्यार्थी जेबीसँ एकटा बहुत छोट पेंसिल बाहर कैलन्हि । "वाह ! क्या नमूने की चीज है ! इसे जादूघरमें भेज दो । एक आध रुपये इनाम मिल जायगा", कहि मास्टर साहेब करेरीक कलमसँ चिट्ठी ड्राफ्ट करए लगलाह ।

मैट्रिकमें गणित पढ़बैत मास्टर साहबकें १२ वर्षसँ ऊपर भऽ गेल छलैन्ह । अंगरेजी लिखा-पढ़ीक अभ्यास एकदम छूटल छलैन्ह । आवेदन-पत्र जेना लिखल जाइछ तहिना पत्र लिखबाक चेष्टा कैलन्हि । किन्तु उपयुक्त नहिं बुझि पड़लैन्ह । तारतम्य करऽ लगलाह । पण्डितजी, हुनका विचारमें बाधा दैत कहल-थिन्ह, "पत्रमें कने अपनैतीक भाव झलका देबैन्ह जाहिसँ

झाटी औषध पठावथि । अहां त स्वयं विज्ञ छी। हम किछु कहब अनावश्यके बुझैत छी।"

मास्टर साहेब विरक्त होइत कहलथिन्ह, "पण्डितजी, आपलोगों के कॉमन-सेन्स की तारीफ है !" फेर कलम चलाबऽ लगलाह । पण्डितजीकें तात्पर्य नहिं बुझि पड़लैन्ह । बुझलन्हि जे हमर प्रत्युत्पन्न मतिक प्रशंसा कऽ रहल छथि ।

मास्टर साहेब लिखबाक शैली निर्धारित कए शुरू कैलन्हि.

To

The Medical Officer,

Jandaha.

Sir,

Pandit Chunchun Jha has been bit

कलम रुकि गेलैन्ह । फर्स्ट बुकक गदहाक बेयानक प्रथम वाक्य स्मरण भेलैन्ह, 'A cur bit a dam.' पण्डितजीसँ पुछलथिन्ह, "बिढ़नीने कैसे काटा ?"

पण्डितजी चट दऽ हाथ बढ़ा देलथिन्ह । "यैह देखू, तर-हथ्थीमें सूँग गड़ा देलक। सुइसँ बहार करबाक कतेक चेष्टा कैल गेल ; किन्तु धराइए नहिं देलक ।"

मास्टर साहेब फेर तारतम्यमें पड़ि गेलाह । विचारलन्हि, 'कुकुर, बानर इत्यादि पशुक दाँतसँ कटला पर 'bit'क प्रयोग होइछ । बिढ़नी त दाँतसँ नहिंए कटने छैन्ह ? एहना स्थितिमें यदि एकर प्रयोग कैल जाय त डाक्टर हँसि देत ? यदि

पण्डितजीकें कहि दिऐन्ह जे चिट्ठी नहिं लिखब त आब बात बढ़ि गेल अछि, गौआं सभ गमि लेत। गम्भीर मुद्रासँ किछु स्मरण करऽ लगलाह। पंडितजी हुनक गाम्भीर्य देखि विचारलन्हि, 'खूब सुन्दर वाक्य-विन्यास कऽ रहल छथि। डाक्टरकें सर्वोत्तम औषध देमहि पड़तैन्ह।' मास्टर साहेब कें प्रसन्न करबाक उद्देश्यसँ चट दऽ श्लोकक आवृत्ति कैलन्हि,

"उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः पद-लालित्यं माघे सन्ति त्रयोगुणाः॥

अहांक लेखमें तिनू गुणक जे समन्वय हैतैक से अन्यत्र भेटब दुर्लभ। डाक्टरो बुझताह जे आइ केओ पत्र लिखने छैन्ह।"

मास्टर साहबकें कने प्रसन्नता भेलैन्ह। किन्तु उत्तरदायित्वक भार आर बढ़ले बुझि पड़लैन्ह। फेर फर्स्टबुकक शरण लेलन्हि। मुरगीक बेयानक केआस करऽ लगलाह। लगभग दू मिनटक बाद सहसा स्मरण भेलैन्ह, 'Mohan was stung by a bee.' (मोहनकें मधुमाछी कटलकैन्ह)। हुनक आकृति पर प्रसन्नता देखल गेल। फरमूला भेट गेल छलैन्ह। वाक्यक पुनर्योजना कैलन्हि।

'Pandit Chunchun Jha has been stung by a bee.' Bee (मधुमाछी) लिखा गेल छलैन्ह। एकरा कटलन्हि। 'लाल बिढ़नीने काटा था' कहि Redक योग कैलैन्हि। एकरा बाद फेर गाड़ी रुकि गेलैन्ह। बिढ़नीक अंगरेजी पर्याय भेटिते नहिं छलैन्ह। वीजगणित, अंकगणित

दुहूक प्रत्येक लाइन स्मरण छलैन्ह। किन्तु बिढनीक उल्लेख कतहु नहिं भेटलैन्ह। कने चिन्तित भेलाह। आइ एतेक दिनक सञ्चित मर्यादा पर हठात् हमला भेल छलैन्ह। रेखागणितक दिस प्रयास करब व्यर्थ बुझि पड़लैन्ह। फर्स्टबुकक प्रत्येक लाइन एखनो स्मरण छलैन्ह। केआस कैलन्हि। किन्तु बिढ़नीक पर्याय कतहु नहिं भेटलैन्ह।

कमलाकान्त आँखि मटकबैत पंडितजीकें कहलथिन्ह, "आइ डक्टरबेकें बुझि पड़तैन्ह! ओहि दिन जयगोविन्द गेल छल त बड्ड तुम-ताम कैने छलथिन्ह।"

पंडितजी जवाब देलथिन्ह, "लोहा लोहाकें कटैत अछि।"

मास्टर साहेब आध घण्टासँ विचारैत छलाह। महा संकट उपस्थित छल। बिढ़नीक पर्याय Worm लिखलन्हि। किन्तु मन नहिं मानलकैन्ह। दू-तीन बेर एकरा लिखि कऽ कटलथिन्ह।

पंडितजी कहलथिन्ह, "बड्ड रिसिया कऽ कटने छल। तैं टनको बेशी दैत अछि। ई भाव कने विशिष्ट रूपें झलका देबैन्ह।"

मास्टर साहेबकें आर नहिं रहि भेलैन्ह। बमकि कऽ कहलथिन्ह, "आपको किसने बिढ़नी के पास जाने को कहा था? आप क्यों गये थे जो उसने काटा?"

पंडितजी विनम्र भावसँ उत्तर देलथिन्ह, "आइ प्रातःकालमें महन्थजी थोड़े आम पठौने छलाह। एक दू टा लऽक खाइत छलहुँ कि हांजक हांज खसल। हाथ पर बैसऽ लागल।..."

पण्डितजी अपन कथो नहिं समाप्त कैने छलाह कि "तो आपने उसे मारा क्यों? जिसे मारियेगा वह काटेगा नहीं?" खिसियाइत मास्टर साहेब बुमकार छोड़लन्हि।

"जे भेलैक से भेलैक। एखन त अपनेक विनु कृपा भेने कष्ट दूर नहिं भऽ सकैछ", पंडितजी शान्त भावे कहलथिन्ह।

"वेर विपत्तिमें अपने सभक सहायता नहिं भेटत त हम सब कतय जायब?" कमलकान्त अनुनयक स्वरमें योग देलथिन्ह।

मास्टर साहेब कने मोलायम भेलाह। फेर कलम उठौलन्हि। दू चारि मिनटक पश्चात् Worm क स्थानमें Creature लिखलन्हि। किन्तु तारतम्य करऽ लगलाह। लाल रंगक जीव त बहुतो होइछ? डाक्टर बिढ़नी कोना बुझतैक? यदि रोमन में 'बिढ़नी' लिखिऐक त डाक्टर गमि लेत जे अंग्रेजी नहिं जनैत छथि? आ' पाछाँ यदि पण्डितजीकें ई बात मालूम हैतैन्ह त गाम भरि में ढोल पिटैत फिरताह?

हुनका तारतम्यमें पड़ल देखि पण्डितजी हुनक स्तुतिवाद आरम्भ कैलन्हि। "अहाँ सन परोपकारी आइ कालि कतेक गोटे थिकाह? अहाँक एतेक बहुमूल्य समय नष्ट कैल। किन्तु 'ऋते समुद्रादन्यः को विभर्त्ति बड़वानलम्?' अर्थगौरवपूर्ण पत्र अपने जकाँ के लिखि सकैत छथि? बड़वा अग्निकें धारण करबाक क्षमता त समुद्रेकें छैन्ह?"

"जोरदार चिट्ठी लिखना मजाक नहीं है। और आपको मालूम होना चाहिये कि विलायतमें आम और बिढ़नी नहीं होते? दोनों का अंगरेजी बनाना खेल नहीं है।" कहि मास्टर साहेब Creature क स्थानमें Insect लिखलन्हि। किन्तु सन्तोष नहिं भेलैन्ह। एकर माने त भेल कीड़ा-मकोड़ा। बिढ़नीक अर्थ कोना बुझि पड़तैक?" मने मने अपन आराध्य-देव महावीर बजरंगीकें स्मरण कैलन्हि। "आइ कठिन परीक्षा में पड़ि गेल छी। कहुना उबारू।"

एतबहि में आङ्गन दिससँ एक बटुक आबि कऽ कहलकैन्ह, "काकी कहै छथि जे आइ कि साँझ कऽ स्नान करताह? अलखइयो नहिं कैने छथि। पित्त बिगड़ि जैतैन्ह।"

मास्टर साहेब फेर गरमा गेलाह। कहलथिन्ह, "बाप-बेटा दोनों पण्डित हैं! लेकिन बिढ़नीसे खेल करते हैं! बिढ़नी का अंगरेजी बनाना इन लोगोंने मजाक समझ लिया है!"

बाप-बेटा चुप्पे रहलाह।

मास्टर साहेबकें मोन पड़लैन्ह जे शब्दकोषसँ किछु सहायता भेटै? किन्तु कोष कत भेटतैन्ह? ओ त कोनो पुस्तकक संग्रह नहिं कैने छथि? फेर मोन पड़लैन्ह जे बाकसमें देखक चाही किंसाइत पुरान-धुरान गोटेक भेट जाय? दरवाजा पर एक पुरान सन्दूक राखल छलैन्ह। ओकरा खोललन्हि। दियार खाएल कागतक कएकटा पुलिन्दा भेटलैन्ह। जोहैत-जोहैत इलाहाबादक प्रकाशक रामनारायणलालक एकटा अंगरेजीसँ हिन्दी डिक्श-

नरी संयोगवश हाथमें आबि गेलैन्ह। गत्ता दियार खा गेल छलैक। पत्रो में भूर कऽ देने छलैक। किन्तु कोनो पत्र फाटल नहिं छलैक। पत्र उनटाबऽ लगलाह। बड़े धैर्यसँ G अक्षर धरि पहुँचल छलाह कि पण्डितजी टोकि देलथिन्ह, "अपनेक ई महोपकार हम जन्म भरि नहिं बिसरब।"

मास्टर साहेब पित्ते माहुर होइत बजलाह, "आपलोग कोरे पण्डित ही रह गये। सबेरे-सबेरे आम क्या खाने लगे? आम खानेका कोई दूसरा वक्त नहीं मिला था?"

पण्डितजीकें कोनो जबाब नहिं फुरलैन्ह। एही बीच ध्यान हटि गेलासँ मास्टर साहेब डिक्शनरी बंद कऽ देलन्हि। स्मरणो नहिं रहलैन्ह जे कोन ठाम धरि बिढ़नीक पर्यायक अन्वेषणमें पहुँचल छलाह। महा संकट उपस्थित छल। यदि देवनागरीक वर्णानुक्रमसँ बिढ़नीक अंगरेजी पर्याय देने रहितैक त अनुसन्धानमें विशेष भाङठ नहिं होएतैन्ह; किन्तु एहिठाम त सृष्टिए विपरीत छलैक। ५०० पृष्ठक ई डिक्शनरी! A सँ Z धरि अंगरेजी शब्दक अर्थ जोहि बिढ़नीक पर्याय बाहर करब की साधारण बात छलैक?

मास्टर साहेबक समस्त प्रतिष्ठाक आइ बाजी छल। एखन डेढ़ बजैत छल किन्तु मास्टर साहेब अपन पराजय कोना स्वीकार करितथि? फेर शुरूसँ शब्दकोष उनटाबऽ लगलाह। १०-१२ मिनट धरि अन्वेषण जारी रखलन्हि। दिमाग घूमि गेलैन्ह। लोहछि कऽ कहलथिन्ह, "इसमें बिढ़नी कहाँसे आयगी? कोई

अलफाज मैंने नहीं छोड़ा है बिढ़नी से कटवाने जाते हैं! आपलोग पण्डित हो गये लेकिन ....।"

एहि गोलमालमें डिक्शनरी फेर बन्द भऽ गेलैन्ह। जहाँ धरि पहुँचल छलाह ताहिमें कोनो चिन्हो नहिं लगौने रहथि!

पण्डितजी कहलथिन्ह, "हम कोन शब्दमें अपन कृतज्ञता प्रगट करू? अहाँकें आइ स्नान-भोजनमें अतिकाल भऽ गेल। किन्तु अपने सन उदारचेता व्यक्तिकें परोपकारार्थ कष्ट उठाबहि पड़ैत छैन्ह।"

एही बीचमें मास्टर साहेबक पितियाइन आबि कऽ दरबाजाक केवाड़ लग ठाढ़ छलथिन्ह। कहलथिन्ह, 'हौ चुनचुन, तोरा की ज्ञान भेलौह? नेना बालक बिढ़नीमें कटौने त बरु एकटा बात भेल। तों बूढ़ भऽकऽ ओकरा खोंचारऽ गेलहीक किए?"

पण्डितजी उत्तर देलथिन्ह, "मामी, एहिमें हमर कोनो दोष नहिं थिक। हम एकटा आम ..." माथ उठा कऽ देखलन्हि, हुनक भागिन चन्द्रभूषण प्रणाम कय रहल छथिन्ह।

"की हौ, निकें त छ?"

"अपनेक आशीर्वाद। कालेजमें नाम लिखाबऽ जाइत छलहुँ। विचारल जे अपनेसँ भेंट करैत चली। गाम पर पहुँचितहि मामी कहलन्हि जे एहि तरहक घटना भेल छैक। चिट्ठी लिखा गेलैक?"

"नहिं, विषय येह बिढ़नी पर अटकि गेल छैक। एहि शब्दक अंगरेजी पर्याये नहिं छैक।"

"से अपने की कहैत छी ?" भागिन प्रतिवाद कैलथिन्ह। "अंगरेजीमें एकरा Wasp कहैत छैक।"

मास्टर साहेबक अँगरेजीमें विद्वत्ताक धाक पण्डितजी पर एतेक जमल छल जे नवीन मैट्रिक पास विद्यार्थीक कथन पर हुनका सहसा विश्वास नहिं भेलैन्ह।

मास्टर साहेब नवागन्तुककें सन्दिग्ध दृष्टिसँ देखैत बजलाह, "आजका बनिया, कलका सेठ। यहाँ हम १५ वर्षसे पढ़ा रहे हैं। हमें बिढ़नी से अंगरेजीमें मुकाबला ही नहीं हुआ और आज ये मुझे सबक सिखाने चले हैं!"

चन्द्रभूषण कहलथिन्ह, "अहांकें ऐखन बिढ़नीक अंगरेजी देखा दैत छी", कहि W अक्षरमें उपयुक्त पृष्ठ खोलि कऽ मास्टर साहेबक सामने राखि देलथिन्ह। लिखल छल Wasp—हड्डा, बिढ़नी।

कमलाकान्त पिताकें कहलन्हि, "आब मास्टर साहेबकें कष्ट किएक दैबैन्ह ?"

× × ×

एही बीच गोअरटोलीक एगोटे मास्टर साहेबसँ किछु टाका पैंच लेबक उद्देश्यसँ आबि कऽ उपस्थित भेल छल। अपना टोल में जाऽक बाजल, "मास्टर साहेब आज एकठो तन्नीबरके लड़िका से हार गेलन।"

कालेजक विद्यार्थी

[१]

१० अक्तूबर १६४५। सन्ध्या ५ बजे। वैद्यनाथधाम रेलवे स्टेशनक वेटिंग रूम।

जैसीडिहक ट्रेनमें एखनो दू घंटासँ ऊपर विलम्ब छलैक। हमरा अतिरिक्त आर केओ वेटिंग रूममें नहिं छलाह। लगभग आध घंटासँ आराम कुर्सी पर ओङठल एकटा जासूसी उपन्यास पढ़ैत छलहुँ कि जूताक मचर-मचर शब्दसँ हमर ध्यान पुस्तकसँ हटि गेल।

दू गोट युवक धड़फड़ाइत बैस गेलाह दुहू खजिया कुर्सी पर। एगोटे लगले दबौलन्हि पंखाक स्विच। किन्तु नहिं चललैन्ह। तमसा कऽ अंगरेजीमें रेलवेकें दूटा अवाच्य कहि फेर बैस रहलाह। एगोटेक पोशाक छल सन्ध्याकालक उपयुक्त फ्लैनेलक पतलून, हरियौन रंगक रेशमी हाफ कमीज ओ क्रोमक बादामी जूता। हिनक डील-डौल, आकृति ओ बजबाक भंगीसँ बुझि पड़ैछ जे कोनो सुसम्पन्न घरक थिकाह। दोसर गोटे सादा

पायजामा, पंजाबी ओ बाटाक नवका स्टाइलवाला करिया हाफ शू पहिरने छलाह। पहिल व्यक्ति फुरतीसँ चमचम करैत रहथि : दोसर गोटे कने गम्भीर बुझि पड़लाह। देखऽ सुनऽ में दुहू गोटे छलाह स्वस्थ ओ सुश्री। पहिल व्यक्तिक अवस्था लगभग २५—२३ वर्ष। दोसर गोटेक किञ्चित् न्यून।

हिनका लोकनिक कथासँ बुझना गेल जे साहेबी पोशाकवाला युवक पटना कालेजसँ अंगरेजी साहित्यमें एम० ए० पास कैलन्हि अछि। गते शुद्धमें सरकारी मोहकमाक एक पैघ हाकिमक जेष्ठा कन्यासँ बिवाह भेल छैन्ह। सम्प्रति आइ-सि-एस, आइ-पि इत्यादि परीक्षा बन्द भऽ गेलासँ हिनका दृष्टिमें शिक्षाक कोनो मूल्य नहिं थिक। दोसर गोटे सायन्स कालेजमें रसायन शास्त्रक अन्तिम वार्षिकमें अध्ययन कऽ रहल छथि। एखनो अविवाहित छथि ; किन्तु कएकटा पैघ-पैघ कथा उपस्थित छैन्ह। हम वचन-बद्ध छी जे हिनका लोकनिक नाम प्रकाशित नहिं करबैन्ह। तैं दुइटा कल्पित नामक रचना करऽ पड़ैछ। साहेब महोदयक नाम भेल रमाकान्त ओ हुनक संगीक नाम हरिकान्त। हिनका लोकनिक कथा-वार्त्ता एतेक मनोरञ्जक भऽ उठल जे यद्यपि हम पुस्तक पढ़बाक स्वाँग करैत रहलहुँ, तथापि कान दुहू उम्हरे रहल।

[२]

रमाकान्त कहलथिन्ह, 'अव्यावहारिक लोककें पटना किंवा सायन्स कालेजमें अध्यापक किएक नियुक्त कैल जाइत छैक,

हमरा बुझनामें नहिं अबैछ। फर्स्ट क्लास एम० ए० चाही ! फर्स्ट क्लास एम० ए० चाही !! इम्हर दू-तीन सालसँ त देखैत छी फर्स्टे फर्स्ट क्लास आबि रहल छथि। किंतु हिनका लोकनिकें बझक घोड़े बुझऽ। आ' सबसँ बाढ़ि विद्रूपक बात जे ई लोकनि सूट पहिरि कऽ कालेज अबैत छथि। सूट पहिरब की मामूली बात छैक ? सूटमें दुइएटा होइत छैक—राजा किंवा विदूषक। हम त तारीफ करब अमुक कालेजक नवीन अध्यापक लोकनिक। किछुए दिन सूट पहिरलाक बाद हिनका लोकनिकें बुझि पड़लैन्ह जे सूट पहिरला पर ओ लोकनि केवल मदारीक रूपमें परिवर्त्तित भऽ जाइत छथि। सुबुद्धि भेलैन्ह। धोती-कुरता, अचकन-पायजामामें कालेज जाय लगलाह। आ' पटना कालेजक विदूषक सभकें देखऽ ! एहिसँ बाढ़ि विद्रूप आर की भऽ सकैछ ? सूट पहिरक हेतु बहुत अध्ययन ओ अभ्यासक आवश्यकता छैक। अमुक प्रोफेसरकें देखऽ। हुनक परिधानमें केहन सामञ्जस्य रहैत अछि ? मेघौन दिनक सूट, रौदक सूट, सन्ध्याक सूट, डिनर टेबुलक सूट ! ऋतु अनुयायी कपड़ा ओ रंग ! कालानुयायी कट !!"

"किन्तु सूटे धरि पहिरऽ अबैत छैन्ह। ऊपर क्लासमें पढ़ैबाक योग्यता छैन्ह साढ़े बाइस ! नहिं त एकातमें कन्छिया कऽ पड़ल रहैत छथि किएक ?" हरिकान्त प्रतिवाद कैलथिन्ह।

"तों योग्यताक अर्थ की बुझैत छहौक ? पुस्तक रटि कऽ फर्स्ट क्लास लेब ? किन्तु एहन लोककें संसारमें कतहु जगहो

भेटतैक ?´ अमुक विभागक अध्यक्ष त थर्डे क्लास अछि ; किन्तु कोन विश्वविद्यालयसँ व्याख्यान देमऽ लेल ओकरा निमन्त्रण नहिं अबैत छैक ? आ' अमुक प्रोफेसरकें देखऽ। विलायतक डिगरी रहने की हैतैक ? धोती पर सँ पतलून कसि लति अछि ! आ' हाले एकटा उकठाह विद्यार्थी खूटी पर टाँगल ओकर कोटसँ चुनौटी बहार कए ओकर प्रहसन कैने छल। आ' फलाँ बाबू ? ओ त हमरा लोकनिक नाक कटा देताह। एक मास पहिने हम हुनका अमुक साहेबसँ परिचय करएबा लेल लऽ गेल छलिऐन्हि। दैवात् साहेबक पत्नी सेहो उपस्थित छलीह। हुनकोसँ हिनका परिचय करैबाक मौका भेटल। हिनकासँ दू-एक गोट सामान्य परिचय-पातक प्रश्न पुछलकैन्ह। प्रत्येक बेर उत्तरक संग-संग कहलथिन्ह, "Yes sir ; Yes sir". मेमक आकृति पर किञ्चित् मुस्कान देखल। शिष्टाचारक रीतिए तखने हुनकासँ बाहर एबाक अनुमति लेल। हिनका कहलिऐन्ह, दुर्जी, अहाँ सब ठाम 'सरसरा'इए दैत छिऐक ? साहेब-मेममें किछु अन्तर नहिं बुझि पड़ैछ ? डेरा पर त अहांकें एनेक हास्य-कवित्त फुरैत अछि। किन्तु बेर पर सरस्वती कत चल जाइत छथि ? मानि लिअ ओ साहेब एक पैघ पोस्ट पर अछि ; किन्तु अहूं त एक प्रतिष्ठित पोस्ट पर कालेजमें अध्यापक छी ? ओ दू हजार वेतन पबैत अछि आ' अहां दुइए सै। किन्तु तैं की ? ओकर मातहद त अहां नहिंए छिऐक ? ओकरा 'Sir' कहि किए सम्बोधन करैत छलिऐक ? मने-मने की

बुझने हैत ? कोनो जबाब नहिं फुरलैन्ह। गोङिया कऽ रहि गेलाह।"

"त तोहर विचार जे जकरा अंगरेजी ढंगक लेबास नहिं पहिरऽ अबैत छैक, ओकरा पटना कालेजमें स्थान नहिं भेटैक ?" हरिकान्त फेर प्रतिवाद कैलथिन्ह।

"हँ, त आओर की ? एहन लोकक हेतु स्थान छैक मुफस्सिल कालेज जहाँ सूट-बूटक चालि बहुत कम छैक। आर यदि छैको त लोक मोट चालिक अछि। त्रुटि नहिं पकड़ाइत छैक। आ' एहन लोक यदि पटना किंवा सायंस कालेजक हेतु अत्याज्ये होथि त हिनका लोकनिकें नियुक्तिक पश्चात लेबास-पोशाक, कथा-वार्त्ता, चलब-फिरब, मुद्रा-दोष-निवारण आदिक शिक्षा कम सँ कम दू मास धरि देल जाएन्ह ओ एहि विषयक परीक्षाक अनन्तर हुनका लोकनिकें क्लास लेबाक अनुमति भेटैन्ह। नहिं त कालेज चिड़ियाखाना भऽ जाएत ! आ' तोहर कालेज त अतिशीघ्रे जहाँ बेजोड़ Exhibits (दर्शनीय पात्र) सभ जुटल छथि।"

अपन कालेजक प्रति एहन कटु उक्ति हरिकान्तकें बरदास्त नहिं भेलैन्ह। कहलथिन्ह, "सरासर जबरदस्तीक त कोनो कथे नहिं हो ; किन्तु असलमें Exhibits सभ आर्ट्सं कालेजमें तोरा भेटथुन्ह। विज्ञानक साधारणो विद्यार्थी अव्यावहारिक नहिं होइछ। ओकर सभ विषय प्रैक्टिकले होइत छैक।"

रमाकान्त अत्यन्त आवेशसँ उत्तर देलथिन्ह, "तैं बुझि

पड़ैछ तोरा कालेजक कएकटा प्रोफेसर Theoretical एवं Practical दुहूकें अपनेमें चरितार्थ करैत छथि ?"

हरिकान्त हुनक आशय नहि बुझि प्रश्नसूचक भंगीसँ हुनका दिस तकलन्हि। "अमुक बाबूकें एक फूट नाम टीकी छैन्ह। से प्रायः मैगनेटिक पोलक काज करैत हैतैन्ह ? आर अमुक बाबू जे Hop, Step ओ Jump करैत चलैत छथि, एहि प्रैक्टिकल दृष्टान्तसँ त हुनका क्लासमें बानर ओ मनुष्यक सम्बन्धक व्याख्या करऽ में कोनो कठिनाई नहिं होइत हैतैन्ह ?"

प्रोफेसरसँ होइत गप्प विद्यार्थी पर आएल।

रमाकान्त कहलथिन्ह, "अमुक प्रान्तक विद्यार्थी त बूड़ि होइतहि अछि, ओहूमें अमुक ग्रामक विद्यार्थीकें त शिरोमणिए बुझबाक चाही। मुफस्सिल कालेज होइतहु ई सभ पटना किएक अबैछ आश्चर्य !"

"तों देशक विद्यार्थीक बड्ड कुचेष्टा करैत छहोक। दोसर दोसर प्रान्तसँ त एहन एहन भुसकौल विद्यार्थी अबैछ जकर हास्यास्पद काजक जोड़ा भेटब कठिन। देशक विद्यार्थीक एहन कोनो दृष्टान्त त हमरा देखनामें नहिं आएल अछि ?" हरिकान्त प्रतिवाद कैलथिन्ह।

"दृष्टान्त ! ५०) टाकाक बाजी राखऽ। गत वर्ष दिसम्बर मासमें बी० एन० कालेजक होस्टलमें तीनटा विद्यार्थी जे काण्ड कैने छल से त आब क्लासिकल दृष्टान्त कहल जा सकैछ।"

हरिकान्त उत्सुकतासँ रमाकान्तक दिस तकलन्हि। "लगभग

८ बजे रातिमें एक दिन जखन बहुत वृष्टि होइत छलैक, अकस्मात् बिजलीक कनेक्शन कटि गेलैक आ' समस्त होस्टल अन्धकारमय भऽ गेल। उक्त तीनू विद्यार्थी बी० एन० कालेजक दछिनबरिया होस्टलमें तीन सीटवाला कोठरीमें रहैत छल। एक भागलपुरिया पड़ोसी कहलकैन्ह, "देखते क्या हैं ? स्पिरिट जलाकर गरम किये बिना स्टोव कभी जला है ? बल्ब ठंढक लगनेसे बुत गया है। दियासलाई बालकर इसे गरम कीजिये। दो मिनटमें बल जायगा।" बस, लगलाह बूड़ि सभ दियासलाइक काठी जराबऽ। दू बाकस दियासलाई समाप्त भेला पर एगोटे बजलाह, 'हौ बाबू, ई बत्ती त एकदम सरदिया गेल छैक। आइ बुझि पड़ैछ किछु नहिं सुनतौह'। इति मध्ये पचासो विद्यार्थी ई अभूतपूर्व दृश्य देखबा लेल बरण्डा पर उपस्थित भए गेल छल। आब कहऽ ?"

हरिकान्तक मुखाकृति एहन सन भेल जे हुनका एहि कथा पर विश्वास नहिं भेलैन्ह।

"You don't believe this ?" (तोरा एहि कथा पर विश्वास नहिं होइत छौह ?)

रमाकान्त बाबूक मुँह लाल भऽ गेलैन्ह। भट दए नोटबुकसँ एक पन्ना फाड़ि फाउन्टेनपेनसँ किछु लिखलन्हि आ' कहलथिन्ह, "You will certainly believe prof. Mishra who was an eye-witness to this scene ?" (प्रोफेसर मिश्रजीक कथा पर त तोरा अवश्ये विश्वास हैतौह ? ओ साक्षात् ई दृश्य देखने छलाह।)

हरिकान्त किछु नहिं बजलाह; किन्तु मुखाकृतिसँ देखौलन्हि जे प्रोफेसर मिश्रजीमें हुनका पूर्ण विश्वास छैन्ह।

"Then here you are" कहैत रमाकान्त पढ़लन्हि, "Prof. Mishra, Kadamkuan, Patna.

Please confirm bulb-lighting scene last December Saligram bloc aaa A friend doubting aaa kindly excuse trouble aaa wire

Ramakant
C/o Post Master"

(गत दिसम्बर मासमें शालिग्राम ब्लॉकमें बिजलीक बल्ब लेसैक जे दृश्य भेल छलैक से सत्य की मिथ्या कृपया तार द्वारा सूचित कैल जाय। हमर एक मित्रकें विश्वास नहिं होइत छैन्ह। कष्ट देबाक हेतु क्षमाप्रार्थी छी।)

"This is pre-paid express and here is the money. But remember this is a bet for Rs. 50". (इ जबाबी एक्सप्रेस तार ओ टाका लैह। किन्तु स्मरण राख जे ई बाजी ५०) टाकाक थिक।) कहैत तारक चिट ओ एकटा दसटकिया नोट तपाकसँ हरिकान्तक सामने टेबुल पर राखि देलथिन्ह।

किन्तु हरिकान्त तारघर दिस जैबाक कोनो उपक्रम नहिं कैलन्हि। आस्ते आस्ते बजलाह, "एखन पूजाक छुट्टी छैक। मिश्रजी पटनामें थोड़े बैसल होएताह तारक जबाब पठावऽ लेल?"

"Do I mind a few chips if no reply comes?" (यदि जबाब नहिं आओत त दू चारि टाकाक हेतु हमर की हैत? रमाकान्त कने गरमा कए बजलाह।)

"अच्छा, तोरे बात मानल। आर्ट्सक विद्यार्थी एहन काज कदाचित् करिओ सकैत अछि। किन्तु सायंसक विद्यार्थी एहन अपटु नहिं होइछ।" हरिकान्त कहलथिन्ह, "By jove, what do you talk? At times Science students do most funny things". (तों की कहैत छह? विज्ञानक विद्यार्थी त कखनो कखनो महा हास्यास्पद काज करैछ।) रमाकान्त तमतमाइत बजलाह। मुँहसँ केवल अंगरेजिए बहराइत छलैन्ह। किन्तु हम हुनक कथाक आशय भाषेमें देब। नहि त एहि गल्पक रूपान्तरे भऽ जाएत।

"किन्तु हमरा कालेजक कोनो विद्यार्थीक दृष्टान्त दऽ सकैत छह जे हास्यास्पद काज कैने हो?" हरिकान्त पुछलथिन्ह।

"हा-हा-हा-हा! कतेक टाकाक बाजी रखबह?"

रमाकान्त जोरसँ हँसैत टेबुल पर हाथ पटकलन्हि।

"नीलकण्ठ बाबूक नामसँ त अवश्ये परिचित छ? तेसर साल एम० एस-सी०में गणितमें प्रथम स्थान प्राप्त कैने छलाह। एक दिन संयोगवश हुनका संगे जखन प्रोफेसर सेनक ओहि ठाम कोनो कार्यवश गेल रही त प्रोफेसर साहेब वासन्ती पूजाक दिन खैबाक निमन्त्रण देलन्हि। प्रोफेसर साहेब ओ हम दुहू गोटे जखन पात पर बैसलहुँ त हुनक कन्या कल्पना—जे एहि बेर

आइ० ए० में द्वितीय स्थान प्राप्त कैने छथि—परिवेशन करऽ लगलीह। नीलकण्ठ भानसघरसँ सटले बैसल छलाह। हुनके पातसँ शुरू कैलन्हि। हिनका पात पर पुलावक टाल लागल जाइत अछि आ' ई एकदम चुप! उम्हर देखल, कल्पना मुस्कुरा रहल छथि। नीलकण्ठ खोराकी छथि से हमरा ज्ञात छल। मेसमें भोजक दिन हुनक असाधारण प्रदर्शनक ख्याति दोसरो-दोसरो होस्टल धरि पहुँचि गेल छल। किन्तु एहू अवसर पर अपन ख्यातिक रक्षा करताह तकर आशा नहि कैने छलहुँ। विचारलहुँ, भोजके हेतु आइ व्रत कैने छल की? परातक लगभग समस्त पुलाव जखन हिनका पात पर पड़ि गेलैन्ह त गम्भीर स्वरमें बजलाह, "आर निच्छि ना मशाई।" कल्पना परातक अवशिष्ट पुलाव हिनके पात पर उझिल कऽ हँसैत पड़ैलीह। भानसक घरसँ प्रोफेसर साहेबकें कहलथिन्ह, "आर आमि आस्चि ना बाबा।" अबैत काल नीलकण्ठ कहलन्हि, हौ, की कहिऔह? हम विचारलौं जेहन देश, तेहन भेष। बँगालीकें बँगलेमें उत्तर देबाक चाही। किन्तु ओहि कन्याकें सम्बोधन करबाक उपयुक्त बँगला पर्याय यावत् सोचिते रही कि पात पर पुलावक टाल लगा देलक!" हरिकान्तक दिस गर्वसँ तकैत रमाकान्त कहलथिन्ह, "आब कहऽ?"

घड़ी देखल। ट्रेनमें एखनो पौन घण्टाक देरी छलैक। आँखि धोएबाक उद्देश्यसँ बाथ रूममें गेलहुँ। नलमें जल नदारत! हँ, जलसँ भरल एक बधना टेबुल पर राखल छलैक।

किन्तु एहन गन्दा जे स्पर्शो करऽ में घृणा भेल। जलक टब देवारसँ ओङठा कऽ ठाढ़ कैल छलैक। एक कोनमें राखल लोहाक पातर तिपाइवाला अश्रद्ध सन देखैत एक पुरान कमोडो पर नजरि पड़ल। हिन्दू-तीर्थक वेटिंग रूममें अंगरेजी सभ्यताक ई स्वाँग सम्भव आस्तिक यात्री लोकनिकें आधुनिक सभ्यता सिखैबाक उद्देश्यसँ कैल गेल हो। बिनु मुँह-आँखि धोएनहि बाहर ऐलहुँ। देखल दुहू गोटे वाद-विवाद करिते छथि।

हरिकान्त कहैत छथिन्ह, "किन्तु मिन्टो होस्टलक कनकट्टा विद्यार्थीक रेकर्ड तोड़ऽ में सायन्स कालेजक विद्यार्थीकें बहुत समय लगतैक।"

रमाकान्त तीक्ष्ण दृष्टिसँ हरिकान्तक दिस तकलन्हि।

हरिकान्त कहलथिन्ह, "ओहि दिन कवेण्डिश हाउसक वार्षिकोत्सवमें एगोट पुरान विद्यार्थी अपन संस्मरण दैत हमरा सभकें कहलन्हि जे मिण्टो होस्टलमें केश कटैत काल एकटा हजाम असावधानीसँ कोनो विद्यार्थीक एक कानक किञ्चित् अंश कैंचीसँ काटि देने छलैक। जखन ओ विद्यार्थी कानक काटल टुकड़ी लऽक सुपरिंटेंडेंट शास्त्रीजोक ओहिठाम नालिश करऽ गेल त मूर्ख, बुद्धू इत्यादि कहि सुपरिंटेंडेंट फटकारि देलथिन्ह।"

"मिण्टो होस्टलक विद्यार्थी एहन बेकूफी कथमपि नहि कय सकैछ" कहैत रमाकान्त बाथरूममें चल गेलाह।

[३]

"हौ, सूति रहलह की ?" बाथरूमक केवाड़ खटखटबैत हरिकान्त जिज्ञासा कैलथिन्ह ।

घड़ी देखला पर ज्ञात भेल रमाकान्त लगभग १५ मिनटसँ अन्दरे छथि ।

कोनो उत्तर नहिं ।

"आबो बहरैबह की ?" द्विगुण जोरसँ हरिकान्त केवाड़ पर धक्का देलन्हि ।

"हौ, बाहर ऐबा जोग नहिं छी ।" एक क्षीण, कातर स्वर अन्दरसँ आएल। आश्चर्य भेल। की ई स्वर रमाकान्तजीक थिक ? एहिमें त आत्म-विश्वासक कनेको आभास नहिं देखैत छी ? आर अंगरेजीक तोड़ कतय गेल ?"

बाथरूमक केवाड़ किञ्चित् खुजल। रमाकान्त जहिना अपन माथ कनेक बाहर करैत छथि कि एक नवयुवक माड़वारी बाहरसँ आबि ओहि दिस बढ़ल। केयास कैल जे ओ एक बेर आओर आबि कऽ घूरि गेल छल। केवाड़ विद्युत्-वेगसँ खटाङ शब्द कए बन्द भऽ गेल। रमाकान्तक आकृतिसँ बुझि पड़ल जेना कोनो गुरुतर अपराध कैने होथि।

"यह कौन आदमी घंटे भरसे बाथरूममें बैठा है ?" कुपत होइत माड़वारी युवक बाजल।

हरिकान्त टनकि कऽ जवाब देलथिन्ह, "क्यों साहब ? सेकेण्ड क्लास का मुसाफिर है।"

"ठीक है। लेकिन पाखाना सोने की जगह नहीं है", कहैत ओ बाहर चल गेल।

"तों खुलासा त किछु कहिते नहिं छह। कलमें जल नहिं छैक की ?" केवाड़क लग जाए हरिकान्त पुछलथिन्ह।

केवाड़क किञ्चित् अंश फेर खुजल। रमाकान्तक दुहू आँखि छलैन्ह करुण ; किन्तु चौकस। भाव एहन सन जे फेर केओ बाथरूमक दिस त नहिं अबैत अछि ? ओ आस्ते-आस्ते हरिकान्त बाबूकें किछु कहलथिन्ह।

"तोरा हम कपड़ा कतसँ दियौह ? कहैछह एकटा कोनो कपड़ा अवश्ये चाही। यदि कहऽ त अपन पायजामा खोलि कऽ दऽ दिऔह ?"

रमाकान्तक असहाय दृष्टि आओरो करुण भऽ गेल।

"अच्छा, कुंजी देह। बग्गी किराया कय डेरासँ तोहर कपड़ा आनि दैत छियौह। तावत तों एहीमें रहऽ।" हरिकान्त आश्वासन देलथिन्ह।

"कुञ्जीक झब्बा त खसि पड़लैक अछि !"

हरिकान्त हुलकी मारि कऽ भीतर देखलन्हि। छि: छि: कहि थूक फेकैत तैखन पाछू हटि गेलाह।

रहस्य बुझबामें कोनो भाङठ नहिं रहल। रमाकान्तक बाथ-रूममें गेलाक करीब ५-६ मिनटक बाद हड़ाङ जकां शब्द भेल छल। परिस्थितिक किञ्चित् आभास भेटल। कमोड परसँ

उतरैत काल पैर लड़खड़ा गेल हैतैन्ह। खसलाह होएत ओ ऊपरसँ भरल कमोडो उनटि गेल हैतैन्ह।

ओही समयमें वेटिंग रूमक दरवाजाक सामनेसँ रेलवेक एकटा बाबू चल जाइत छल। हरिकान्त ओकरा पर तड़तड़ा कऽ बम बरिसौलन्हि, "नलमें पानी नहीं! टबमें पानी नहीं!! जगमें पानी नहीं!! वेटिंग रूम है या मजाक?"

"साहेब, पम्प टूट गिआ है। इस वास्ते टन्कीमें पानी उठने नेइ श-अ-क्ता है। (दोसर दिस तकैत) ओ काल्लू, एखाने एकटू जल दिए जास" कहैत बंगाली बाबू आगां बढ़बाक उपक्रम कैलक।

पानी पाँड़ेक स्टेशन पर कतहु पता नहिं छल। "यही है आपलोगोंकी Efficiency? Dirty वेटिंग रूम। Nasty बाथरूम। कहाँ है Complaint Book?" हरिकान्त तमातमा कऽ बजलाह।

"कोम्पनी फरनीचर नेइ देनेसे हम कहाँ से देने श-अ-क्ता है बाबू? आर बाथरूम परिस्कार नेइ रहने से हम आभी काल्लूको जरिमाना करेगा" कहैत ओ तखने वेटिंग रूमक दिश बढ़ल। भीतर पैर दैत अछि कि केवाड़ जे कने खुजल छल, फेर खटाङसँ बन्द भऽ गेल।

"जरा, ठहरिये। बाथरूममें एक आदमी गये हुए हैं।" हरिकान्त हाथ उठाकऽ स्टेशन बाबूकें वारण कैलथिन्ह।

इति मध्ये मेहतरो उपस्थित भेल। ओकरा वेटिंग रूम साफ

करैक हेदायत करैत ओ बाबू चल गेल। किन्तु पानी-पाँड़ेक एखनो कतहु पता नहिं छल।

"हौ, कनेक कागत दैह। हम कुंजी पोछि कए तोरा दैत छियौह। डेरासँ जल्दी हमर कपड़ा आनि दैह नहिं त अनर्थ भऽ जाएत।" अत्यन्त कातर स्वर बाथरूमसँ बाहर भेल।

"सभसँ बाढ़ि टहलेल तों हमरे बुझैत छह जे ओ कुंजी हम हाथमें लिअ? तोरा के कहने छलौह कमोड पर बैसऽ के? देशी मुरगी, विलायती बोल। की एको दू घंटा नहिं रोकि सकैत छलह?" हरिकान्त खौंझा कऽ कहलथिन्ह।

"जे भेलैक से भेलैक। आब त जल्दी कोनो उपाय करह। किछुए कालमें ओ लोकनि पहुँचि जैतीह। तों त ककरो चिन्हिते नहिं छहौक। डेराक पतो हम नहिं देने छिऐन्ह। सोझे तार देने छलिऐन्ह जे स्टेशन पर आबि कय लऽ जाएब।" अत्यन्त अनुनयक स्वरमें रमाकान्त केवाड़क आड़सँ बजलाह। मुँहपर भयक छाप स्पष्ट छलैन्ह। भाव एहन सन जे बाथरूमक दिश केओ अबैत अछि त ने?

बाथरूमक केवाड़ फेर खटाङसँ बन्द भऽ गेल। लगले सुनल, "बम बैजनाथ!" मुँहक सामनेसँ अखबार हटा कऽ देखल एक पंडाजी उपस्थित छथि। हरिकान्तसँ जिज्ञासा करैत छथिन्ह जे कोन जिला घर छैन्ह। हरिकान्त लोहछि कऽ दू-चारिटा कटु शब्द कहलथिन्ह जकर पुनरावृत्ति अनावश्यक। पण्डाजी कनेको विरक्त नहिं भेलाह। एहि तरहक भाव देखौलन्हि

जे एहन शब्द सुनबामें त ओ अभ्यस्ते छथि । पण्डाजीक गेलाक पश्चात् रमाकान्त अत्यन्त व्यग्र स्वरमें कहलथिन्ह, "भाइ हरिकान्त, हमर कोनो उपाय जल्दी करह । ई वेटिंग रूम इन्टरोक मोसाफिरक हेतु छैक । गाड़ीक समय आब बहुत करीब भऽ गेल छैक । लोक गिलासँ हमर दुर्गति भऽ जाएत ।"

"हम कोन उपाय करू ? बिनु परमिटे त धोतिओ चादर नहिं भेटतैक । चोरा बाजार कतय छैक सेहो हमरा ज्ञात नहिं अछि । आब त समयो नहिं छैक ।" हरिकान्त अपन अक्षमता देखबैत बजलाह ।

"भाइ, एक काज करह । तों जंघिया ओ गंजी पहिरि कऽ रह । अपन पायजामा ओ कुरता हमरा देह । हम हुनका लोकनिकें डेरा पहुँचा कऽ तोरा लऽ जैबो तावत तों वेटिंगे रूममें रह ।" गिड़गिड़ा कऽ रमाकान्त निवेदन कैलन्हि ।

हरिकान्त अपन कुरताक बुटाम खोलऽ लगलाह । सायन्स कालेज पर पटना कालेजक विजय बरदास्त नहिं भेल । दुहू गोटेकें लक्ष्य कय कहलन्हिन्ह, "Gentlemen, Please excuse me. You are no good in crisis." (अहां लोकनि विपत्तिमें कोनो काजक नहिं छी ।)

एकटा तहदर्ज धोती ओ सिल्कक कुरता सूटकेससँ बहार कए देलिऐन्ह । कहलिऐन्ह किउलक स्टेशन मास्टरक आफिसमें छोड़ि देब । हमरा भेटि जाएत । झोलासँ लोटो बहार कऽ

दैत मुसलमान लोकनिक हेतु तिकठी पर राखल जलक मटकाक दिस संकेतो कऽ देलिऐन्ह ।

वैद्यनाथधाम रेलवे स्टेशन पर हिन्दूक अतिरिक्त अन्यान्य जातिक लोक कम्मे उतरैत छथि । अतः मुसलमानी मटकामें जल बासी बरु हो, किन्तु मटका भरले रहैछ ।

लोटा अधसेरीक अन्दाज छलैक । हरिकान्त घैलसँ भरि भरि लाबऽ लगलाह । चारि-पांच बेर लाबि लोहछि कऽ बजलाह, "Hopeless ! के तोरा ई कर्म करऽ कहने छलौह ? बड्ड घिनावन छह !"

हम हुनका कहलिऐन्ह, "जनाब, घड़ा योंही पड़ा है । उठाकर अन्दर दे दीजिये ।"

लगभग ६-७ मिनटक पश्चात् देशी लेबासमें रमाकान्त बाहर भेलाह ।

"एहन बढ़ियाँ कपड़ा आब भेटब असम्भव ! चारि माससँ कलकत्ताक आर्मी एण्ड नेवी स्टोरमें ऑडर रिजर्व करौने छलहुँ त कतहु भेटल छल ।" रमाकान्त अपन दुःखक उद्गार प्रगट कैलन्हि ।

एतबहिमें मेहतर पहुँचल । भीतर गेल । रमाकान्त कने ऐस-तैससँ कहलथिन्ह, "कहाँ चला जाता है ? रेलवेसे मुफ्त पैसे ले रहा है ? इन कपड़ों को जल्दी धो डालो ।"

ओ कहलकैन्ह जे ई ओकर काज नहिं छैक । ओ सरकारी मोसहारा पबैत अछि केवल बाथरूमक सफाइक वास्ते । हँ, यदि

१५) टाका बकसीस भेटैक त दूरि भेल कपड़ा सभ खीचि सकैत अछि। ओकर आन्तरिक इच्छा छलैक जे बाबू लोकनि ई सभ कपड़ा छोड़ि कऽ चल जाथि आर पाछाँ ओ धोकऽ घर लऽ जाय। तैं ओ अगधाएल जकां बजैत छल। पश्चात् दुहू पार्टीमें बतकही होमऽ लागल। रमाकान्त बाबू ५) टाका तक ऐलाह। किन्तु मेहतरबा १०) सँ नीचा हेठे नहिं होइत छल। हरिकान्त ओकरासँ विवाद करऽ लगलाह। कहलथिन्ह, "कैंचाक चिरई, नौ कैंचाक मसल्ला? १०-१५) टाकाक त वस्तुए छैक आ ओहीमें तोरा १०) बकसीस चाही?" किन्तु मेहतरबा खूब बुझैत छल जे दूरि भेल वस्त्र कतेक बहुमूल्य थिकैक। कन्ट्रोल आफिसमें दौड़ैत दौड़ैत ओकर एँड़ी खिया जैतैक तइयो मारकिनोक परमिट नहिंए भेटतैक। ओ टरि कऽ बाहर चल गेल। हरिकान्त ओकरा शोर पाड़लथिन्ह, "इम्हर आबह। एकतरफ डिगरी नहिं होए। एहो किछु आगां बढ़ैत छथि, तहूँ किछु हेठ होअऽ।" किन्तु मेहतरबा नहिं डोलल।

हम देखल, दोसर crisis उपस्थित अछि। रमाकान्तकें कहलिऐन्ह, स्वयं गान्धीजी जखन अपना हाथसँ पैखाना साफ कैने छथि ओ आवश्यकता पड़ला पर एखनो कऽ सकैत छथि त आन लोकक कोन कथा? जूता धोकऽ पहिरि लिअ। आ' कपड़ा सभकें अखबारमें लपटा लिअ। डेरा पर जाऽक धोआऽ लेब।

एही बीचमें घंटी पड़ल। जैसीडिहसँ गाड़ी छोड़ने छलैक। हम अजुका अखबार रमाकान्तकें दऽ देलिऐन्ह।

मेहतरबा देखलक जे आब अन्धेर भऽ रहल अछि। दौड़ल। "अच्छा, बाबू साते टो रुपया दीजिये।"

दोसरे मुहूर्त्तमें ५) पर आएल। रमाकान्त जहिना बाथरूमक दिस बढ़लाह कि लगले ३) पर उतरल ओ हुनका घरमें पैसैत पैसैत २) पर राजी भऽ गेल। रमाकान्त ओकरा दू-चारिटा अवाच्यो कहलथिन्ह। किन्तु ओ एहन सन क्रम बनौलक जे किछु सुनबे नहिं कैलक।

रमाकान्त दूरि भेल कपड़ा सभ अखबारमें लपेटऽ लगलाह। आब मेहतरबाक धैर्य टूटि गेलैक। गर्द कय कहलकैन्ह जे पैघ लोक बनैत छथि। नदी फिरबाक अवगति छैन्हे नहिं। रमाकान्त विषक घोंट पीबि कऽ रहि गेलाह।

कृतज्ञताक भाव देखबैत हमरा कहलन्हि जे एहि ट्रेनसँ हुनक सासु, सारि ओ छोट सार आबि रहल छथिन्ह। सारिक हेतु कथा ठीक करबाक छैन्ह। हरिकान्तक दिस इशारा कैलन्हि। कहलन्हि जे घर पर कन्या देखैबाक रेवाज नहि रहलासँ कई प्रकारक कौशल करऽ पड़ैत छैक।

एतबहिमें प्लैटफार्म पर जन-समूहमें हड़बड़ शुरू भेल; ट्रेन इन भऽ रहल छलैक। कुली माथपर हमर लगेज उठौलक। ट्रेनक दिस बढ़लहुँ।

रमाकान्त ट्रेन लग पहिनहिं पहुँचि गेल छलाह। बामा हाथमें अखबारमें लपेटल दूरि भेल कपड़ाक बंडिल छलैन्ह। हरिकान्त हुनकासँ कने हटि कऽ ठाढ़ छलाह।

"ओझा, अहाँ त चिन्हैबे नहिं करै छी! धोती, कुरता कहियासँ पहिरऽ लगलहुँ ?"

एक कन्या सेकेण्ड क्लास कम्पार्टमेंटसँ अत्यन्त चपलतासँ उतरि जिज्ञासा करैत रमाकान्तक दहिना हाथ पकड़ि लेलथिन्ह।

रमाकान्त कोनो जबाब नहिं देलथिन्ह। देखलिऐन्ह, प्रसन्नताक भाव प्रगट करऽ चाहैत छथि; किन्तु प्रयास व्यर्थ होइत छैन्ह।

कन्याक अवस्था पन्द्रह वर्षक लगभग बुझि पड़ैछ। ओहन सुन्दरी त नहिं छथि, किन्तु भेष-भूषा वेश स्मार्ट छैन्ह। पाउडरक मात्रा मुँह पर कने वेशी पड़ि गेल छैन्ह नहिं त चेहरा आओर खुलितैन्ह।

"ओझा, हमर चीज लाएल छी त ?" कहि निचला अधर दाँतसँ कटैत शरारती दृष्टिसँ रमाकान्तक दिस तकलन्हि। बुझबामें भाङ्ठ नहिं रहल जे की लायक हेतु कहने छलथिन्ह।

हरिकान्त अन्यमनस्क भावसँ दोसरा दिस तकैत रहथि। क्रम एहन सन जे सेकेण्ड हैण्ड वस्तुमें हुनका कोनो उत्सुकता नहिं छैन्ह।

एतबहिमें रमाकान्तक हाथवाला बंडिल पर कन्याक नजरि पड़लैन्ह। झपटि कऽ रमाकान्तक हाथसँ लऽ लेलथिन्ह। विद्युत् वेगसँ अखबार फाड़ि कऽ बंडिल खोललन्हि।

"ए-ए-रा-आ-आ-म !" कहि दूरि भेल पतलून ओ कमीजकें रमाकान्तक मुँह पर फेंकि देलथिन्ह। फेर "छिः! छिः!! घिनावन कहांकेर" कहि अपन दुहू हाथकें रमाकान्तक सिल्कक कुरतामें खूब जोरसँ पोछऽ लगलीह।

हाय, हाय, हमर कुरताक ई दशा ? कतेक प्रयाससँ परमिट नेने छलहुँ। एको दिन पहिरबो नहिं कैल। मियांक दाढ़ी वाह-वाहमें ? किन्तु ककरा की कहितिऐक ?

कुमरमक भोज

[१]

वैशाख मासक टहटही इजोरिया राति। भुरुकबा उगऽ में वेशी विलम्ब नहिं छैक।

समागत जन-समुदायसँ एहन ध्वनि आबऽ लागल जे ऐखन बिजहो नहिं करौलासँ लोक उठि जाएत।

निशानाथ बाबू करबद्ध भए अत्यन्त नम्रतासँ जन-समुदायक समक्ष निवेदन कैलन्हि, "ई सातम वेर बिजहो पठौने छी। भानस-भात त दस बजेसँ तूल अछि।"

एतबहिमें चुम्मन झा बिजोहिया घूमि कऽ ऐलाह। कहल-थिन्ह, "मनफुल बाबू नदी दिससँ नहिं घुरलाह अछि। चक्रधर बाबूकें बड़का गामक पाहुनसँ शतरंजक बाजी एखनो चलि रहल छैन्ह। फरजी पकड़ा गेलैन्ह अछि। खिसिया कऽ कहलन्हि जे रातिमें लोककें तमनी-हरबाही करक छैक जे अगुताएल छथि?"

"त हमरा सभकें बिजहो कराउ। तीन घंटासँ बैसल-बैसल पैर अगिया गेल।" चतुर्भुज बाबू तीव्र स्वरमें बजलाह। संगे संग दस पाँच गोट नवयुवक सेहो समर्थन कैलथिन्ह। इम्हर भगिन-मान फुच्चो मिसर तड़कि कऽ कहलथिन्ह, "निशा बाबू, अहाँकें सावधान कय दैत छी। भैयारीमें आइ धरि सभ गोटे एके बेर बैस कऽ खाइत ऐलाह अछि। एहिमें व्यतिरेक भेलासँ अहाँ कौड़ीक तीन भऽ जाएब।" निशानाथ बाबू न ययौ न तस्थौक भावे मूर्तिवत् ठाढ़े रहलाह।

चन्द्रशेखर बाबूकें नहिं रहि भेलैन्ह। फुच्चो मिसरकें लक्ष्य कय बजलाह, "दू चारि गोटेक मनमानीक हेतु गामक सभ लोक पिसिमाल नहिं भऽ सकैछ। अत्याचारोक सीमा छैक! एहि ठाम लोक चारि घंटासँ वैसल अछि। निशा काका, खोएबाक हो त हमरा ऐखन बिजहो कराउ, नहिं त हम चललौं।"

फुच्चो मिसरक भातिज प्रतिवाद कैलथिन्ह, "भावत सब भाई उपस्थित नहिं होएताह, बिजहो नहिं भऽ सकैछ। सनातनसँ चल अबैत परम्पराक उपेक्षा कैलासँ हमरा सब उठि जाएब।"

एहि त्वञ्चाहञ्चमें छोट छोट बालक सभ जे सुतल छल, धड़फड़ा कऽ उठल।

निशानाथ बाबू निस्सहाय भावसँ ज्यौतिषी काकाक दिस तकलन्हि। काका नवयुवक सभकें शान्त करैक उद्देश्यसँ कहल-थिन्ह, "तों सभ आइ जनमि कऽ ठाढ़ भेल छह। हम भैयारीक भोज-भात आइ चालीस वर्षसँ देखैत आएल छी। समाजमें

स्कूल, कालेजक बात नहिं चलैत छैक। एकर अपन नियम छैक।"

चन्द्रशेखर बीचेमें टोकि देलथिन्ह, "किन्तु एहन नियमक त कोनो अर्थ नहिं जे सैकड़ो लोककें विना कारण परेशान कैल जाय ? की शतरंजक बाजी काल्हि नहिं होइतैक ?"

चतुर्भुज बाबू समर्थन कैलथिन्ह, "हमरा सभकें गदहबेरमें खैबाक अभ्यास नहिं अछि। पण्डितजीक लेहाजसँ हमरा सभ चारि घंटासँ बैसल छी।"

फुच्चो मिसर बमकि कऽ बजलाह, "त पण्डितजीकें उचित छलैन्ह जे दोस्तियारेक तरहें खास खास व्यक्तिकें निमन्त्रण दितथिन्ह।"

एकटा अलगटेटा स्कूलिया विद्यार्थी बाजि देलकैक जे नौत्रो, खबास आव अपनाकें भैयारीमें गणना करैछ। फुच्चो मिसरकें बरदास्त नहिं भेलैन्ह। तड़ाकसँ कहलथिन्ह, "माय करथिन्ह कुटान-पिसान, पूतक नाम दुर्गादत्त ! भाई किरानी भेलथिन्ह अछि त बुझैत छथि जे हाटी परगनाक जमीन्दारी कीन लेलन्हि।"

"मारो बेहूदेको" कहैत ओ स्कूलिया फुच्चो मिसरक दिस लपकल। ज्यौतिषी काका हाँ हाँ करैत वारण कैलथिन्ह। मौजेलाल स्कूलियाकें नहिं धरितथिन्ह त अनर्थ भऽ जाइत।

इम्हर फुच्चो मिसर पड़ाइत तलमला कऽ जौड़खट्टा पर सूतल अकलू झा पर खसलाह। बुझि पड़ल, दहिना पैर कने

ममोड़ा गेलैन्ह। किन्तु क्रोधक आवेशमें शारीरिक कष्ट बिसरि तामसे थर-थर कँपैत कहलथिन्ह, "निशा बाबू, हमर पितामह अहाँ सभक जल लऽ·क लघिओ नहिं करितथि। हम पतित भेलहुँ जे एहि कुग्राममें अहाँ सभक ओहिठाम सम्बन्ध कैल। हम ब्राह्मण नहिं चमार जे अहाँक ओहिठाम आब जल ग्रहण करी" कहैत अपना घर दिस जैबा लेल पैर बढ़ौलन्हि।

निशानाथ बाबू हुनक बाट छेकैत हाथ जोड़ि कऽ अनुनयक स्वरमें कहलथिन्ह, "जे शास्ति देबक हो से दिअ ; किन्तु आइ एहन अकृपा जनु करी।"

ज्यौतिषी काका कहलथिन्ह, फुच्चो तों बैस। सभ बातक मीमांसा एखने भऽ जाइत छैक। तकरा पश्चात् लोक भोजन करत।"

बात-बतकही होइत होइत लगभग आध घंटा समय व्यतीत भेल। एही अवसर पर चुम्मन झा झटकैत आबि कऽ घोषणा कैलन्हि, "ओ लोकनि आबि रहल छथि।"

इम्हर अकलू झा सहसा अनुमान नहिं कऽ सकलाह जे ई हड़हड़ी वज्र कतयसँ खसल। भौचक्का भऽक एक मिनट धरि आँखि मिड़ैत ठाढ़े रहलाह। फेर पेट दबौलन्हि। फुच्चो मिसर अपन ठेहुनक बले हुनका पेट पर खसल छलाह। किन्तु एहि हूलिमें केओ हुनका दिस ध्यान नहिं देलक।

मनफुल बाबू ओ चक्रधर बाबू जखन अपन सिपाही,

खबास, हरवाह, चरवाह इत्यादि दल-बलक संग पहुँचलाह त लोक सभ आन्दोलित भऽ गेल।

चुम्मन झा विजोहिया जिज्ञासा कैलथिन्ह, "आब केओ छूटल त नहिं छी ?" केओ जबाब देलकैन्ह, "अर्जुन झा नदी दिस गेल छथि।" दोसर गोटे जबाब देलकैन्ह, "किशोरीलाल महिस फोअऽ गेल छलाह। नहिं फिरलाह अछि।" किन्तु हिनका दुहू गोटेक लेल केओ अपेक्षा नहिं कैलक। हुड़्ड़ भऽ गेलैक। लोक भेड़ियाधसान भऽक आङ्गन दिस बढ़ल। फुच्चो मिसर भलमानुस रहताह कि वर्णच्युत हैताह ताहि दिस ककरो ध्याने नहिं रहलैक।

[२]

पण्डित निशानाथ झा गामक डिही थिकाह। हुनक पितामह १०० बीघासँ ऊपर ब्रह्मोत्तरक उपार्जन कैने छलथिन्ह; किन्तु हुनक असामयिक मृत्युसँ धन-वित्त बिलटि गेलैन्ह। सम्प्रति बालक दरोगा बहाल भेल छथिन्ह। दायाद भाइ लोकनि नहिं मानलथिन्ह। कहलथिन्ह, "आब अहाँकें कोन बातक कमी अछि ? छोट बालकक उपनयन थिक। यैह टा काजे सम्प्रति अहाँक घरमें बांचल अछि। केवल अपने टोल लऽक निमहऽ नहिं देब। सातो टोलक भोज करऽ पड़त।"

पण्डितजी सकसकैलाह। हिसाब कैलन्हि। समस्त दायाद-भाइकें खोएबामें चाउर-चूड़ा मिला कऽ १८ मनक खर्च छलैन्ह। ताहि पर दही, घी, चीनी इत्यादि। तकरो ऊपर स्त्रीगणक

सीधा-उपाति। राड़-रोहिआ त रहिते छैक। विचारलन्हि, "एहि अकालमें कतयसँ ई सभ वस्तु आओत ? दू सालक दाही-जरतीसँ अपनो घरमें त फागुनेसँ बेसाह लागल अछि ? आर चीनी ? चोरा बाजारमें खरीद करऽ लेल टाका कहां पाबी ?"

किन्तु आङ्गनमें नहिं मानलथिन्ह। कहलथिन्ह जे उपस्थित काजक अतिरिक्त आर कोन यज्ञ-जाप घरमें अछि ? एहिमें शोभा-सुन्दर नहिं हैत त हमरा घरसँ कोनो प्रयोजन नहिं अछि। नैहर चल जाएब। माय कहलथिन्ह जे थोड़-बहुत लऽक निमहि जाह। अकाल-सुकालमें के भोज-भात करै अछि ? किन्तु आखिरी फैसलाक भार दरोगाजी पर छोड़ि देल गेल। जखन दरोगाजी गाम एलाह तावत समस्त गाममें गुलगा फैल गेल छल जे निशा बाबूक ओहिठाम सगदरका भोज भऽ रहल छैन्ह। दरोगाजी कहलथिन्ह, "बाबूजी, जे हो, जी जांतिकऽ ई भोज आब करही पड़त। एकर एतेक जनश्रुति भऽ गेल छैक जे नहिं कैलासँ बड़ अप्रतिष्ठा हैत।" निशा बाबू हुनका सावधान करैत कहलथिन्ह, "गामक लोक महा बेइज्जती थिक। कतबो खर्च करबह, यश नहिं देतौह। तखन तोहर जे इच्छा।"

[३]

पण्डितजीक घर विशेष पैघ नहिं छलैन्ह। आङ्गनो छलैन्ह तदनुसारे। दरवाजा छलैन्ह पैघ अवश्य; किन्तु बाहरमें दायाद-भाइ लोकनि कोना बैसथिन्ह ?

सम्प्रति उपस्थित लोक सभक संख्या ५०० सँ कम नहिं अछि। लोक तरा-उपरी भऽक मोड़ी पर पैर धो धो कऽ जकरा जहां जगह भेटलैक बैसल अछि। मोड़ीक निकास आङ्नसँ बाहर दिस बढ़िया जकां नहिं रहलासँ आङ्नमें पानि लागि गेल छैक, नहिं त आओर किछु लोक आसानीसँ बैसैत। जे सभ लोक पहिनेसँ बैसल बैसल अगुता गेल छल, अधिकांश वैह सभ रेड़में आगां बढ़ि नीक स्थान पर बैसल अछि। बाबू-भैया आर हुनक भगिनमान एवं लचाहक सभ एखन ओसारे पर ठाढ़ छथि।

"एहि ठाम बड्ड थाल भऽ गेल छैक। ओहि ठाम हमरा सभ बैसैत जाइ। चुल्हाक आगि त मिझाइये गेल हैतैक?" फुच्चो मिसर ज्यौतिपी काकाकें पुछलथिन्ह।

"हँ, हँ, ठीक कहैछ। निशा बाबू, चूल्हामें कने जल देआ दियौक।" काका कहलथिन्ह। मनफुल बाबू ओ चक्रधर बाबू सम्मतिसूचक इंगित कैलथिन्ह।

आगि कखन ने मिझा गेल छल; किन्तु चूल्हाक निकटवर्त्ती भूमि एखनो धिपले छलैक। जलसँ सिक्त कैल गेल। वैशाख मासक तपल भूमि। ओहि पर अग्नि-संस्कार। जल सन्न दऽ सोखि लेलकैक। तइयो ई लोकनि कसमकस भऽक चूल्हेक इर्द-गिर्द बैस गेलाह। चक्रधर बाबूकें नहि सहियारि भेलैन्ह। उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलाह। हुनक देखादेखी मनफुलो बाबू ठाढ़ भेलाह। ज्यौतिपी काका कहलथिन्ह, पैर तर पुरैनिक पात लऽ

लेल जाओ। पूर्ण जल देल गेल छैक। लगले ठंढा भऽ जैतैक।" किन्तु दुहू गोटे ठाढ़े रहलाह।

एतबहिमें दू गोट आरिक पहुँचल। जे गोटे बैसल छलाह, हुनका सभकें बिड़ी, पात दैत हिनका दुहू गोटेक मुँह ताक लागल। एगोटे मनफुल बाबूकें कहलकैन्ह, "भाइ साहेब, अपने ओसारा पर बैसल जाओ।" ओ चट दऽ ओंलक एक पल्ला हटबैत दुहू गोटेक हेतु बिड़ी, पात ओही ठाम धऽ देलकैन्ह। जगह बड्ड संकीर्ण छलैक; किन्तु मैयारीक विपय! मुँह भुकुआन कैने बैस गेलाह।

केसौर चाउरक भात विलम्ब भेलाक कारणे आओर फड़हड़ भऽ गेल छलैक। एकर सुवास समस्त आङ्नमें फैल गेल। गामक जे व्यक्ति एखन धरि समदरका भोज कैने छलाह, हुनका लोकनिकें नीक नहिं लगलैन्ह जे एक अदना व्यक्ति हुनका सभक चिर-सञ्चित प्रतिष्ठाकें डुबा दे।

ज्यौतिषी काका कहलथिन्ह, "चाउर त देखैत विलक्षण छैक; किन्तु लठिया गेलैक अछि।"

फुच्चो मिसर समुचित व्याख्या करैत बजलाह, "मामा, कलक चाउर! भात आर केहन हैतैक? सुनलिऐक अछि जे निरमल्लीक मिलमें सुंघनीक धुकनी दऽक चाउरकें गमगमा दैत छैक।"

अदौरी-भाँटा, सजमनि, कदीमा, आलू ओ कटहरक तरकारी; करैल ओ ओलक अचार; सजमनिक रतुआ ओ

आमक खटमिट्ठी एक-एक कऽ पात पर पड़ल। तखन राहड़िक दालि आएल। निशानाथ बाबूक भातिज घी परसैत जखन ज्यौतिषी काकाक लग ऐलाह त फुच्चो मिसर टोकि देलथिन्ह, 'कने ध्यान दऽक परसी।' बारिक नवीने विद्यार्थी छलाह। हुनक आशय बुझि काकाजीक पात पर चारि चम्मच घो दैत आगाँ बढ़ि गेलाह। ध्यान पर नहिं चढ़लैन्ह जे मिसरोजी विशिष्टे श्रेणीमें थिकाह।

दछिनबरिया ओसारासँ एगोटे वृद्ध बजलाह, "तखन आब नैवेद्य दैत जाउ।" पछबरिया घरसँ एगोटे चिचिया कऽ कहलथिन्ह, "लालजी मिसर भगवानक भोग लगौताह। दही, चीनी नहिं आएल छैन्ह।" एगोट बारिक भण्डार घरसँ दही, चीनी लाबक हेतु गेलाह। ककरो ध्याने नहिं छलैक जे लालजी मिसर सब भोजमें शालग्राम लऽक चलैत छथि।

यावत दही, चीनी अबिते अछि कि अंगरेजिया विद्यार्थी सभ नमो नारायणाय कऽ देलक।

फुच्चो मिसरकें नहिं रहि भेलैन्ह। चिकड़ि कऽ कहलथिन्ह, "चक्रधर बाबू, ई अनर्थ आब हमरा बरदास्त नहिं होइत अछि!" एकटा स्कूलिया बाजि देलकैक, "भगवानकें चारि बजे रातिमें निन्दसँ जगाएब महा पाप थिक। हम सभ पातकीक संसर्गी कदापि नहिं हैब।" फुच्चो मिसर बमकि उठलाह, "निरा बाबू, खबरदार हम सभ ऐखन पात परसँ उठि जाएब।"

एकटा उकठाह स्कूलिया आगिमें घी देलक। "त बैसल छी किऐक?"

"वज्र खसि पड़ौक जे हम आब एहि ठाम भोजन करी" कहैत तिलमिला कऽ फुच्चो मिसर ठाढ़ भऽ गेलाह। बाहर जाए चाहलन्हि; किन्तु कतहु बाटे नहिं भेटलैन्ह। निशानाथ बाबू पुबरिया ओसारासँ जनउ बान्हि कऽ हिनका हाथ जोड़लथिन्ह। ज्यौतिषी काका मिसरजीकें कहलथिन्ह, "फुच्चो तों बैसऽ। भोजी बेचाराक त कोनो दोष नहिं छैक? सब बातक निर्णय काल्हिए भऽ जेतैक।"

ओल्तीमें बैसल दू-चारि गोट ग्रामीण भोज देखैत छलीह। कहऽ लगलथिन्ह, "राम! राम!! बूढ़ भऽ क मिसरजी की आर्शीवाद दैत छथिन्ह?"

लालजी मिसर शालग्रामकें भोग लगा कऽ कहलथिन्ह, "त आब जय-जगन्नाथ करू।" दू-चारि गोटे जे थम्हल छलाह, शुरू कैलन्हि।

'अदौरी-भांटा उठाऊ', पुबरिया ओसारासँ लम्बोदर ठाकुर हांक देलथिन्ह। अपन बगलगीरकें कहलथिन्ह, 'अमलीक चटकार दऽक बड्ड दिब बनौलक अछि।' उतरबरिया घरसँ कटहरक तरकारीक माँग आएल। अंगरेजिया सभ में केओ रतबा केओ खटमिट्ठी मंगलक। बाबू लोकन्हिक दू गोट लबाइक दू-चारि गोटेकें सुनबैत बाजल, 'सातटा तरकारी बरनिक छैन्ह, परञ्च दालि लहकि गेलैन्ह

अछि'। मनफुल बाबू कहलथिन्ह, 'पण्डितजी आब की देखैत छी ? असल चीज उठबाऊ।'

बारह टा खसी पड़ल छल। दरोगाजी बरैलसँ डबल-डबल खसी पठौने छलथिन्ह। स्वयं आइ नहिं पहुँचि सकल छलाह। पण्डितजीक भागिन कलकत्तामें कई वर्ष धरि रहि चुकल छलाह। दू तरहक मांस बनौने रहथि जकर नाम एहि भोजमें देल गेल छल—देशी ओ बँगला। संकेतसँ एकर अर्थ बुझल जा सकैछ। देशी मांस एके टोकना बनल छलैक। कारण, भोजीक अनुमान छलैन्ह जे बूढ़-सूढ़, आचारी-विचारी लोककें एतबे में भऽ जैतैन्ह। विचारने छलाह हुनका लोकनिकें एक दिस बैसैबैन्ह। किन्तु बैसऽमें त लोक भेड़ियाधसान भऽ गेल।

मांससँ पहिने भातक एक तोर चलल। भातक एकटा परसन पहिनहुँ भऽ गेल छलैक। 'जे लोकनि देशी लेब से बजैत जाएब' कहैत एगोट बारिक बँगला मांसक भरल कठौत लऽक आगां बढ़ल। मनरक्खन झा पजियार यावत वारण करैत छथिन्ह कि हुनका पात पर एक डबल बट्टा बँगला मांस पड़ि गेल। अंगरेजियामें सँ एगोटे कहलकैन्ह, 'कोनो क्षति नहि। दुहूमें एतबे फरक छैक जे बँगलामें कने तेज मसल्ला रहैत छैक।' लगले देशीमांसक बारिक आएल। ओहो एक बाटी दऽ देलकैन्ह। लम्बोदर ठाकुरोक संग सैह गलती भेल। खाइतहिं हिनका दुहू गोटेकें अन्तर बुझि पड़लैन्ह। पजियार चट दऽ कहलथिन्ह, "फुच्चो भाई, आइ धरि एहन मांस कोनो भोजमें नहिं बनल छल। बँगला मसाला की अपूर्व होइछ !"

फुच्चो मिसर चुप्पे रहलाह। ज्योतिषी काका, चक्रधर बाबू, मनफुल बाबू इत्यादिकें पजियारक कथन बड्ड कटु लगलैन्ह। किन्तु केओ गोटे किछु नहिं बजलाह। मनफुल बाबूक लबाहक में सँ एक दू गोटे कानाफुसी कैलक जे तिनकौड़ी बाबूक उपनयनमें जे मांस बनल छल से पंडितजी कतयसँ बनौताह ?

बँगला मांसक समक्ष देशी नहिं ठहरि सकल। केसौर चाउरक भात ओ मांसक सम्मेलन एहि गाममें आइ पहिल-पहिल भेल छल। लोक जे सोंटऽ लागल त बुझिए नहिं पड़ैत छलैक जे कखन भोज शेष हैत। ज्यौतिषी काका ओ फुच्चो मिसरक तन्मयता देखबा जोग छल। मनफुल बाबू जनिका पान-जरदा खाइत-खाइत मन्दाग्नि भऽ गेल छलैन्ह, ओहो दू बाटी खैलन्हि। तोर जे कने मद्धिम भेल त लम्बोदर ठाकुर हांक देलथिन्ह, "ओ, कने जल पीबि कऽ थाह लैत जाऊ। ग्रीष्मकाल थिकैक।" लगले एगोटे उत्तर देलकैन्ह, "पानिमें भिजैत छी की ? इम्हर लोक खाइए रहल अछि।"

दही उठल। संगे भातक एक तोर। अधिकांश गोटे फेर लेलन्हि। हिनका सभमें बहुतो गोटेक पात पर पहिनहिंसँ भातक ढेर लागल छल। लोक त कण्ठ तक भात-मांस खैनहिं

छल, दहीक बिखजी करऽ लागल। दछिनबरिया ओसारा परक भाइ सभ में अधिकांश धसगर छलाह। दहीक एक तोर बढ़ियां जकां सम्हारलन्हि। किन्तु आर कोनो ठाम विशेषता नहिं देखलामें आएल। पण्डितजी नव-नव तौलाक दही लऽक सब ठाम आग्रह करऽ लगलथिन्ह। बहुसंख्यक लोक आग्रह नहिं टारलथिन्ह। पात पर रहितो एक दू छौ लैत गेलाह। चीनीक बारिक कने हाथ खीचऽ लगलथिन्ह। जखन फुच्चो मिसरक लग पहुँचलाह त ओ अएठा कऽ पुछलथिन्ह, "भोजक आखरीमें नून परसैत छी जे?"

चन्द्रशेखर बाबू कड़कि कऽ कहलथिन्ह, "निशा कका, अहांक बालक सभ वस्तुक इन्तजाम कैलन्हि अछि, तकर तात्पर्य त ई नहिं जे वस्तुक एहन दुरुपयोग हो? पटनामें यदि ई भोज कैने रहितौं त लगले हथकड़ी पड़ि जाइत।"

"आ दड़िभङ्गोमें की नहिं पकड़ैतथि? २५ गोटेसँ अधिक लोकर्के खोएबामें कटकी बाजारक एक गोट माड़वारी सम्प्रति जमानत पर छूटल अछि।" चतुर्भुज बाबू संग पुरलथिन्ह।

फुच्चो मिसरकें सट दऽ गोली लागि गेलैन्ह। झट दऽ कहलथिन्ह, "बरद न कूदै, कूदै तंगी। लबरपनीक त कोनो कथा नहिं हो? अपन खर्चसँ यदि केओ दायाद-भाइके खोआबै त बान्हल जैत? एहन रंगताल कहिओ सुनने छलिऐक मामा?"

ज्यौतिषी काका कहलथिन्ह जे एहन विहारि कतहु-कतहु बहब शुरू भेल छैक। आब धर्म-कर्म बांचब कठिन।

एतबहिमें कविराजजी एक छांछ दही लऽक मनफुल बाबूकें आग्रह करैत फुच्चो मिसरक लग पहुँचलाह। हिनका पात पर भरि ठेहुन लागल छलैन्ह। तइयो आग्रह करऽ लगलथिन्ह, "कनेको अवश्य लेल जाओ। मनीगाछीसँ आएल भारक दही थिक।"

"नहिं लेब, नहिं लेब" कहैत पात पर झुकि दुहू हाथसँ वारण करैत मिसरजी छांछ छूबि देलथिन्ह। अन्ततः छांछक लगभग ८ सेर दही हिनके पात पर धऽक दोसर छांछ आनि कऽ कविराजजी ज्यौतिषी काकाकें आग्रह करऽ लगलथिन्ह।

"कविराज, आब लोक कतेक खाएत? वस्तु छूति हो से त नीक बात नहिं? समयक ज्ञाने अधिक आग्रहो उचित नहिं। आब बन्द करह।" काका कहलथिन्ह।

कविराजजी आगाँ बढ़ि गेलाह। दस पांच गोटे जिआन करक उद्देश्यसँ आग्रह मानि लेलथिन्ह। इम्हर ज्यौतिषी काका मिसरजीकें कानमें कहलथिन्ह, "कविराज एहन निविष्ट विद्वान् भेलाह; किन्तु लौकिक ज्ञानमें एखनो अपटुए थिकाह। भरल छांछ दही घुमा कऽ लऽ गेलाह। रे, नहिं लेब तकर तात्पर्य त ई नहिं जे नहिंए लेब?"

घरमें जे सभ लोक बैसल छल से गर्द कैलक, "आब हमरा सभ उठैत जाउ? बड्ड गरम भऽ रहल छैक?"

चुम्मन झा दुहू हाथ उठा कऽ उच्च स्वरमें वारण कैलथिन्ह, "नहिं, नहिं। कने बैसल जाओ। आब येह सकरौरी उठैत छैक।"

सभ लोक आश्चर्यित भऽ गेल।

प्रान्तक महीस सभ चरीक अभावसँ वेतुआ परगना चल गेल छैक। सम्प्रति शुद्धक एतेक जोर छैक जे गाममें दसो पांच सेर दूध भेटब कठिन। लोककें बुझबामें आड्ठ नहिं रहलैक जे दरोगाजी बरैलसँ दूध पठौने छथिन्ह।

"निशा, तों लोककें पहिनहिं कहि दितहौक जे सकरौरी सेहो छैक। आब लोक कोन पेटमें खाएत ?" ज्यौतिषी काका बजलाह।

चक्रधर बाबू बड़कागामक पाहुनसँ शतरंजमें हारि गेल छलाह तैं मायूसी छलैन्ह। किन्तु आब अकछा गेल छलाह। एके मास पूर्व दूधक अभावसँ पितामहक श्राद्धमें सकरौरीक प्रबन्ध नहिं कऽ सकल छलाह। नीक नहिं लगलैन्ह जे पण्डितजीकें प्रतिष्ठा होएन्हि। कहलथिन्ह, "पण्डितजी, गर्मीक समय थिकैक। आब लोककें उठऽ दिऔक।"

दछिनबरिया ओ पुबरिया ओसारासँ समवेत स्वरमें प्रतिवाद भेल। "वस्तु तैयार भेल छैक त जकरा जेहन रुचि हैतैक से खाएत। दू-चारि मिनट आर बैसने कोनो क्षति नहिं।"

चारिटा बारिक चारि तौला सकरौरी लऽक भंडारसँ निकसल। बहुत गोटे अपन-अपन लोटा बढ़ा देलन्हि।

चन्द्रशेखर बाबू, चतुर्भुज बाबू आदि दस-पाँच गोटे कहलथिन्ह जे ई वस्तु बड्ड गर्हित होइछ। एखन नहिं खाएब। अपकार करत। निशानाथ बाबू नहिं मानलथिन्ह। आग्रहक चूड़ान्त भेलासँ चरणामृत जकां कने-कने लेलन्हि। इम्हर सर्व-साधारण लोटा भरि-भरि कऽ पीब लागल। बिचला टोलक दू-चारि गोट भगिनमान पण्डितजीकें साकांक्ष करैत साधुवाद देलथिन्ह, "ककाजी, थइ थइ कऽ देल गेल। मसल्ला एतेक ने गद्गद बैसल छैक जे चलबे नहिं करैत छैक।"

निशानाथ बाबू विनम्र होइत कहलथिन्ह, "ई अपने सभक आशीर्वाद थिक। हमरा कोन साधन अछि जे अपने सभक स्वागत करब ?"

इम्हर लम्बोदरठाकुर दुविधामें पड़ि गेलाह। पात पर भरि ठेहुन दही, भात, मांस ओ तरकारीक ढेर लागल छलैन्ह। सकरौरी कत लेताह ? निम्न कोटिक लोक जकां लोटा आगां नहिंए बढ़ा सकैत छलाह। बिजहोक हूलिमें गिलास भुतिया गेल छलैन्ह। चुम्मन झा पुरैनिक पातक एगोट दोना बना कऽ देलथिन्ह। 'आतापि भक्षितो येन वातापि च महाबलः' पढ़ि बामा हाथसँ पेट सहलवैत भरलो दोना सकरौरी गटाकसँ पीवि गेलाह। पात पर जे मसल्ला रहि गेलैन्ह, तकरा खा कऽ बारिकक बाट देखऽ लगलाह। एहि गोलमें प्रायः सब गोटे लोटेवाला छलाह। बारिककें ऐम्रामें देरी भेलैक। एगोटे खाधुर चुम्मन झाकें कहलथिन्ह, "औ, ठाढ़ छी ? ठाकुरजीक

जिज्ञासा त करिते नहिं छथिन्ह ?" लगले सकरौरीक दोसर तोर चलल। "कने तरीसँ देने जाउ", ठाकुरजी बारिककें कहलथिन्ह। ओ समूल दोना बुनिया, किसमिस, गरीसँ भरि देलकैन्ह। आर सभ लोक अपन-अपन लोटा लऽक तल्लीन भऽ गेल।

ज्यौतिषी काका ओ फुच्चो मिसरकें आग्रह करैत पण्डितजी मनफुल बाबू ओ चक्रधर बाबूक लग पहुँचलाह। ज्यौतिषी काका देखलन्हि जे इम्हरुका लोक एतेक ठेल कऽ पीलक अछि जे आब लगले हाथ बारि देतैक। ओ एखन धरि तीने गिलास पीने छलाह। गिलासो फुचिए छलैन्ह। मिसरजीक गिलास अधसेरीसँ उपरे छल। पाँच की छौ गिलास पीबि कऽ एखन चालि कने मद्धिम कऽ देने रहथि। आस्तेसँ ज्यौतिषी काकाकें कहलथिन्ह, "दूध त जरिए गेल छैन्ह। मसाला बेशी देने की हैतैन्ह ? आर मनफुल बाबूक भातिजक उपनयनमें जेहन बुनिया बनल छल से कत पौताह ?" किन्तु ज्यौतिषी काका मिसरजीक दिस साकांक्ष नहिं भेलाह। देखलन्हि, चुम्मन झा बारिक सकरौरीक तौला नेने चल अबैत अछि। येह अन्तिम आग्रह बुझि पड़लैन्ह। अपन गिलास भरले छलैन्ह। 'खाली नहिं रहलासँ कोना लेब ?' तारतम्य करिते छलाह कि बारिक अत्यन्त निकट पहुँचि गेल। गिलासकें मुँहसँ करीब एक बीत फराके राखि कऽ पिबैत छलाह; किन्तु नजरि बारिकैक दिस रहैन्ह। ओ जेना-जेना निकट आबऽ लागल, तहिना ई शीघ्रतासँ गिलास खाली

करक चेष्टा कैलन्हि। लोटावाला लोक सभ आब हिम्मतपस्त भऽ गेल छल। तैं बारिक आब हिनका लग पहुँचऽ पहुँचऽ पर रहे। एके बेर गट दऽ पीबाक उद्देश्यसँ ज्यौतिषी काका समूल गिलास ढारि लेलन्हि। कण्ठनाली पर्यन्त त भरले छलैन्ह। सड़कि गेलैन्ह। नाक ओ मुँहसँ सकरौरी खसऽ लगलैन्ह। दू चारि बेर खोंखी कैलन्हि। लगले पाते पर उनटि गेलाह। होश नहिं रहलैन्ह। इम्हर हुड़्ड़ भऽ गेल।

ज्यौतिषी काकाकें अपन हित-अपेक्षित घेर लेलथिन्ह। दू-चारिटा गोलेश बाजि देलकैक जे आब मजील चलऽ लेल तैयार होइत जाऊ। निशानाथ बाबू भयसँ पियर भऽ गेलाह। चक्रधर बाबू तीव्र स्वरमें हुनका कहलथिन्ह, "हम अहांकें कहैत छलहुँ जे आब लोककें आग्रह नहिं करियौक। एकर जबाबदेही अहीं पर आओत।"

आब एकदम भिनसर भऽ गेल छलैक। दरबाजा पर दायाद भाइ अचा-अचा कऽ जाय लगलाह। गाम भरिमें लगले गर्द पड़ि गेल जे ज्यौतिषी काका सकरौरी पिबैत पिबैत फट भऽ गेलाह। हुनक स्त्री ओ कन्या सभ छाती पिटैत पण्डितजीक घर दिस दौड़लथिन्ह। ज्यौतिषी काकाकें गोर पचासेक लोक घेरने छलैन्ह। आङनमें पात परक ऐंठ लतमर्दनसँ पिचड़ा पिचड़ा भऽ गेल छल।

ज्यौतिषी काका कोनो खबासकें एक बेर पिटबा देने छल-थिन्ह। ओ अपन गोष्ठीक दू-चारि गोट इयार-दोस्तकें उच्च

स्वरमें कहऽ लगलैक, "धकेल धकेल कऽ जानसँ ऊपर [illegible] छथि त पेट नहिं फटतैन्ह ? "

इम्हर निशानाथ बाबूक घरमें कन्ना-रोहट शुरू भेल । आङनमें हाकरोस करऽ लगलथिन्ह । उपनयनक शुभ मुहूर्तमें कतय सँ इ प्रत्यवाय आबिकऽ खसल । किन्तु पण्डितजीक जेष्ठा कन्याक बुद्धि विचलित नहिं भेलैन्ह । 'बरुआ कत गेल ? रे गौरी !— रे केओ देखलही अछि ?' किन्तु बरुआक कतहु पत्ते नहिं । आधा घंटाक बाद बरुआ भेटलाह । पितयाइनिक आङनमें सूतल रहथि । पण्डितजीक कन्या बरुआ ओ आचार्यकें घरसँ एक माइल दूर बथानमें लऽ गेलथिन्ह । कहल-थिन्ह, 'उपनयन कोना रुकतैक ? बरुआ ओ आचार्यकें त वार्त्ता नहिंए छैन्ह ?'

मनफुल बाबू, चक्रधर बाबू ओ हुनका लोकनिक लवाहक सभ ज्योतिपी काकाक लगे ठाढ़ छलाह ; किन्तु ऐंठक किच-काहिनसँ हटा कऽ बाहर लऽ जयबाक सूझ ककरो नहिं होइत छलैन्ह । काका भिसिण्ड भेल चित्त पड़ल रहथि । खैलाक बाद पेट एतेक ऊँच भऽ गेल छलैन्ह जे सांस लैत छथि कि नहिं बूझब असम्भव छल । फुच्चो मिसर हुनक नाड़ी टो कऽ आँखि पोछैत बजलाह, 'जे होएबाक छलैक से भऽ गेल । आब · · ·' सुननहि ज्यौतिपी काकाक स्त्री, जे ओसारपर ठाढ़ छलीह, समस्त शक्तिसँ छातीमें मुक्का मारऽ लगलीह । बिलखि बिलखि कऽ बौना आरम्भ कैलन्हि, "दैवा रे दैवा ! जहर

खोआ कऽ सुदइया मारि देलकैक । [illegible] नहि जाउ । आइ अपटी खेतमें प्राण गेलन्हि ।" निशानाथ बाबूकें ई सभ काण्ड देखि बकजक मारि देलकैन्ह । थर-थर कँपैत एक कोनमें ठाढ़ रहलाह । फुच्चो मिसर फेर एक बेर नाड़ी टोइल-थिन्ह । चिकड़ि कऽ बजलाह, "एखन मुइल नहिं छथि ! नाड़ी कने कने चलैत छैन्ह । बैतरणी-दान करा दियौन्ह । एकटा बाछी जल्दी लाउ ।" सुनिते ज्यौतिषी काकाक बड़की कन्या—जे ठोहि पाड़ि कऽ कनैत छलीह आओर चिचिआए लगलीह । 'हौ बाबू हौ बाबू, हमरा सभकें छोड़ि कऽ कतय जाइ छऽ हौ बाबू ।' स्त्री जोर-जोरसँ छाती पीटऽ लगलथिन्ह । ई काण्ड देखितहि बाबू-भैया लोकनि घसकि गेलाह ।

निशानाथ बाबूकें चारू दिस अन्धकारे अन्धकार देखाइ पड़लैन्ह । भगवतीकें स्मरण कैलन्हि,

"शरणागत-दीनार्त्त-परित्राण-परायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥"

ज्यौतिपी काकाक [illegible] पुवारिया टोलक [illegible] 'हाथीकें उठाबक हेतु न पहलमान चाही' । एतबहिमें चन्द्रशेखर बाबू, चतुर्भुज, नीलकण्ठ ओ दस पाँच गोट स्कूलिया लोक सभकें हटबैत काकाक लग एलाह । चन्द्रशेखर बाबू हरियरका रंगक शीशीक कोनो सुगन्धित द्रव्य हुनका माथ पर देल-थिन्ह । आँखि पर गुलाब जलक छींटा देम लगलथिन्ह ।

काकाजी मुँह बाबि कऽ आस्तेसँ सांस लेलन्हि। [illegible] गोटे हुनका टाँगि कऽ दालान पर लऽ गेलथिन्ह। [illegible] मुँहमे अंडीक तेल देल गेल। [illegible] फेर अचेत भऽ गेलाह। दलानक नीचा [illegible] लोक ऊपर आबऽ लेल धकमधुक्क कऽ रहल छल। [illegible] विद्यार्थी हुनका सभकेँ रोकने छलैन्ह। चन्द्रशेखर बाबू कोनो तेलक मालिश काकाजीक माथ पर करऽ लगलथिन्ह। लगभग आध घण्टाक बाद काकाजी उठि कऽ बैसलाह। कहलथिन्ह, "हौ, तोरा लोकनि व्यस्त होइत छह किएक? देह-नेह केओ देखलक अछि? हमर गिलास कतय गेल? सब भोजमे एकटा हेराइते अछि।"

पण्डितजीकेँ जान में जान ऐलन्हि। फेर भगवतीकेँ स्मरण कैलन्हि, "प्राच्यां रक्ष प्रतीच्याञ्च, चण्डिके रक्ष दक्षिणे।"

फुच्चो मिसरकेँ पेटसँ धाह देम लागल छलैन्ह। जल पिउलन्हि, किन्तु नहिं सुनलकैन्ह। दलाने पर पेटकुनिया देने पड़ल छलाह। जकरा दुर्गादत्त कहने छलथिन्ह, ओ व्यंग्य कैलकैन्ह, "आब त व्यापको व्यक्ति सभ प्याज खाए लगलाह अछि।" दोसर गोटे जबाब देलकैक, 'अनजान, सनजान, महा-कल्याण।' फुच्चो मिसर तड़कि गेलाह। कहलथिन्ह, "निशा बाबू, अहाँ सभ महा कुकर्मी छी। एखन हम अहाँक अन्न बान्त करै छी!" 'हाँ, हाँ' करैत निशानाथ बाबू मिसरजीक दिस दौड़लाह। कहलथिन्ह, "ई दुहू गोटे नेना छथि। की कहियौन्ह?"

बँगला [illegible] निशाबाबूकेँ तकर कोनो वार्त्ता नहि छलैन्ह।

अपराह्नमे गामक वयोवृद्ध [illegible] झा अपन पौत्र नीलकण्ठसँ पुछलथिन्ह, "हौ, [illegible] छलैक? विस्तारपूर्वक कहऽ।" हुनका लग आओर दस बीस गोटे बैसल छलाह। नीलकण्ठ आइ-एस-सि मे पढ़ैत रहथि। कालेजसँ रंग-बिरंगक शीशी अनने छलाह। सादा जलकेँ लाल बना दैत रहथि। हरियरकेँ सफेद। हुनक एहि जादूक खेलसँ समस्त गाम चकित छल। ओ एक गिलास जल लऽक ज्योतिषी काकाक शैलीसँ पीबाक भान करैत कहलथिन्ह, "जाहि Velocity (वेग) सँ सकरौरी गिलाससँ हुनका मुँहमे खसैत छलैन्ह तदनुसारे कण्ठ क नीचा ओकर Reception (ग्रहण) नहिं होइत छलैक। मुँहमे ओकादिसँ फाजूल जमा भऽ गेलैन्ह। इम्हर लम्ब रूपसँ खसैत धारक ठेह मारलकैक। सड़कि गेलैन्ह।"

एगोटे बजलाह, "अंगरेजीमे किछु नहिं छूटल छैक। ज्योतिषी काकाक ई वृत्तान्त कोना अंगरेजीमे पहिनहिंसँ लिखल छलैक?" दोसर गोटे जबाब देलथिन्ह, "तेँ त अंगरेजी पढ़बामे एतेक खर्च थिकैक?" पण्डित मनमोहन झा कहलथिन्ह, "खर्च! ५०) टाका मासोमे नहि चलैत छैन्ह।"

× × ×

"की औ, कोनो चूल-चालि नहिं पबैत छी? चूड़ा-दही हैतैक की?" लम्बोदरठाकुर पजियारकेँ पुछलथिन्ह।

"निशाबाबू बरनिक मोल करथु। किन्तु पक्की-कच्ची कुह की मामूली बात छैक? गाममें चारि घरक अतिरिक्त आर के कऽ सकैत अछि?" पजियार जवाब देलथिन्ह।

पोखरिमें स्नान कऽ लेल पैसैत रहथि कि कल्लर डोम पर ठाकुरजीक नजरि पड़लैन्ह। ओ कान्ह पर एकटा बाँस नेने चल जाइत छल। पुछलथिन्ह, 'हे रौ, की हाल-चाल? कएटा कोठी भरलौक?" कल्लर कहलकैन्ह, "रे की कहू, पंडीजी? भरि दिन रौदमें भात सुखबैत सुखबैत हरान भऽ गेलहुँ तइयो तीनो टा नहिं भरल। तेसर साल मनफुल बाबूक ओहि ठाम सात कोठी भरने छलहुँ। दू वर्ष धरि सभ गोटे खाइत गेलहुँ।"

एतबहिमें फुच्चो मिसर धोती लोटा नेने पहुँचलाह। पजियारकें लक्ष्य कय व्यंग्यक स्वरमें कहलथिन्ह, "की औ, चूड़ा-दही लेल मुँह पिजौने छी? एहि साल सोन्हा कऽ राखू। आगां वर्ष बिजहो हैत।"

सविनय निवेदन

"दिवाकान्त!

औ दिवाकान्त!!

औ बूड़ि दिवाकान्त!!! आबहु उठब की?"

पण्डितजीक स्वर क्रमशः उदात्तसँ तरित धरि पहुँचि गेल छल। किन्तु दिवाकान्तक दिससँ उठबाक कोनो उपक्रम नहिं देखल गेल। पूस मास। पछबाक कनकनी। राति एखनो दू घंटासँ ऊपर छलैक।

"औ कुम्भकर्णक प्रपितामह! आबहु त आवृत्ति करू?"

एक मुहूर्त्त धरि प्रतीक्षा कैलन्हि। किन्तु दिवाकान्त एखनो नहिं सुगबुगैलाह। पण्डितजीकें आब धैर्य नहिं रहलैन्ह। विद्युत-वेगसँ दिवाकान्तक देह परक सलगा हुनकासँ दूर फेकि देलथिन्ह। दिवाकान्त यावत एहि आकस्मिक घटनासँ अप्रतिभे छलाह कि पितरिया लोटासँ एक चूरू ठार हेमऊचल जल

हुनका मुँह पर छीट देलथिन्ह। दिवाकान्त फुरफुरा कऽ उठलाह।

"ई बूढ़ि रे! देखू त हिनक अध्यवसाय!! आगाँक द्वितीय खण्डमें परीक्षा देताह!!!"

"गुरुजी, लालटेनमें तेल नहिं छलैक। भज्जू साहुक दोकानसँ तीन बेर फिरि अयलहुँ। पड़ल पड़ल साहित्य-दर्पणक मनन करैत छलहुँ।"

अग्निश्च वायुश्च होइत, दांत पिसैत शीत ओ क्रोधसँ द्विगुण कंपैत पण्डितजी कहलथिन्ह, "मनन करैत छलाह! देखू त हिनक फूसि फटाका!! की मनन करैत छलहुँ?"

दिवाकान्तकें भट दऽ कोनो जबाब नहिं फुरलैन्ह। गोङि-आए लगलाह

"भुसकौल विद्यार्थीक गत्ता मोट! हमरेसँ फक्की देम चललाह अछि?"

गुरुजीक प्रचण्ड मूर्त्ति देखि दिवाकान्त कान पर जनउ चढ़बैत जलपात्र लऽ चुपचाप ससकि गेलाह।

अन्यान्य ग्रन्थक कोन कथा सिद्धान्तकौमुदी ओ साहित्य-दर्पण पर्यन्त दिवाकान्तकें एहि पारसँ ओहि पार धरि कण्ठ छलैन्ह। किन्तु बीचसँ कोनो विषय पुछलासँ ओ पराभवमें पड़ि जाइत छलाह। लिखऽ में हाथ कापऽ लगैन्ह। एको पन्ना लिखऽ में घण्टा भरि लागि जाएन्ह। ताहूमें भरि ठेहुन गलती!

"अथ प्रजानाम् अधिपः राजा दिलीपः प्रभाते प्रातःकाले...।

एकटा बटुक श्लोकक अन्वय ओ सतरी माने घोखैत छल।

"दांत की कटकटबैत छी? कसि कऽ उच्चारण नहि कऽ होइछ?" पंडितजी हुथौअलि आरम्भ कैलन्हि। किन्तु बटुक कोनो उत्तर नहिं देलकैन्ह। पूर्वापेक्षा द्विगुण जोरसँ घोखऽ लागल।

'अहं बरदराजभट्टाचार्यः लघुसिद्धान्तकौमुदीं करोमि। हम बरदराज भट्टाचार्य लघुकौमुदीक रचना करैत छी। किं कृत्वा। की कय क। सरस्वतीं देवीं नत्वा। सरस्वती देवीकें नमस्कार कय क। कथं भूतां सरस्वतीं देवीम्। सरस्वती देवी केहन थिकीह। शुद्धां नाम शुद्धस्वरूपाम्।......' दोसर छोट बटुक घोखैत छल।

"खकासि कऽ पढ़ि नहिं होइछ?" पंडितजी दमसबैत कहलथिन्ह। पुस्तकसँ ध्यान बिनु हटौनहिं बटुक तिगुन जोरसँ घोखऽ लागल। पल्थी मारि कऽ आगां पाछां झूलि-झूलि पढ़ैत छल। आओरो जोरसँ झूलऽ लागल।

तेसर बटुक अमरकोशक आवृत्ति करैत एखन 'पृथ्वी' शब्दक पर्याय घोखैत छल—'भूर्भूमिरचलानन्ता-रसा-विश्वम्भरास्थिरा।'

'केहन वज्र चपाठ छी? तालव्य ओ दन्त्यमें कोनो अन्तर नहिं बुझि पड़ैछ?' कहि पण्डितजी फेर आगां बढ़लाह।

दलानवाला घरमें गामसँ सद्यः आगत युगेश्वर झाक बालक सुतल छथि। पिता पुरोहिती करैत छलथिन्ह। अभिलाषा

छलैन्ह जे पुत्र पण्डित भऽ हुनक मर्यादा बढ़ाबथि। किन्तु पुत्रकें यजमनिकामें चूड़ा-दही खैबाक अभ्यास पड़ि गेल छलैन्ह। मध्यममें पढ़ैत पढ़ैत छोड़ि कऽ पुरोहितीमें लागि गेल छलाह। युगेश्वरझा पण्डितजीक खेतक बटाइदार सभकें कहिओ कहिओ चांखि देया दैत छलथिन्ह। एही कृतज्ञताक हेतु हुनका सन्तोष देस लेल पंडितजी हुनका बालककें आबऽ देने छथिन्ह।

"कन्हछुट्ट् बरद, पठछुट्ट् विद्यार्थी लागय लागय नहिं लागय। ई सभ पिण्डखौक बाभन थिक। कि पढ़त ?" नहिं उठौलथिन्ह।

वाणीमन्दिरक विद्यार्थी लोकनिक आवृत्तिसँ अड़ोस-पड़ोसक लोक सभ जागि गेल छल। अहीर लोकनि प्रतिदिनक अभ्यासक अनुसार माल-महीसकें घास-भूसा खोबैत छलाह। तें एहि कोलाहलसँ हुनका सभकें धन्न सन। किन्तु कायस्थ लोकनिकें ब्राह्म मुहूर्त्तक ई जागरण उपद्रव जकां बुझि पड़ैन्ह।

पण्डितजीक अवस्था लगभग ५० वर्षक छलैन्ह। किन्तु एखनो की शीत की ग्रीष्म प्रतिदिन ४ बजे उठि नित्यकर्मक अनन्तर तीन घंटा पूजा करैत छलाह। हिनक समकक्ष वैयाकरण समस्त देशमें दू तीन गोटेसँ अधिक नहिं छलाह। किन्तु न्याय एवं साहित्यमें जे हिनक प्रगाढ़ पाण्डित्य छल तकरा व्याकरणक संग योग कैला उत्तर हिनका सन दुर्धर्ष विद्वान् प्रायः कतहु नहिं भेटैत रहथि। सांख्य, धर्मशास्त्र, मीमांसा एवं वेदान्तोमें हिनक अपूर्व गति छल। कए बेर पण्डित-सभामें

अड्डी मारि कऽ कहने छलथिन्ह जे जनिका जे प्रश्न करबाक होएन्हि करथु। हम उत्तर पक्षमें रहब। देशक कएकटा हिनक विद्वेषी पण्डित एवं विदेशक दू-चारि गोट विख्यात पण्डित भरल सभामें शास्त्रार्थमें हिनकासँ परास्त भेल छलाह। एहिसँ हिनक प्रतिष्ठाक जड़ि एतेक दृढ़ भऽ गेल छल जे दूर-दूर प्रान्त एवं राजा-रजवाड़ासं हिनका निमन्त्रण अबैत छलैन्ह। विदेशमें जे हिनका सम्मान ओ विदाइ भेटैत छलैन्ह से पण्डित समाजक हेतु गर्वक विषय छल। एक बेर संस्कृत-समितिक वार्षिकोत्सवक अवसर पर हिनक जे दीक्षान्त-भाषण भेल छल से चिरस्मरणीय रहत। अन्यदेशिओ तीन-चारि गोट महापण्डित ओहि अवसरपर उपस्थित छलाह। हुनका लोकनिक पाण्डित्यपूर्ण भाषणक अनन्तर जखन ओ संस्कृत पद्यमें धारा-प्रवाह हुनका लोकनिक भाषणक समालोचना करैत प्राचीन भारतीय संस्कृति पर वक्तृता करऽ लगलाह त समस्त सभा मंत्र-मुग्ध भऽ गेल। की उपमा, की अर्थ-गौरव ओ की छन्द-विन्यास ! सभक तेहन विकास देखौलन्हि जे ज्ञात भेल साक्षात् सरस्वती जिह्वा पर विराजमान छथिन्ह। शिखरिणी, द्रुत-विलम्बित ओ वसन्त-तिलका छन्दमें तिनू अन्यदेशी पण्डित लोकनिक भाषणक समालोचना कय मन्दाक्रान्तामें भारतीय संस्कृति पर डेढ़ घंटा व्याख्यान देलन्हि। सभा धन्य धन्य कहि उठल। विदेशी विद्वानो सभ मुक्त कण्ठसं साधुवाद देलथिन्ह। ओ लोकनि कहलथिन्ह जे संस्कृतक सूर्यास्त कालमें पाण्डित्यक

एहन प्रदर्शन दुर्लभ थिक। संस्कृतक एहन लबालब भरल स्रोत मिथिला छाड़ि आर कतय भेटत ?

पण्डितजी सम्प्रति सरस्वती विद्यालयमें व्याकरणक प्रधानाध्यापक छलाह। विद्यालयक हातेमें डेरा भेटल छलैन्ह; किन्तु सीतामढ़ी प्रान्तक एगोट संस्कृत-प्रेमी जमीन्दार हिनकासँ अनुरोध कैलथिन्ह जे हमर बालकक शिक्षाक भार लेल जाओ ओ हमर आवास 'वाणी-मन्दिर' कें पवित्र कैल जाओ। आग्रह नहिं टारि सकलथिन्ह। उक्त जमीन्दार महोदयक एक छोट बालकक संग पण्डितजीक परिवारक तीन-चारि गोट छोट-छोट बटुक सेहो वाणी-मन्दिरमें रहैत छल। दिवाकान्तक घर पण्डितजीक गामसँ सटले छलैन्ह। गुरु-शुश्रूषया विद्याक अनुसार पण्डितजीक बडी-गार्डक रूपसँ रहैत छलाह। जमीन्दारे महोदय हिनको खर्च दैत छलथिन्ह।

[२]

पड़िबाक अनाध्यायक कारणें पण्डितजी आइ मध्याह्नमें जखन चबूतरा पर कम्बल ओछा कऽ पड़ल रौद तपैत रहथि कि वैदिक झपटलाल झा उपस्थित भेलाह।

"आउ, आउ, वैदिक ! अहां त डुमरिक फूल भऽ गेल छी। औ कतय गेल छलहुँ ?"

पण्डितजी उठि कऽ बैस गेलाह। वैदिको ओही कम्बल पर बैसलाह।

"महामहोपाध्याय, की कहू ? घोर कलिकाल आबि गेल। वर्णाश्रम-धर्मक मर्यादा बांचब आब कठिन। लोक सभ एकटार भऽ जाएत।"

पण्डितजी प्रश्नसूचक भंगीसँ हुनका दिस ताकलथिन्ह।

सुनौनाबाबूजी [illegible] निश्चिन्त भऽ गेल छला। ओकरे जिज्ञासा में जाइत काल समस्तीपुरमें देखल जे कचहरीसँ पूब एक बृहत् सभा भऽ रहल छैक। सुनौनाक एकटा स्कूलिया भेटल। कहलक, 'आइ एतऽ आर्य समाजक मीटिंग अछि। आइ हरद्वारक एक पण्डित सनातन-धर्म पर व्याख्यान देताह। चलल जाय। आइ शनि छैक। सभाक बाद हमरो लोकनि गामे जाएब।' विचारल जे बरनिक येह सही। टोसनसँ दू कोस रातिमें एसकरे कोना जाएब ? बाचे बाटमें गुतही गाछी सेहो पड़ैत छल। इम्हर देखल कई हजार लोक एकत्रित भेल अछि। बुझि पड़ल व्याख्यान अवश्ये रोचक हैतैक। ओहि ठाम जाकऽ देखैत छी त नारायण ! नारायण !!"

पण्डितजी तल्लीन भऽक सुनैत छलाह। कहलथिन्ह, "तखन ?"

देखल जे एगोट आर्य-समाजी एक विधवाक विवाह एक युवकसँ करा रहल छैक। कहलकैक जे सासुर ओ नैहर दुहूस उपेक्षित ब्राह्मणक असहाय बाल-विधवा कन्या क्षुधासँ पीड़ित भऽ यदि क्रिस्तान भऽ गेल हो त की ओकरा हम फेर ग्रहण नहिं करबैक ? एहना स्थितिमें कुपथमें

जाएत, दोसर धर्मक शरण लेब अथवा आत्महत्या करब एहि तिनूक अतिरिक्त ओकरा लेल आर कोन मार्ग छैक ? एही त्रुटिक कारणेँ हिन्दू-समाज एतेक निर्बल भऽ गेल अछि। ई युवक एहि विधवासँ विवाह करैक हेतु प्रस्तुत भए अपन उदारताक जे परिचय ....."

पण्डितजी दुहू हाथसँ अपन कान मुनैत क्रोध एवं घृणाक स्वरमें कहलथिन्ह, "चुप रहू वैदिक ! ई सभ कथा जे सुनैछ तकरो एक चरण प्रायश्चित्त लगैत छैक।

वैदिकक मुँह सुखा गेलैन्ह। डर भेलैन्ह जे हम त विवाह पर्यन्त देखि आएल छिएेक, कोनो प्रतिवादो नहिं कैलिएेक ?

पण्डितजी एक मुहूर्त्त धरि चुप रहि बजलाह, "गांधीक एहन आंधी उठल अछि जे समस्त देश वर्णसंकर भऽ जाएत। पृथ्वी एहन अन्यायक भार कोना वहन करैत छथि आश्चर्य ! ब्राह्मणक कन्याक पुनर्विवाह !"

हाफी कए चुटकी बजबैत "हरेकृष्ण ! हरेकृष्ण !!" आवृत्ति कैलन्हि।

"सभामें केओ नीक लोक त नहिंए हैत ? येह हरही-मुरही ...."

वैदिक कहलथिन्ह, स्कुलिए विद्यार्थी ५०० सँ ऊपर छल। ओहिमें के ऊँच के नीच से बिचार करब कठिन छलैक। गान्धी टोपीवाला सभ भरल छल। ओहूमें सँ एगोटे व्याख्यान देलक। कहलकैक जे हमरा समाजमें विधवा सभ पर जे अत्याचार

भऽ रहल अछि तकर प्रतिकार करब अत्यन्त आवश्यक थिक। विवाह आदि कोनो शुभ मुहूर्त्तक अवसर पर देखैत छी जे घरोक १२-१४ वर्षक विधवाकें वर-कन्याक समक्ष नहिं आबऽ देल जाइत छैन्ह किएक जे हुनका लौकिक दृष्टि अशुभ मानल जाइछ। सासुरमें बाल-विधवा सभकें जे यातना देल जाइत छैन्ह तकर उल्लेख अनावश्यक थिक। अन्यायोक त एकटा हद होइछ ? नहिं त माता-पिता कोनो शिक्षा दैत छथिन्ह आर ने कोनो व्यावहारिक ज्ञान जाहिसँ ऊ कैंचा उपार्जन कऽ..."

पण्डितजी तामसे लाल भऽ गेल छलाह। वैदिककें बाधा दैत कहलथिन्ह, "स्त्री-शिक्षा नहिं रहलासँ त समाजमें एतेक व्यभिचार बढ़ि रहल अछि। यदि कन्या सभकें स्कूलमें पढ़ावल जाय त की अनर्थ हैतैक से ई बूढ़ि सभकें नहिं बुझि पड़ै छैन्ह। न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति। एवं विधवाकें पूर्व जन्मक पापक फल एहि जीवनमें भेटैत छैक। ओकरा एहि कालमें नेम-निष्ठासँ रहबाक चाही जाहिसँ ओकरा परलोक बनैक। विधवाक पुनर्विवाह ! हरेकृष्ण, हरेकृष्ण। एहन कुकर्मसँ ओकरा रौरवो नरकमें स्थान भेटतैक ?"

एक क्षण चुप रहि निराशाक स्वरमें बजलाह, "किन्तु आब त कलिक चतुर्थ चरण बीत रहल छैक। जे अनर्थ नहि हो से थोड़। आर्य-समाजी सभ एक राक्षस नोसर नौतल। असहयोगिया सभक राज हैतैक। लोक बिलटि जाएत। आर सभसँ बाढ़ि ग्लानिक विषय जे अहां पण्डित-समाजक प्रतिनिधि भऽ क

ई महोत्सव देखऽ गेल छलहुँ ? अहांक बुद्धि भ्रष्ट भऽ गेल छल की वैदिक ?"

वैदिक मिटपिटा कऽ जवाब देलथिन्ह, "नहि, जखन हम देखलिएक जे साक्षात् वेदक मन्त्र पढ़ा कऽ विवाह करा रहल छैक त नहि रहि भेल। लेखन आपस भेलहुँ। किन्तु गोड़ पलंक छलैक जे बाहर अबैत अबैत पराभव भऽ गेल। कहुना ठेलम-ठेल कए जखन बहरैलहुँ त देखल जे मिरजई दुइ केहुनी पर फाटि गेल अछि। पिठियो पर सर्साफ गेल छल आर दोपट्टा त एकदम चिड़ीचिड़ी ! ई देखल जाओ पछाड़पुरवाली कन्या भरि दिन मीचऽ में लागल रहल तइयो कतहु दह होइक ? आङनमें बड़ गंजन कैलन्हि।"

कथाक ई सिलसिला लगले छल कि महेश्वरझा अपन भागिज उमानन्दक संग उपस्थित भेलाह। भागिज मैट्रिक कक्षामें पढ़ैत छलथिन्ह। ओ पैर छूबि कऽ प्रणाम करैक हेतु आगां बढ़ैत छथि कि "हाँ, हाँ, स्पर्श जुनि करी। हौ लम्बोदर, एकटा चटकुनी बैसऽ लेल दहुन्ह" पण्डितजी वारण करैत अपन विद्यार्थीकें आदेश देलथिन्ह।

पित्ती-भागिज दुहू गोटे अप्रतिभ भऽ गेलाह। वैदिक हिनका लोकनिक मुँह ताकऽ लगलथिन्ह।

महेश्वरझा नम्र भावसँ कहलथिन्ह, "स्कूलक छात्रावासमें जे काण्ड भेल छैक से त अपनेकें ज्ञाते अछि। मोटहु बाबूक बालककें व्यवस्थे देने छथिन्ह। सम्प्रति गाममें हमरा लोक

एकचरा कऽ देने अछि। आब अपनहिंक शरणमें आएल छी। बचाबी त बाँचब। नहि त लोक पतित कऽ देत।"

"एतेक दूर एबाक प्रयास त व्यर्थे कैल? गाममें टोलक पण्डित त छथिए?" पण्डितजी तटस्थताक भाव देखबैत कहलथिन्ह।

"कहाँ देशक गौरव अपने जकरा हस्ते समस्त पण्डित-समाज थर्रा जाइत अछि ओ कहाँ गामक भन्दरनह यशोधर मिसर ?"

पण्डितजी कने मोलायम भेल जकाँ बुझि पड़लाह।

"किन्तु हम अपनेक की सम्मान कऽ सकब ? कहाँ मोटहु बाबू जमीन्दार ओ कहां हम दस बिघा खेतक जोतनिया ! हिनका वजीफा भेटल छैन्ह नहिं त हम खर्च कतयसँ दितिएन्ह ? आब अशरणक शरण अपनहिं छी। गाममें हमरा लोक चौबोला कऽ देलक अछि। समस्त परोपट्टामें गुलबा उठा देलक अछि। कतहु जाएब से पराभव। कन्याक कथा ठीक भऽ गेल छल सेहो भङठा देलक।"

स्वरमें आर्द्रता आबि गेलैन्ह। बेशी किछु नहि बाजि सकलाह।

वैदिक पुछलथिन्ह, "महामहोपाध्याय, की विषय छैक ?"

ओ कहलथिन्ह, "अच्छा, अहीं इजहार लिखौन्ह।"

उमानन्द कहऽ लगलथिन्ह, "गामक छुट्टीसँ दुइ दिन पूर्व होस्टलक विद्यार्थी सभ मीटिंग कए ई निश्चय कैलक जे हमरा

सभ छुआछूत उठा दी आर गान्धीजीक पास एहि आशयक एकटा तार पठा देलेन्हि। ओहि समयमें गान्धीजीक उपवासक तेरहम दिन छलैन्ह। हुनक अवस्था शोचनीय भऽ गेल छलैन्ह। जमोरिन तखनो अपन राज्यक अस्पृश्य प्रजा सभकें मन्दिरमें प्रवेश करबाक अधिकार देम लेल उद्यत नहिं छलाह।"

वैदिक बीचमें टोकि देलथिन्ह। "महामहोपाध्याय, ई सभ त कहियो नहिं सुनने छलिऐक?"

"ई सभ थिकैक बुढ़ियाक फूसि। एकबारवाला येह सभ छापि कऽ लोककें बूड़ि बनबैत अछि।" पण्डितजी कहलथिन्ह।

"आइ कालहुक लोकक की प्रवृत्ति भेल जाइत छैक!" कहि वैदिक उग्रानन्दकें आदेश देलथिन्ह, "आगां बढ़।"

"दोसरा दिन अपराह्नमें बतुलबा धोबी होस्टलमें आएल। ओकरे सँ दू बाल्टी जल मंगावल गेल। चीनीक शरबत बनल। तीन गोटेक अतिरिक्त सभ केओ अपन-अपन इच्छासँ पिबैत गेलाह। बसैठ चानपूराक बटुक प्रमोद सेहो पीब लेल उद्यत रहथि। किन्तु होस्टलक मुनीटर कहलथिन्ह जे ई नाबालिक थिकाह। नीक-अधलाहक ज्ञान एखन हिनका नहिं छैन्ह। अहाँ सभ आग्रह जुनि करियौन्ह। दोसर गोटे छलाह तरौनीक पंडितजीक बालक। शरबतक गिलास हाथमें लेलन्हि; किन्तु हिम्मत नहिं पड़लैन्ह। चमथाक तिवारीजी सेहो तटस्थ

रहलाह। किन्तु मेसमें ककरो नहिं बनलैन्ह। सभ गोटे संसर्गी भऽ गेलाह।"

"तखन आब निर्विवाद भऽ गेल जे अहाँक भातिज स्वयं अपन इच्छानुसार अस्पृश्यक छुड़ल जलमें बनल शरबत पीने छथि?" पण्डितजी महेश्वरझाकें पुछलथिन्ह।

महेश्वर झा चुप्पे रहलाह।

"हिनक अवस्था कतेक छैन्ह?"

"सतरहम समाप्त कऽ रहल छथि।" महेश्वरझा जबाब देलथिन्ह।

वैदिक पण्डितजीक दिस तकैत कटाक्ष कैलथिन्ह, "तखन त सोझे प्राजापत्यं समाचरेत्?"

पण्डितजी माथ झुलबैत उत्तर देलथिन्ह, "तखन आर की?"

महेश्वर झा गाछ परसँ खसलाह। २० कोससँ आशा कए आएल छलाह जे लोअर कोर्टमें नहिं जाकऽ एके बेर हाइकोर्टमें गेलासँ किछु रियायत हैत। भातिजो अपन दोष स्वीकार कैने छलथिन्ह। किन्तु एहि ठाम त फांसीक दण्ड भेटि गेलैन्ह। अपीलोक गुञ्जाइश नहिं।

आँखिमें नोर डबडबा गेलैन्ह। गरा-बकौर लागि गेलैन्ह। दू-चारि मिनट धरि चुप रहि हाथ जोड़ि अत्यन्त विनीत स्वरमें बजलाह, "चारू चरण प्रायश्चित्त बरानिक दियौन्ह, किन्तु एहन कोनो विधान कैल जाओ जाहिसँ शिखा बाँचि

जाएन्ह। नहि त हम सब कहूँक नहिं रहब। रायबहादुरक तरफसँ झूठ गवाही नहिं देलिऐन्ह ताहि कारणें समस्त परोपट्टामें गोलेशी करबा देलन्हि अछि। जैबार धरि रोकवा देलन्हि। आशा छल जे प्रोफेसर साहेब किछु सहायता करताह; किन्तु ओहो तटस्थ भऽ गेलाह। शिखा कटि गेलासँ हमरा सभ सहायक वास्ते दागी भऽ जाएब। तीनटा कन्यादान करैक अछि। बेशी अपनेसँ की निवेदन करू? अपने स्वयं भूत, भविष्य, वर्त्तमानक द्रष्टा छी।"

पण्डितजी गम्भीर भावसँ कहलथिन्ह, "शास्त्रमें सब बातक विधान छैक। किन्तु अहाँ ओकर पालन कय सकब?"

महेश्वरझाक मुँह पर कने हरियरी आबि गेलैन्ह। हाथ जोड़ि कऽ कहलथिन्ह, "जे आज्ञा।"

"दस भरी सोना दान कैलासँ एक चरण प्रायश्चित्त कटि सकैत अछि! शिखा बाँचि जैतैन्ह। एकर अतिरिक्त आओर कोनो विधान नहिं छैक। यैह व्यवस्था झोटहू बाबूकै बालकोकें देलिएन्ह अछि।" पण्डितजी दृढ़ स्वरमें कहलथिन्ह।

महेश्वरझाक मुँह सुखा गेलैन्ह। दस भरी सोना कत पौताह? आइ जे सोनाक दाम छैक कालिह सवाइ भऽ जाइत छैक। सोना बिदेश जा रहल अछि। १००) टाका भरी! पाँचो बिघा खेत बेचलासँ दस भरी सोना नहिं भेटतैन्ह।

पण्डितजीक दिस अत्यन्त दीन भावसँ तकैत निवेदन कैलन्हि, "तिल-कुश-गङ्गाजलोसँ अपने सभ श्रद्धाक विधान

कैने छिऐक आ' जे लोकनि धनी-मानी थिकाह से प्रत्येक मासिओमें शय्या-दान करैत छथि। हम दीन, अधम अपनेक शरणमें आएल छी। हमर उद्धार कैल जाओ। हम दस भरी सोना कत पाएब?"

पण्डितजी हँसैत कहलथिन्ह, "औ महेश्वरझा, धर्मशास्त्रकें अहाँ की बुझि लेलिऐक अछि जे एहन नेनमति करैत छी?"

वैदिक योग देलथिन्ह, "सभ वस्तुक नियम बान्हल छैक। द्रव्यो नहिं खर्च करब। शिखो नहिं कटाएब? त फेर व्यवस्था लेबक हेतु किएक आएल छी?"

उग्रानन्द अपराधीक भाँति एखन धरि एक कोनमें ठाढ़ छलाह। वैदिकक कथा सुनितहिं हुनक मुखाकृति कर्कश भऽ गेल। पण्डितजी ओ वैदिक दुहू गोटेकें लक्ष्य कए बजलाह, "जमीन्दारक बालककें धन छैक। सोना दान कए शिखाक कोन कथा केशो कटैबाक ओकरा आवश्यकता नहिं पड़तैक। आर गरीब? ओकरा हेतु त शास्त्रो अन्धे अछि।"

पण्डितजी हुनका दमसबैत कहलथिन्ह, "सावधान! शास्त्रक निन्दा जे करैछ तकरा गोदान लिखैत छैक।"

उग्रानन्द उग्र होइत जवाब देलथिन्ह, "की लिखैत छैक आर की नहिं लिखैत छैक तकरासँ आब हमरा कोनो प्रयोजन नहिं थिक। हमर पित्ती धर्म-भीरु छथि। हुनके ममतासँ हम अपन व्यक्तित्वक हनन कए अपनेक ओहि ठाम आएल

छलहुँ। मने मने विचारने छलहुँ जे अपनेक जेहन प्रगाढ़ विद्वत्ता अछि, तदनुसारे विचारो उदार हैत। स्वप्न देखने छलहुँ जे—

विद्या-विनय-सम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः॥

एकरा अपने साक्षात् चरितार्थ करब। किन्तु अपनेक शास्त्रमें गरीब अमीर दुहूक हेतु भिन्न-भिन्न नियम अछि। एहन फरेब········।

वैदिक बाधा देलथिन्ह, "देखू, अंगरेजीक कने टुमटाम भऽ गेल अछि त ई जुनि बुझू जे समाज अहाँकें सोभे छोड़ि देत? शास्त्रैक आदेश पर समाजक भित्ति अवलम्बित छैक। हँ, यदि मानी त शालग्राम नहिं त पाथर।"

उग्रानन्द कने टोन मोलायम करैत वैदिकसँ पुछलथिन्ह, "यदि अहाँक शास्त्र कहैछ जे धोबी अस्पृश्य थिक त एहि अनुसारे यवन ओ क्रिस्तान त आओरो अधिक अस्पृश्य भेल?"

"एहूमें कोनो मेष-वृष छैक?"

"त एहि सिद्धान्तक अनुसार महामहोपाध्याय ओ अहाँ दुहू गोटे केवल पातकी नहिं, महा-पातकी छी। प्रत्येक संक्रान्तिक दिन सत्यनारायणपूजामें रायसाहेबक ओहि ठाम दुहू गोटे आनन्द-विह्वल भऽ भोजन करैत छी। हुनक जलकें देवताक चरणामृत जकां पिबैत छी। अहांकें ज्ञात नहिं अछि जे रायसाहेब बारे आम पार्टीमें मुसलमान ओ क्रिस्तानक

बनावल वस्तु खाइत छथि? मुसलमाने परसिओ दैत छैन्ह? चाहो-पानि दैत छैन्ह?"

पण्डितजी गम्भीरे रहलाह। किन्तु वैदिक कहलथिन्ह, "देखू महेश्वरबाबू, धृष्टताक सीमा छैक। आब बेजाय भऽ जाएत। सावधान कऽ दैत छी समाजमें कतहु मुँह देखाबऽ जोग नहि रहब। के पानीमें [illegible] एहि ठाम कोन प्रसंग छैक?"

महेश्वरझा माथपर हाथ धऽ क बजलाह, "हमर कर्मक दोष थिक। आर हम की कहू?" फेर आवाज कड़ा कऽ क भातिजकें डटलन्हि, "उग्र तों चुप रहबह की नहि?"

किन्तु उग्र आओर उग्र भऽ क कहलथिन्ह, "रायसाहेबक भागिन मुसलमान खानसामा रखने छथि। जे सभ धर्मशास्त्री छथि हुनके दासोदास छथिन्ह। बालकक उपनयनमें अपने हाथसँ परसि कऽ हिनका सभकें खोऔने छलथिन्ह। ई लोकनि की अस्वीकार करताह?"

पण्डितजीक क्रोधाग्नि प्रज्वलित भऽ रहल छलैन्ह। सहसा भभकि उठलाह। अपनाकें अत्यन्त कर्कश करैत बजलाह, "महेश्वरझा, हम यदि अहांकें सात पीढ़ी पर्यन्त पतित नहिं कऽ दी त हमरा नामे एकटा कुकुर पोसि देब।"

महेश्वरझा भातिजकें जबर्दस्ती खींच कऽ लऽ जैबाक चेष्टा कैलन्हि; किन्तु भातिज टससँ मस नहिं भेलथिन्ह। पित्तीकें कहलन्हि, "अहांकें एहि समाजमें रहबाक अछि तें धर्मक

प्रपितामह लोकनिक पैर पर खसियौन्ह। किन्तु गायक गोबर गिड़लासँ हमर प्रायश्चित्त हैत एहि घपलामें आब हम नहि पड़ब। प्रायश्चित्ताक अर्थ हम बुझैत छी कोनो केल काजक हेतु हार्दिक अनुताप। धोबीक छुइल जल पीबाक हेतु हमरा कनेको अनुताप नहिं अछि। आइ हिनका लोकनिसँ साक्षात् भेला पर खेद होइछ जे आइसँ दू-चारि वर्ष पहिनहि हम धोबीक जल किएक नहिं पीलहुँ। एहि काजमें हम अपनाकें पतित नहिं बुझैत छी। वरञ्च हमर अन्तरात्मा कहैछ जे हम उन्नत भेल छी। हमरा लेल के कानत? माय-बाप, भाइ-बहिन केओ त नहिंए छथि? हमरा संसर्गसँ अहाँ पतित भऽ जाएब। स्पर्श जुनि करी।" कहैत द्रुत वेगसँ चल गेलाह।

महेश्वरझाकें वकजर मारि देलकैन्ह। दू-तीन मिनट धरि ठाढ़े रहलाह।

वैदिक कहलथिन्ह, "महामहोपाध्याय, आइ साक्षात् प्रमाण भेटि गेल। कलिक चतुर्थ चरण बीत रहल छैक कि नहिं?" महामहोपाध्याय चुप्पे रहलाह।

पूसक दिन फूस। सन्ध्या भऽ गेल छलैक। एही समयमें तीन-चारि गोट बटुक सभक संग दिवाकान्त पहुँचलाह। पण्डितजी अत्यन्त क्रुद्ध होइत पुछलथिन्ह, "कतय गेल छलहुँ हवाखोरी करऽ?"

दिवाकान्त जवाब देलथिन्ह, "गुरुजी, गोरा सभ गेन्द

खेलाए आयल छल। बड्ड भीड़ छलैक। कने खेल देखऽ लगलहुँ।"

गुरुजी दाँत पिसैत कहलथिन्ह, "खेल देखि कऽ दुअन्नी भेटल की चौअन्नी? बूड़ि-ढहलेल रे! देखू त हिनक क्रिया! एहू विद्यार्थी सभकें बिगाड़लाह।"

दिवाकान्त ठिठिया गेलाह। माथ झुका कऽ ठाढ़े रहलाह।

वैदिक बजलाह, "अच्छा, आब आज्ञा देल जाओ। अपनो सन्ध्या-वन्दन कैल जाओ।"

महेश्वरझाक दिस केओ साकांक्ष नहिं भेलाह। कने काल ठाढ़ रहि ओहो अपन रास्ता लेलन्हि।

[३]

पण्डितजी दू घंटासँ पूजा पर बैसल छलाह। दहिना हाथमें माला छलैन्ह। कपड़ाक झोड़ीमें पहुँचा पर्यन्त दहिना हाथकें राखि जप करैत छलाह। दिवाकान्त भानस चढ़ौने छलाह। बटुक सभ बाहर चल गेल छल। एहि अवसर पर बाबू राघवेन्द्रसिंहक सिपाही एक बैलगाड़ीक संग उपस्थित भेल।

"परनाम पंडीजी, ड्यौढ़ीसे राउर लोगिन के भोजनी आइल बा।" सिपाही कहलकैन्ह।

माथ डोला कऽ आशीर्वाद देलथिन्ह। पूजा समाप्त नहिं भेल छलैन्ह; तैं चुप्पे रहलाह। भानसक घर दिस सिपाहीकें संकेत कैलथिन्ह।

दिवाकान्त अपना सभक बखरा लेबऽ लगलाह। बासमती चाउर, राहरिक दालि, कडूक तेल, घृत, नोन, तिलौड़ी, पापरि, कांच केरा, भाटा, मूर, आलू-फुलकोबी, परोर सभ वस्तु उचित परिमाणमें लेलन्हि। कदीमाक चौफक्का ओ दुफक्का टुकड़ी छलैक। पण्डितजी पूजा पर वैसल छलाह, किन्तु ध्यान एही दिस छलैन्ह। कए बेर चुटकी बजा कऽ दिवाकान्तक ध्यान आकर्षित करैक चेष्टा कैलन्हि। दू-चारि बेर दिवाकान्त गुरुजी दिस तकबो कैलन्हि; किन्तु गुरुजीक संकेतक अर्थ नहिं बुझि सकलाह। कदीमाक एकटा चौफक्का टुकड़ी उठा लेलन्हि। सिपाही दोसर-दोसर पण्डित सभक डेरा दिस चल गेल।

पण्डितजी पूजा परसँ उठितहिं भानसक घर दिस द्रुत गतिसँ चललाह। पिछ्‌छे माहुर भऽ गेल छलाह। दिवाकान्तकें दाँत पिसैत कहलथिन्ह, "विद्या दुइ प्रकारक होइछ। एक शास्त्रीय, दोसर लौकिक। शास्त्रीय विद्यामें अहां जे पटु छी से त हमरा बुझले छल। लौकिकोमें अहां एहन विज्ञ हैब से हमरा आइ ज्ञात भऽ गेल। बीस पर इशारा देलिऐन्ह जे दुफक्का लिअ त लेबऽ गेलाह चौफक्का! दुरजी!!"

दिवाकान्त कहलथिन्ह, "गुरुजी, हमरा त दुहूमें कोनो अन्तर नहिं बुझि पड़ल। वरञ्च देखल जाओ यैह पुष्ट छैक। निट्टाह पाकल कदीमा......।"

हुनका अपन कथा समाप्त करबाक अवसर नहिं दऽ पण्डितजी

हुथऽ लगलथिन्ह, "दुरजी! अहां बुड़िपनक चूड़ान्त कऽ देल। यैह ज्ञान लऽक घर-गृहस्थी चलाएब? आइ अहाँ हमर नाक कटा देल।"

पण्डितजी कदीमाक टुकड़ी लऽक विदा भेलाह। दिवाकान्तो हुनका पाछां पाछां चललाह।

वाणीमन्दिरसँ ड्योढ़ी डेढ़ माइलसँ ऊपर छल। पण्डितजी जखन ड्योढ़ी पहुँचलाह त रौदसँ अस्त्यौंत भऽ गेल छलाह। वैशाखक दिन खरा गेल छलैक। आवेशमें छत्ता लेब बिसरि गेल छलाह। ड्योढ़ीमें आइ बड़ हलचल छलैक। बाबू साहेबक कन्याक विवाह छलैन्ह। अनवसरमें पण्डितजीक आगमनक वार्त्ता सूनि बाबू साहेब स्वयं हवेलीसँ बाहर ऐलाह। अत्यन्त विनम्र भावसँ प्रणाम कैलथिन्ह। किन्तु पण्डितजी एहन धुनमें छलाह जे आशीर्वाद देब बिसरि गेलाह। कहलथिन्ह, "बाबू साहेब, सत्ययुगमें धर्मक चारिटा पैर छलैन्ह; त्रेतामें तीन, द्वापरमें दूइ ओ कलियुगमें एक। आइ अहां धर्मक एकमात्र पैरकें तोड़ि देल।"

बाबू साहेब धर्म-भीरु छलाह। सुनितहिं सन्न भऽ गेलाह। आइ कन्याक शुभ परिणयक दिन एवं पण्डितजीक दिससँ एहन अभियोग! कोनो उत्तर नहिं फुरलैन्ह। अपराधीक भांति अपन दोष जनबा लेल पण्डितजीक दिस जिज्ञासु भावसँ ताकऽ लगलाह।

"एहि प्रचण्ड रौदमें जे हमरा हरान कैल गेल अछि ताहि हेतु के उत्तरदायी छैत ? हमरा समस्त तड़बामें फोंका पड़ि गेल अछि ?" पण्डितजी बाबू साहेबकें कहलथिन्ह ।

तावत बहुतो मोसाहेब ओहि ठाम एकत्र भऽ गेल छल । बाबू साहेब ओकरा सभकें दमसा कऽ पुछलथिन्ह जे हवेलीसँ बजाहट गेल छलैन्ह त सवारी नहि किएक गेलैन्ह ? ओ सभ यावत अपने में मुँहामुँही करैत छल कि पण्डितजी गम्भीर मुद्रासँ कहलथिन्ह, "अपने अनेकानेक विद्वानकें निमन्त्रित कैने छिएन्ह । देशक कोन कथा, विदेशोक केओ प्रमुख विद्वान नहि छुटलाह अछि । जकरा हमरासँ शास्त्रार्थ करैक होएन्हि, एखन आबऽ कहियौन्ह । व्याकरण, न्याय, मीमांसा, वेदान्त, साहित्य, छन्द, अलंकार जनिका जाहि विषयमें प्रश्न करैक होएन्हि से करथि । यदि हम परास्त होइ त आइए फांसी लगा कऽ......।"

बाबू साहेबक तीन चारि गोट सम्बन्धी 'हाँ-हाँ-हाँ-हाँ' कऽ उठलथिन्ह । कहलथिन्ह, "आइ शुभ दिनमें एहन अपशब्दक उच्चारण जुनि कैल जाय ।"

बाबू साहेब कहलथिन्ह, "अपनेक पाण्डित्यक परिचय ककरा नहिं छैक ? सरस्वतीक प्रिय पात्र अपनेसँ शास्त्रार्थक धृष्टता के कऽ सकैछ ?"

"तखन हमर अपमान किएक कैल गेल अछि ?" बेंचक

नीचा राखल कदीमाक टुकड़ीकें उठा कऽ हुनका देखौलथिन्ह । एखन धरि ककरो नजरि एहिं पर नहि पड़ल छलैक । ककरो बुझि नहिं पड़लैक जे की बात छैक । बाबू साहेब जिज्ञासु भावसँ हुनका दिस तकलन्हि । "खुटहा टोलक पण्डित लोकनिकें जे कौमुदीओमें लटपटाइत छथि महत्तम दुफका भेटैन्ह ओ हमरा ई लघुतम चौफक्का ?"

बाबू साहेब फक दऽ निसास छोड़लन्हि । कहलथिन्ह, "क्षमा कैल जाओ । केओ फुलतोड़ा गेल हैत तैं ई त्रुटि भेल । हौ रेवती, भण्डार घरमें लऽ जाहुन्ह । अपन पसिन्दसँ बीछ कऽ लऽ लेताह ।"

भण्डारमें तरकारीक प्रदर्शिनी देखि कऽ पण्डितजीक दिग उनटि गेलैन्ह । निरीक्षण करैत-करैत एकटा कदीमा बिछलन्हि । डण्टी धऽक दहिना हाथसँ उठौलन्हि ; किन्तु नहिं उठलैन्ह । दुहू हाथसँ डण्टी पकड़ि कऽ कोनो तरहें भण्डार घरसँ बाहर अनलन्हि । दिवाकान्त भण्डारक मुँह लग ठाढ़ छलाह । झट दऽ अपना हाथमें लए डण्टी पकड़ि कऽ लऽ चललाह । ड्योढ़ीक हातासँ कहुना पछड़ैत पछड़ैत बाहर भेलाह । तरहथ्थी लाल टेस भऽ गेलैन्ह ।

पण्डितजी अत्यन्त प्रसन्न होइत कहलथिन्ह, "औ दिवाकान्त, लघुतम फांक लऽक अहां नीके कैल ; नहिं त ई महत्तम कोना भेटैत ? अधमन्ना अवश्ये हैतैक ?"

"नहिं गुरुजी, तीस सेरसँ ऊपर छैक। एतबामें गोर चालिसेक पण्डितकेँ एक-एक टुकड़ी गेल छैन्ह।" पण्डितजी अत्यन्त प्रसन्न भए फुर्तीसँ आगां बढ़लाह। कने कालक बाद पाछां घूरि कऽ तकलन्हि, "औ, केहन धिम्मर छी? पैर झाड़ि कऽ नहिं चलि होइछ?"

दिवाकान्त झटकि कऽ कने दूर गेलाह। धसगर विद्यार्थी छलाह। तइयो पसेना छूटऽ लगलैन्ह। हाथमें नहिं सम्भरलैन्ह। चारू दिस तकलन्हि। केओ कतहु नहिं छल। हुमचि कऽ कद्दीमा उठा कऽ वामा कान्ह पर रखलन्हि ओ नङराइत पण्डितजीक पाछां पाछां जाय लगलाह।

आतिथ्य-सत्कार

समस्त मैथिल-समाजमें आशुतोष बाबूक ख्याति छल जे अंगरेजीक विद्वान् होइतहुं लोकित नहिं छोड़लन्हि अछि। देशक जे केओ हुनका ओहि ठाम जाइछ तकरा खेषा-पीबाक आग्रह करैत छथिन्ह। कतय डेरा देल अछि; कोनो कष्ट त नहिं अछि; यदि कष्ट हो त निस्संकोच एहि ठाम चल आउ। एहू सभक जिज्ञासा-बात करैत छथिन्ह। एतेक धरि जे होस्टलक फाटक पर्यन्त अरियाति कऽ अतिथिकें विदा करैत छथि। आइकाल्हिक युगमें के एहन उदारता देखबैछ? नीलकण्ठ बाबू, मनोरञ्जन बाबू एवं कृष्णदेवो बाबू त मैथिले थिकाह? किन्तु ककरो बैसहुक नहिं कहैत छथिन्ह। केओ यदि हुनका सभक ओहि ठाम जाइछ त दूरसँ देखितहिं नोकरकें सिखा दैत छथिन्ह 'कह दो साहेब नहीं हैं।' यदि केओ अचानक हुनका लोकनिक समक्ष पहुँचिओ गेल त पुछैछथिन्ह, 'कहिये, क्या चाहते हैं?' बैसहुक नहिं कहैत छथिन्ह। विद्या ओ विनयमें यदि सम्बन्ध नहिं भेल त शिक्षा कोन काजक थिक?

आशुतोष बाबूक एहि ख्यातिसँ सबसँ अधिक पराभव भेल छलैक दरवान बुझावनसिंहकें। दिन-राति जखन-तखन प्रोफेसर साहेबसँ भेंट कैनिहार व्यक्तिसँ ओ आजिज भऽ गेल छल। जे केओ सीट-साटसँ जाइत छलाह, हुनका लोकनिकें रोक-टोक नहिं करैत छलैन्ह; किन्तु साधारण भेष-भूषावाला आगन्तुक ओकरा जिरहसँ परेशान भऽ जाइत छलाह। प्रायः गोटेके एहन व्यक्तिकें स्टडी पिरियड़ (अध्ययन-काल) में होस्टलमें जाए दैत छलैन्ह।

एक दिन अपराह्नमें आशुतोष बाबूसँ भेंट करैक उद्देश्यसँ जखन होस्टलक हातामें प्रवेश करैत छी त देखल जे ओ बराम-दाक सीढ़ी पर ठाढ़ दू गोट सज्जनकें विदा कऽ रहल छथिन्ह। कने आगां बढ़लहुं। एगोटे अर्धवयस्क छलाह। दोसर विद्यार्थी बुझि पड़लाह। आशु बाबू कहैत छथिन्ह, "अहा, किछु जलपान नहिं कैल? एना कोना जाएब?"

शिष्टताक भाव देखबैत महाशयजी कहलथिन्ह, "ई त हमर घर थिक। तदुपरि अपनेक आज्ञा। आबइ छी गणेश।"

सर्वनाश! आशु बाबूक त एहन Miscalculation नहिं होइत छल? गत पांच वर्षसँ हुनकासँ परिचित छी। आइ धरि गलती त नहिं भेलैन्ह! किन्तु संयोग!

भेंट कैनिहार लोकनिक दुइटा श्रेणी कैने छलाह। जे अंगरेजी चालिक रहथि, हुनका सभकें बरामदाक सीढ़ी पर

आबि जलखई किंवा भोजनक आग्रह करैत छलथिन्ह। जनिका सभसँ भयक आशंका बुझि पड़ैन्ह, हुनका सभकें फाटकसँ बाहर आबि कऽ पुछैत रहथिन्ह, "बिनु भोजन कैने चल जाइत छी। ई त उचित नहिं होइछ। पनपियाइयो नहिं कैल?" वाक्चातुर्यसँ ककरो ई नहि बुझा दैत छलथिन्ह जे ई आग्रह केवल शिष्टाचारक पालनेक हेतु अछि। किन्तु फाटकसँ बाहर ऐला पर आग्रह स्वीकार करबाक साहस प्रायः एखन धरि ककरो नहिं भेल छलैन्ह।

सम्प्रति उपस्थित विषयमें आशु बाबूकें कनेको दोष नहिं देल जा सकैछ। आगत महाशय साफ धोती ओ कुरता पहिरने छथि। हाथमें छड़ी छैन्ह। करिया रंगक डोरी लागल एकटा वड़ियो जेबीमें छैन्ह। सोनहला चश्मा लगौने छथि। कथा मांजल होइत छैन्ह। डीलडौल, मुखाकृतिसँ मध्य-वित्त परिवारक बुझि पड़ैत छथि।

आग्रह मानितहिं आशु बाबूक मुँह सुखा गेलैन्ह। किन्तु फेर तुरन्तें सम्हरि गेलाह। दुहू गोटेकें घरमें बैसा कऽ पुनः बाहर ऐलाह।

"अहा-हा, आब, आब। तों त आइकाल्हि आकाश-पुष्प भऽ गेल छ। ओह, की करू? महा पराभवमें पड़ि गेल छी।" हमरा देखितहिं कहलन्हि।

अएठा कऽ पुछलिऐन्ह, "की बात छैक?"

"अच्छा, सब कहबौ। कने थम" कहि

"रौ रामजुलुम! सुन, इम्हर आ"

मनीबैगसँ एकटा चौअन्नी बाहर कऽ ओकरा हाथमें देलथिन्ह। "पा भरि कचौड़ी जल्दी लऽ आन।"

"घिस्सा चरिअन्नी नहिं चलत।" रामजुलुम चौअन्नी फिरावऽ लगलैन्ह।

"रातिए सिनेमामें हमरा रेजकी आपस देलक अछि आ' तों कहै छे नहिं चलत?"

"सिनेमामें देलक अछि त की हलुआइ लइए लेत?"

"तोहर दलीलसँ त हम आजिज भऽ गेलहुँ। अच्छा, जो एक पाइ बट्टा दिअहिक।"

"हमरासँ ई चरिअन्नी नहिं चलत। देबक हो त दोसर दिअ। नहिं त भूठे किए हरान करब?"

"अच्छा, तहूँ एक पाइ बिड़ी पिबऽ लेल लिहै।"

"एक आना बट्टासँ कम नहिं लागत। की कहै छी?"

"अच्छा, तोहर एहिमें दू पाइ भेलौक। अच्छा, आब जल्दी जो।"

मुँह फुफुआन कैने रामजुलुम किछु दूर गेल छल कि प्रोफेसर साहेब शोर पाड़लथिन्ह, "कचौड़ी मधुर दुहू मिला कऽ लिहै। जिलेबी पनतुआ दुहू आधा-आधा। आर सुन, 'जिलेबी टटका बनल होमक चाही।"

रामजुलुम मुँह भारी करैत जबाब देलकैन्ह, "तीने आनामें कोन-कोन वस्तु लाएब?"

"रौ, सभ वस्तु मिला कऽ लिहै। तोरा खाली बकठेठी सुभैत छौह।

कुपत होइत कहलन्हि, "आइ कोन प्रत्यवायक फेरमें पड़लहुँ।" "आइ धरि त अपनेक Calculation (अनुमान) में कोनो त्रुटि नहिं भेल छल। आब की करब? गर पड़ै ढोल त बजौनहिं कुशल।"

आशु बाबू बजलाह, "हँ, हँ। तोरा त एहन मौका पर मजाक सुभिते छौह। एकौंसमें रहैत छह। केओ नहिं पहुँचैत छौह तैं?"

कोनो बातक स्मरण भेलैन्ह। रामजुलुम एखन सदर दरबाजाक गुम्मजसँ पार होइत छल। ओकरा शोर पाड़ि कऽ कहलथिन्ह, 'रौ, सुन, सुन। तरकारी कने बेशी कऽ लऽ लिहै।"

ढंगा हरिपुरक खबास रामजुलुम सम्प्रति बबुआनी दरबारसँ इस्तिफा दऽक आएल छल। प्रोफेसर साहेबकें गमने छलैन्ह। ठेसीसँ कहलकैन्ह, "पाइ लागत। लबादुआमें आब हलुआइ तरकारी नहिं दैत छैक।" फेर लगले देबारक ओठ भऽ गेल।

"जुलुमा त जुलुम करतै अछि! महा राड़ थिक। की करू?"

हम कहलिऐन्ह, "रामबुझावन ओकरा बुझा ने किए दैत छैक ? हम त जखन जखन अबैत छी, ओकरा दरबानेक संग बैसल चून-तमाकू खाइत देखैत छिऐक।"

[२]

"अपने बड्ड कष्ट कैल। हमरा लोकनिक त ई घरे थिक। आर कोनो दिन होइतैक त हर्ज छलैक ?" अतिथि हमरा सभकें घरमें पैसैत कहलथिन्ह।

शान्त, संयत होइत प्रोफेसर साहेब अत्यन्त विनम्र भावसँ कहलथिन्ह, "अहा-हा, कष्ट की ? हमरा लोकनिक परस्पर परिचय भेल एहिसँ बाढ़ि आनन्दक विषय आर की हैत ? कने बैसल जाओ। हम ऊपरसँ तुरन्ते चल अबैत छी।"

एकातमें हमरा बजा कऽ कहलन्हि, "तों तावत हिनका लोकनिक चार्ज लैह। हम प्रिन्सिपलकें फोन कऽ दैत छिऐन्ह जे देवता सभक सुश्रूषामें लागल छी। ऐत्रामें कने विलम्ब हैत।"

अतिथि महाशयसँ परिचय भेल। ओ० टी० रेलवेक कोनो स्टेशनमें स्टेशन मास्टर छथि। घरोक बेश सुखित लोक छथि। विद्यार्थी हुनक भातिज छथिन्ह। दुखित पड़ि गेलाक कारणें फरवरीमें परीक्षा नहिं दऽ सकलाह। सम्प्रति सप्लिमें-टरी परीक्षामें द्वितीय श्रेणीमें मैट्रिक पास कैलन्हि अछि। सायन्स पढ़बाक उत्कट इच्छा छैन्ह। सब ठाम सीट भरि गेल छैक। केवल एहि कालेजमें दू चारिटा सीट खाली छैक तैं

आशु बाबूक [illegible] [illegible] [illegible] आएल छथि। भातिज गणेश बेश फरिन्दा बुझि पड़लाह। [illegible] कहलन्हि, "देखल जाओ, प्रोफेसर साहेबक [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छलिऐन्ह। किन्तु एहन उदार, उपकारी महानुभावक [illegible] आइ हम धन्य भऽ गेलहुँ। यैह सत्तकाँ [illegible] [illegible] जैबाक निश्चय कैने छलहुँ। किन्तु [illegible] [illegible]। [illegible] जे बिनु पनपियाइ करौने [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] लोक जखन एहन आत्मीयता [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कोना उठबि-यौन्ह ? मने मने [illegible] [illegible] व्यवहार मेलासँ गणेशक हकमें [illegible] [illegible]। [illegible] भेटब तखन ध्रुवे बुझू।"

कथाक प्रसंग चालुए छल कि आशु बाबू पहुँचि गेलाह। चचा-भतीजा दुहू गोटे धड़फड़ा कऽ उठलाह। भतीजा टेबुलसँ टकड़ा गेलाह। टेबुलक कोर पर जे सुराही राखल छलैक से नीचा खसि पड़लैक। शीशाक गिलास सेहो चूर चूर भऽ गेल। अतिथि भातिजकें डांटऽ लगलथिन्ह, "जाह, तों नेने रहलह। कनेको अवगति नहिं भेलोह। समस्त घर पानि-पानि कऽ देलह, कोन तरहे—"

हम बीचमें बाधा दऽक कहलिऐन्ह, "कोनो क्षति नहिं। ई सभ त फुटबाक वस्तुए होइत छैक। पूजाक छुट्टीमें जखन विद्यार्थी सभ गाम जाएत त की एको गोटे अपन सुराही

लऽ जाएत ? दुमजिला परसँ जखन बजाड़ऽ लगैत अछि त सड़क पर फुटल सुराहीक ढेर लागि जाइछ ।"

कन्छिया कऽ आशु बाबूक दिस तकलहुँ । मुद्रा गम्भीर भऽ गेल छलैन्ह । किन्तु आन्तरिक भावकें दबौने छलाह । हमरा दिस देखि कऽ कने मुस्कुरैलाह । तावत जुलमो पहुँचल ।

"रौ, तोरा पैरमें जांत बान्हल छलौक जे दू घंटामें आएल छें । तों दिन-दिन धिम्मर भेल जाइत छें । एहि चालिसँ नौकरी नहिं बचतौक ।" आशु बाबू चेतावनी दैत कहलथिन्ह ।

"घिस्सा चरिअन्नी चौकवाला दोकानमें नहिं चलल । गुदरी पर अढाइ आनामें कतेक बात बतकही भेला पर हलुआइ लेलक" कहैत ओ एकटा दोना टेबुलपर राखि देलक । फेर बाजल, "बाढ़ि ऐलासँ तरकारीक चलानी बन्द भऽ गेल छैक । बड्ड महग कऽ देलकैक अछि । कचौड़ीक संगे लबादुआमें नहिं देलक । पाइयो नहिं बांचल तैं नहिं लेलहुँ" कहैत जल लैबाक उद्देश्यसँ बाहर चल गेल ।

बुझि पड़ल गोर सातेक छोट छोट कचौड़ी ओ तीन चारिटा बतासा लाएल अछि ।

आशु बाबूकें कने संकुचित जकां देखलिऐन्ह । हुनका प्रोत्साहन देबाक उद्देश्यसँ कहलिऐन्ह, "आइकालिह त हलुआइ सभ जुलुम कऽ रहल अछि । कतेको लोककें खाइतहिं झिनझिनयाक बीमारी भऽ गेल छैक । हमरा ओहि ठाम त यदि

केओ अबैत छथि त हम मगहिया बालिक ओड़हे दैत छिऐन्ह । खैबामें बुझू त मालपूए होइछ ।"

"अपना देशमें ओड़हामें त एखन किछु बिलम्ब छैक", अतिथि बजलाह ।

"अहा-हा, त एकटा अवश्ये खायल जाओ । रौ जुलमा ! महा धिम्मर थिक । कोनो काज एकरा करऽ कहियौक त—" एतबे में रामजुलुम मेससँ चारिटा पैच-पैच थाड़ी लऽक पहुँचल ।

"चारिटा ओरहा लऽ आन । मरीच-नेमो सेहो लऽ लिहें ।"

"अहाँके एक बेर कहैत की भेल छल ? फेर आध कोस हम जाउ ?"

मुँह लटकौने रामजुलुम एकटा एकन्नी लऽक चल गेल ।

"हौ तों कने हिनका लोकनिकें जलखइ करबहुन्ह" आशु बाबू हमरा आदेश देलन्हि ।

"नहिं, नहिं । अपने व्यस्त जुनि होइ" । अतिथि हमरा कहलन्हि । "हौ गणेश, तोहीं थाड़ीमें जलखइ लगाबह । आइ हमरा लोकनि प्रोफेसर साहेबकें एतेक कष्ट देलिऐन्ह !"

"एहि में कष्ट की ? हम त कोनो सत्कार नहिए कऽ रहल छी । ई अपने घर बुझू ।" आशु बाबू कहलथिन्ह ।

आत्मीयताक एहि प्रदर्शनसँ अतिथि गदगद भऽ गेलाह । कहलथिन्ह, "कोन दिन हमर सौभाग्य हैत जे अपने हमरा ओहि ठाम जा कऽ चरणधूलि देब ।" विश्वास भऽ गेलैन्ह जे

सायन्समें हुनक भातिजकें सीट अवश्य भेट जैतैन्ह। आओरो विनम्र होइत कहलथिन्ह, "अपने सन पैघ व्यक्तिक एहन लौकितसँ आइ हम धन्य भऽ गेलहुँ।"

हम कन्छिया कऽ आशु बाबूक दिस देखल। भीतरसँ महा आकृष्ट बुझि पड़लाह। किन्तु मुखाकृति एखनो शान्त छलैन्ह।

हम अतिथिकें कहलिएन्ह, "ई त कोनो लौकित नहिं भेल? मिथिलाक संस्कृतिक विशेषता छल आतिथ्य-सत्कार। ओ आदर्श आब कत रहल? हमरा सब त ओही परम्पराक सामान्य रक्षा कऽ रहल छी।"

आशु बाबूक दिस देखल। मुखाकृति तिक्त भऽ गेल छलैन्ह।

"हौ काका, बतासा त फुटबे नहिं करैत छैक।" भातिज दुहू तरहथ्थीमें बतासा दबा कऽ समस्त शक्ति लगा कऽ फोड़ैक प्रयास कैलन्हि। मुँह लाल भऽ गेलैन्ह। किन्तु नहिं फुटलैन्ह।

एतबहिमें रामजुलुम बाजारसँ आपस आयल। "अहाँके त कहने छलहुँ? पाइमें दूटा ओरहा नहिं देलक।" कहि मुँह बना लेलक।

आशु बाबू विरक्त होइत बजलाह "महा फक्की थिक! काल्हिए मेसक बाबाजी पाइमें दूटा क लाएल छल। बेश पुष्ट दाना।" रामजुलुमक दिस देखि, "फेर एहि ठाम ठाढ़ भेल तों की करैत छे? जे दइछौक से लऽ आन।"

एम्हर भातिज तरहथ्थीमें बतासा फोड़ऽ में असफल भए बतासाकें टेबुल पर राखि रोलक हूड़ासँ चुरैत छलाह। खटाङ सँ एकटा बतासा कने टुटैत आशु बाबूकें कनपट्टीमें लगलैन्ह। कछमछा कऽ रहि गेलाह। भातिजो सिठिया गेलाह। पित्ती हुनका डाँटऽ लगलथिन्ह। हम कहलिऐन्ह, "ओ त जानि क ई काज नहिए कैने छथि? संयोग।" आशु बाबूकें पुछलिऐन्ह, "टिंगचर लाबू की?"

कहलन्हि, "नहिं, बताह भेल छह की?" किन्तु कनपट्टीमें साटी उखरि गेल छलैन्ह।

अतिथिकें कहलिऐन्ह जे आब जलखइ कऽ लेल जाय। तीनटा थाड़ीमें दू-दूटा कचौड़ी राखि देलिऐन्ह आर एक-एकटा बतासा। कहलिऐन्ह, हम कचौड़ी नहिं खाएब। ओड़हा आब दियौक। आशुओ बाबू कहलन्हि जे ओहो ओड़हे खैताह। अत: कचौड़ी-बतासा पित्ती एवं भातिजक आगांमें राखि देलिऐन्ह। विद्यार्थी बुझि पड़ल भुखाएल छलाह। पहिल बेर दूटा कचौड़ी बतासाक फड़ीक संग गटाकसँ गिलि गेलाह। दोसर बेर बतासाक अधबार कचौड़ीमें लपेट कऽ मुँहमें धैलन्हि। दैव-संयोग गरमें अटकि गेलैन्ह। गील जाएक उद्देश्यसँ दू-तीन बेर जोरसँ मुँह लाड़लन्हि। नहिं त नीचा उतरैन्ह आर ने मुँहमें अबैन्ह। जलक हेतु छटपटैलाह। सुराही त पहिनहिं फूटि गेल छल। जुलमा जल लाबऽ गेल

छल ; किन्तु एखनो ओकर पता नहिं ! दौड़ कऽ बाथरूमसँ एक लोटा जल आनि देलिऐन्ह । पित्ती खिसिया कऽ कहलथिन्ह, "एहनो अनुचित काज केओ करैत अछि ? दाँत नहिं छौह ? कुरकुरा कऽ खैतह ।"

बरण्डामें आबि कऽ देखल कारी कारी घटासँ आकाश भरि गेल अछि । बुझि पड़ल जे आध घंटाक अभ्यन्तरें मूसलधार वृष्टि शुरू हैतैक । डेरा एहि ठामसँ लग नहिं छल । पैदले आएलो छलहुँ । आशु बाबूकें कहलिऐन्ह जे आब आज्ञा देल जाय । आर कोनो दिन आएब । ओ कहलन्हि, "बिनु ओड़हा खैने नहिं जाए देबौह । मानि लैह, कने देरियेसँ जैबह । किन्तु तें की ?"

"से त ठीक । किन्तु अजुका रातिक वर्षा नहिं थमतैक ।"

"रे, मानि लैह जे नहिंए थमतैक । किन्तु ताहि लेल त कोनो क्षति नहिं ? पानिमें त नहिंए भिजबह ?"

तारतम्येमें पड़ल छलहुँ कि जुलमा ओड़हा लऽक पहुँचल । दुद्धी बालि छलैक । हम दाँतसँ काटि कऽ खाय लगलहुँ । किन्तु आशु बाबूकें अतिथिक समक्ष दाँतसँ काटि कऽ खैबा में संकोच भेलैन्ह । नौहसँ दाना छोड़ाबऽ लगलाह । दाना पुष्ट नहिं छलैक । नहिं छुटलैन्ह । तमसा कऽ जुलमाकें कहलथिन्ह, "महा भुसकौल छे । कोनो काज तोरासँ नहिं भऽ सकैत छौह । पुष्ट दानाक बालि तोरा नहिं भेटलौह जे एहन अनने छे ?"

जुलमा मुँह लटकौने बाजल, "दुहू बात त अहीं कहैत छी । कालिह जुआएल बालि आनि देलौं त पेट चलऽ लागल । कहलौं दुधगर बालि लाबऽ के । आइ कहै छी दुधगर किए अनले । कोन हुकुम मानू ?"

अतिथि अत्यन्त धैर्यसँ दाना छोड़बैत बजलाह, 'कोनो हर्ज नहिं । बेश छुटैत छैक ।"

आशु बाबूकें दाँतसँ काटि कऽ ओड़हा खैबाक अभ्यास छलैन्ह । सम्भव ई हुनका देशक आचारक प्रतिकूल बुझि पड़लैन्ह । अतः अतिथिक समक्ष दाँतसँ खेबामें संकोच भेलैन्ह । कोनो तरहें एक-दूटा दाना छोड़ा कऽ खाए लगलाह । लगभग एक तेहाइ जड़िक दिससँ खेलन्हि । आर धैर्य नहिं रहलैन्ह । फेंकि देलन्हि ।

बुझि पड़ल जे वर्षा आरम्भ होममें आब वेशी विलम्ब नहिं छैक । कहलिऐन्ह, "बैसल की करब ? सिनेमामें Lost Horizon खेल भऽ रहल छैक । खूब सुन्दर खेल छैक ।"

आशु बाबू कहलन्हि, "भादोक रातिमें कत दिशा ज्ञान हेरैबह ? एही ठाम बैस । गप्प-सप्प हैतैक ।"

अनुमान कैल खर्चसँ डेराइत छथि । मने मने जोड़ल फर्स्ट क्लासक दू टिकट ३=) में हैत । कहलिऐन्ह, "ई खेल आइए भरि छैक । गत सालक खेल सभमें एकरा प्रथम पुरस्कार भेटल छैक ।'

ओ चुप्पे रहलाह। हम विचारल जे किछु खर्च हैत से बरु हो। कहलिऐन्ह, "हमरा आइकालिह पास भेटल अछि। तैयार भऽ जाउ। आब बेशी समय नहिं छैक।"

अतिथि नम्र भावें उठबाक उपक्रम कैलन्हि। कहलथिन्ह, "ई अपनेक विद्यार्थी छथि। यावत अपनेक कृपा नहि हैतैन्ह, तावत हिनका सायन्समें सीट नहिं भेटतैन्ह। अपने सन समाज-हितैषीसँ हम आर कोन निवेदन करू?"

"अच्छा, ताहि लेल चिन्ता जुनि करी। हमरासँ जे भऽ सकत, कऽ देबैन्ह। स्टीमर त अपनेकें एक बजे रातिमें भेटत?"

"यैह सतबज्जी स्टीमरसँ"—अतिथि वाक्य पूरो नहिं कैने छलाह कि बिजली बहुत जोरसँ कड़कल। आशु बाबू ओ अतिथि दुहू गोटें अपन अपन कान मूनि लेलन्हि।

"एक बजेक स्टीमरसँ जाएब। हमरा थोड़ेक कोइला मँगैबाक अछि। कोना कोइला अबैत छैक तकर किछु हाल कहू।" आशु बाबू कहलथिन्ह।

आत्मीयताक एहन प्रदर्शनसँ अतिथि बैस गेलाह। हम पुछलिऐन्ह, "त सिनेमा नहिंए जाएब?"

"रे, कने बैस। अगुताइ कोन बातक छैक? एखन त आरम्भो होममें १५ मिनटक विलम्ब हैतैक? शुरू भेलो पर त किछु काल अण्टे-सण्टे वस्तु देखबैत छैक?"

बुझि गेलौं जे ई नहिं जैताह। हमरा इतस्ततः करैत देखि बजलाह, "हौ तों बड्ड खुरलुच्ची छह। एको क्षण सञ्च भऽक बैसबह से तोरा नहिं होइछौ?"

सन्ध्याक धूमिल आकाश अन्धकारमय भऽ गेल। मूसल-धार वृष्टि होम लागल। देखिते-देखिते ८-१० मिनटक अभ्यन्तरे समस्त कम्पाउण्ड जलसं भरि गेल। बुझि पड़ल आइ ई वृष्टि नहिं थमत। हम आशु बाबूकें कहलिऐन्ह, "अपने सभ तावत गप्प-सप्प करू। हम कने भगवती बाबूक ओहि ठाम फोन कऽ दैत छिऐन्ह जे मेसमें कहबा देथिन्ह हम भोजन नहिं करब।"

"रे, बैस। हड़बड़ाएल छह किए? दुइयो मिनट जे स्थिरसँ बैसबह से तोरा......?"

हम जएबाक एक आओर कैफियत दैत कहलिऐन्ह, "मेसमें बाबाजीके सेहो कहि देबैक जे आइ एक विशिष्ट अतिथि आएल छथि। बढ़ियाँ जकाँ वस्तु सभ तैयार करत।"

अतिथि अत्यन्त विनम्र होइत बजलाह, "नहिं, नहिं। हमरा लोकनि यैह वर्षा थमतहिं चल जाएब। हमरा सभक हेतु कोनो प्रयास नहिं कैल जाय।"

हम गम्भीर भावें कहलिऐन्ह, "से कतहु भ सकैत अछि? एक त जे वर्षा आइ थमबे नहिं करत। दोसर, बिनु भोजन कैने त एहि ठामसँ केओ नहिं जाइत छथि? हँ, अपने यदि..... ?"

आशु बाबूक दिस देखल। किछु बजलाह नहिं। किन्तु भाव एहन सन देखौलन्हि जे मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त।

अतिथि कहलन्हि, प्रोफेसर साहेबक नामसँ देशमें के अपरिचित छथि ? विद्या ओ विनयक एहन समन्वय ? आइ हिनक सौजन्यसँ कृतकृत्य भऽ गेलहुँ। किन्तु क्षमा कैल जाय। आर कोनो दिन हैतैक। आइ भोजनक विन्यास नहिं कैल जाय। आज्ञा भेटौ।" कहलिऐन्ह, "तेहल्ला लोककें आज्ञा देबाक कोन अधिकार छैक ? पुछियौन्ह यदि जाय देथि त......?"

"की बिनु भोजन कैनहिं जाएब ?" आशु बाबू अपन अभ्यस्त शैलीमें पुछिलथिन्ह। किन्तु स्वरमें धीमापन रहैन्ह।

"अपनेक आज्ञासँ हम बाहर कथमपि नहिं छी। किन्तु...।" हम कहलिऐन्ह, "मेघमें कोना जाएब ? एहि ठाम मेसमें १० बजेक अभ्यन्तरे लोक भोजन कऽ लैत अछि।"

"अच्छा, अपने सभक जे आज्ञा।"

सुनितहिं आशु बाबू स्याह भऽ गेलाह। हम लगले ऊपर कॉमन रूममें चल गेलहुँ। बाबाजीकें ओही ठाम बजाकऽ सब बात बुझा देलिऐक। सब वस्तु फर्स्ट क्लास होमक चाही। कहलक, "अभी त मेघमें कुच्छो न मिलत।" कहलिऐक, "जतसँ होउक तोरा सब वस्तु लाबऽ पड़तौक।"

पिंगपौंग खेलाइत खेलाइत ६॥ बाजि गेल। वर्षाक झमझमाहट एखनो कमल नहिं छल। दरबान पठा कऽ बाबाजीसँ

पुछबौलिऐक जे आब कतेक देरी छैक। खबरि पठौलक जे सब वस्तु तैयार भऽ गेल अछि। खाली चॉप ओ कटलेट में कने विलम्ब हैत।

नीचा ऐलहुँ। आशु बाबू कहलन्हि, "हौ जुलमा त एहन राड़ थिक जे एखन धरि ओकर कहूं पता नहिं! आब हम कान ऐंठल जे एहन नौकर राखी।"

अतिथि सहानुभूति देखबैत बजलाह, "बबुआनक खवास बुझल जाओ जे भोसाहेबे होइछ।"

"कने मेसमें खबरि दऽ दहौक जे हमरा सभक भोजन ठीक करत", आशु बाबू हमरा कहलन्हि।

कहलिऐन्ह, 'सब ठीक अछि। किन्तु जाइत जाइत झटकसँ भीज जाएब। कही त एही ठाम लाबऽ कहियैक।" अतिथिकें पुछलिऐन्ह, "अपनेकें कोनो आपत्ति त नहिं हैत ?

"बेशी दूर छैक की ?" ओ पुछलन्हि। मेस पहुँचैत पहुंचैत आधा भीज गेलहुँ। बाबाजी किछु भूजि रहल छल। बुझि पड़ल खस्सीक करेजी भुजैत अछि। सोन्हगर सुगन्ध बाहर धरि अबैत छल। तरफर कऽ आसनी ओछाबऽ लागल। ओकर घर गोरौल स्टेशन लग छलैक। अपन भाषामें बाजल, "आइ बाबू सब चुलहाई आउर दून्नू नोकरके आठे बजेसे हरान कैले छथिन्ह। घरे घरे थरिया पहुँचा रहल हे। खिलानेमें तनी देरी हो जाएत से माफ करब।"

हमरा सभक थाड़ीमें माछक एक-एक टा चॉप ओ मांसक कटलेट दऽ आलूदम परसि गेल। चॉपक एक टुकड़ी मुँहमें दऽक हम आशु बाबूकें कहलिऐन्ह, "आइ संयोगसँ हम फीस्टे (भोज) क दिन पहुँचलहुँ। चॉप बेश बनौलक अछि।" किन्तु हुनका कनेको उल्लास नहिं देखलिऐन्ह। मोमदार कचौड़ी, पुलाव, मांस, करेजीक भुजिया, मीठ दही। एक केर बाद दोसर आएल। भोजनमें भातिजक मनोयोग देखबा जोग छल।

अतिथि आशु बाबूकें कहलथिन्ह, "भोजनक ई विन्यास! सेहो दू घण्टाक अभ्यन्तर!! अपने धन्य छी!!!"

हम कहलिऐन्ह, "आतिथ्य-सत्कार त अपना देशक परम्परा थिक। ई त अपनेक हेतु कोनो विशेष प्रयास नहिंए कैलन्हि अछि? एहि ठाम त जे केओ अबैत छथि, सभक एक रंग सम्मान कैल जाइत छैन्ह। बाबाजी, आब रसगुल्ला उठाउ।"

अतिथि दूटा स्पंजी रसगुल्ला मुँहमें देलन्हि। लगले गलि गेलैन्ह। कहलन्हि, "से ठीके। पिन्टू सन रसगुल्ला आर कतहु तैयार नहिं भऽ सकैछ। लहेरियासरायमें कचहरीक मोड़ परक दोकानोमें बनल रसगुल्ला एक बेर खैने छलहुँ। किन्तु कहाँ ई कहाँ ओ?"

प्रोफेसर साहेबकें कहलिऐन्ह, "बाबाजी, आइ Form में अछि। आन आन दिनक भोजमें त एहन सफाइ नहिं देखबैत छल?"

ओ बजलाह, "आइ कालिह लगले लगल फीस्ट करऽ लागल अछि। बोर्डर सभ एतेक टाका कहाँसँ देलक?" कहलथिन्ह, "एहन रसगुल्लाक चोट पर बोर्डर सभ दू चारि टाकाक चिन्ता थोड़े करैत अछि?" "बाबाजी, थोड़े पुलाव ओ मांस विद्यार्थीकें दियौन्ह।" विद्यार्थी जे नमो नारायण कऽ आङ्गुरसँ मतलब छलाह से एखनो माथ मोड़नहिं रहथि। आगू थालीक दिस संकेत करैत बाबाजीकें कहलथिन्ह, 'इम्हर आब पपीताक चटनी दियौन्ह।' अतिथिकें आग्रह कैलिऐन्ह, 'कोनो वस्तु अपनेक हेतु आनल जाओ?' कहलन्हि, 'कोनो वस्तु आब नहि चाही। प्रोफेसर साहेबक ई सौजन्य आजन्म स्मरण रहत।"

"सौजन'क मिनहा बिनु धोती नेनहिं अपने कऽ देलिऐन्ह से अपनेक उदारता थिक। अच्छा कने दही लेल जाओ। मांसकें खूब पचबैत अछि।"

भातिज वारण करैत बजलाह, "ककाकें रातिमें खाँसी होइत छैन्ह। दहीक विशेष आग्रह जुनि करियौन्ह।"

"अत्यन्त मीठ दही छलैक। किन्तु जखन अपनेकें...। अच्छा, एकटा रसगुल्ला लेल जाओ।" अतिथि कहलन्हि, "अपनेक आग्रह कोना टारू? किन्तु आब पेटमें एको रत्ती जगह नहिं अछि।" आशु बाबूकें कहलिऐन्ह, "अतिथि त अपनहिक थिकाह। आब स्वयं आग्रह करियौन्ह।"

ओ अपन आन्तरिक आक्रोशकें दमन करैत बजलाह, "कोन वस्तुसँ अपनेक आग्रह करू ? एहि झमाझम वर्षामें बजारोसँ वस्तु लाबक उपाय नहिं छैक। एकटा...।"

एलबडिमें बावाजी बाजल, "बजारमें भजुआ आम खोजैत खोजैत हार गेल। हुकुम होय त चार-चार ठो कटहर के कोआ परस दीं। कचकचहा कोआ बड़ा अच्छा है।" कहलिऐक, "रसगुल्लाक बाद कटहरक कोआ ? राम ! राम !! रसोमलाइ चलाउ।"

हमरा सभकें भोजन पर बैसला लगभग एक घंटा भऽ गेल छल। जखन हम अतिथिकें रसोमलाइक आग्रह करैत छलिऐन्ह कि एकटा शाहाबादी विद्यार्थी मेसक बाहरेसँ गर्द करैत "क्या बाबाजी, आपने मुझे किस खेत की मूली समझा है ? सब बोर्डर के कमरे में खाना पहुँचाया है और हम घंटे भरसे चिल्ला रहे हैं ?" हमरा सभ जाहि घरमें खाइत रही ओहीमें हनहनाइत प्रवेश कैलक। प्रोफेसर साहेबकें देखि कऽ कने सहमि गेल। ई ओकरा कहलथिन्ह, "कोई हर्ज नहिं। यहीं बैठिये। हमलोग उठ ही रहे हैं।"

बाबाजी ओकरा आगूमें सुखाएल रोटी, मरचाइक बुकनीसँ चमचम करैत आलूक रसदार तरकारी ओ परोरक तेलही भुजिया राखि देलकैक। पाछां एक बाटी दालिओ आनि देलकैक। आशु बाबूकें आब इन्द्रजाल साफ देखाइ देलकैन्ह।

मेससँ फिरैत काल हम अतिथिकें पुछलिऐन्ह, "पान त अपने खाइत हैब ?"

कहलन्हि, "भला, एहूमें कोनो पूछक कथा ? "ई त अपना देशक अलंकार थिक।"

आशु बाबू दस धाप पाछुए छलाह। ठहरि गेलहुँ। अतिथि कने आगां बढ़ि गेलाह। आशु बाबूकें कहलिऐन्ह, "जैं एतेक ऋण, त एक कैञ्चाक घृतो कीन। बुझावनसिंहकें सिनेमामें पठा देल जाय। पान लऽ आनत।"

वृष्टि थमि गेल छलैक। कहलन्हि, "You are making a capital of my adversity ?" जावत कोनो उत्तर देत छिऐन्ह कि देखल, भातिज गणेश रास्ता परक कजरी पर पिछड़ि कऽ तड़ाक् दऽ पीठक भरे खसि पड़लाह। बुझि पड़ल पीठमें वेशी चोट लगलैन्ह। कपड़ा सभ लेढ़ा गेलैन्ह।

कोनो दिससँ सुनलामें आएल, "कुछ परवाह नइखे बहादुर ! अब मेघबा जरूर छूटी।"

पित्ती खिसिया कऽ कहलथिन्ह, "तोरा कनेको अवगति नहिं भेलौह। लोक सँभारि कऽ पैर रखैत अछि की ? एही लुरिए कालेजमें पढ़बह ?"

कहलिऐन्ह, "साइत-कुसाइत के देखलक अछि ? कपड़ाक बन्दोवस्त भऽ जैतैन्ह।"

अतिथि धर्म चेतलन्हि। कहलन्हि, "बाकसमें कपड़ा अछि। स्टेशनपर बदलि लेताह। स्टेशन त बेशी दूर नहिए छैक ?"

साढ़े ग्यारह बजैत छल। अतिथि जएबा लेल आज्ञा मँगलथिन्ह। हम कहलिऐन्ह, "दरबानकें पठबैत छी। लगले सिनेमासँ पान लऽ अबैत अछि।"

अतिथि बजलाह, "प्रोफेसर साहेबक अनुकम्पाक भारसँ हम दबल जाइत छी। पानमें विलम्ब भऽ जैतैक। मेघ-बुन्नीक समय थिकैक। आब आज्ञा देल जाओ।"

अतिथि विदा भेलाक पश्चात् हम कहलिऐन्ह, "एहिमें हमर कोन दोष ? हम त कहने छलहुँ सिनेमा चलू। अपनहिं कहल जे भादोक रातिमें दिग्भ्रम भऽ जाइत छैक ?"

× × ×

लगभग ६ वर्षक पश्चात् ओहि दिन आशु बाबूसँ भेंट करऽक मौका भेटल। देखल, दू गोटे पहिनहिंसँ बैसल छथि। किछु कालक बाद ई लोकनि प्रस्थान कैलन्हि। रविक दिन। खैबा-पीबाक बेर छलैक। आशु बाबूकें जिज्ञासा कैलिऐन्ह, "कोनो आग्रह-बात नहिं कैलिऐन्ह ?" ओ हँसैत उत्तर देलन्हि, 'न गङ्गदत्तः पुनरेति कूपम्।'

पूर्णियासँ धमदाहा

पूस मासक इजोरिया पक्ष। शनि दिन। बेर लुकझुक करैत अछि।

मधुबनीक पड़ाव पर आबि कऽ देखल जे छोटका लॉरी मोसाफिरसँ ठसाठस भरल अछि। जिज्ञासा कैलिऐक जे बड़का लॉरी आइ नहिं जैतैक की ? ज्ञात भेल जे आइ सबेरे बाटेमें भङठि गेल छैक। पौने पाँचे बजे लॉरी खुजबाक समय छलैक। विचारल जे हमरा कारणे मोसाफिर सभकें कष्ट हैतैक। एहि ठाम आबि कऽ अन्दाज कैल जे 'धमदाहा मेल' में जएबा लेल कमसँ कम ६० मोसाफिर तैयार छथि। डेढ़ टनक लॉरी। लगभग ३० गोटे भीतर ठुसा गेल छथि। जाड़क समय छैक नहिं त गर्मीसँ कतेको लोक बेहोश भऽ जाइत। चपरासी कहलक जे गाड़ीक बैटरी लाबक हेतु ड्राइवर खजांचीहाट गेल अछि। अनुमान कैल जे डेरासँ जलखइ कऽ ऐबा लेल पर्याप्त समय अछि। साइकिल उठा कऽ जएबाक उपक्रम करैत छी कि कण्डक्टर कहलक, 'हुजूर, लॉरी छूटमें आब देरी नहि छैक। रौह

दरोगाजी आबि रहल छथि। काफा मीरगंज इनकायरीमें जैताह।' डेरा जेबाक विचार छोड़ि देल। दरोगाजी कखन औताह, ज्ञाते नहि छल। अगिला बर्थ पर हमर चपरासी दिनेमें एक टा सीट रिजर्व कैने छल। देखल जे एगोट भीमकाय सज्जन पहिनहिं सँ बैसल छथि। एखने सँ धकमधुक्क करबाक कोनो प्रयोजन नहिं देखल। सटले फलवालाक दोकान छलैक। एक स्टूल पर बैस रहलहुँ। समय कटनाइ पहाड़ भऽ गेल। साढ़े पाँच, पौने छौ, औ! नहिं ड्राइवरक पता आर ने दरोगाजीक दर्शन!! आइ चाहो नहिं पिउने छलहुँ। एहि पड़ाव पर नीक चाहो भेटब दुर्लभ। आर एतेक लोकमें दोकान पर चाह कोना पीब? एही तारतम्यमें छलहुँ कि देखल मोसाफिर सभमें लॉरीक छतपर जैबा लेल तरा-उपरी होम लगलैक। देखिते-देखिते १०-१२ गोटे छत पर चढ़ि गेल। कण्डक्टर कहलक जे अब लॉरी खुजतैक। जिज्ञासा कैलिएक, 'दरोगाजी आबि गेलाह?' ओ कहलक, 'खबरि पठौने छथि जे आइ नहिं जैताह।'

कोनो तरहें बैसलहुँ त ड्राइवर एगोटेसँ रेकातोकी आरम्भ कैलक। ओ ओकरा दहिना तरफ Wrong Side में बैस गेल छलथिन्ह। ड्राइवर कहलकैन्ह, 'उतरि जाउ। नहिं त हम गाड़ी नहिं चला सकैत छी।' ओ कहलथिन्ह, 'कोनो कोनो दिन एहन संयोग भऽ जाइत छैक। नुआ-वस्त्र हम किछु ने अनने छी। जाड़क रातिमें एहि ठाम कोकिया कऽ मरि जाएब।' ड्राइवर

जवाब देलकैन्ह, 'अहाँ मरि जैब ताहि लेल हम एतेक लोकक जान खतरामें दियौक? उतरू। हमरा अतिकाल भऽ रहल अछि।' ओ सज्जन उतरि कऽ फेर मडगार्ड पर जाकऽ बैस रहलाह। गाड़ी स्टार्ट भेल। तखन ६॥ बजैत छल। जैखन गाड़ी चलल कि चारि पाँच गोटे फानि कऽ पौदान पर लटिक गेलाह। छत पर बैसल समुदाय चीत्कार कैलक, "महावीर बजरंगीकी जय!" हमहु बजरंगीकें स्मरण कैल। २१ मोसाफिरक जगहमें ४६ गोटे जाइत छलहुँ।

आधो माइल नहिं गेल हैब कि "ड्राइवर साहब, कने रोकू, रोकू। हमर एकटा मोटरी धर्मशालेमें छुटि गेल!" एगोटे पाछाँसँ चिकरि कऽ बजलाह। लॉरी दस माइलक स्पीडमें जाइत छल। लगले ठाढ़ भऽ गेल। जे व्यक्ति हमरा बगलमें बैसल छलाह, चौकन्ना भऽ क बजलाह, 'अरे राम! राम!! हमर बस्ता त चम्पालालक दोकानेमें छुटि गेल। मोकदमाक सब मिसिल ओहीमें अछि। रे ठकबा! महा प्रत्यवाय थिक। कोनो काजक लोक नहिं थिक' कहि उतरऽ चाहलन्हि। हुनका जगह देबऽ लेल हमरो उतरऽ पड़ल। ठकबा छत पर बैसल छल। मुँह झुझुआन सन कैने फेर मोटरक पड़ाव दिस घुमल। एगोटे कहलथिन्ह, 'हमर वस्तु-जात मोख्तार साहेबक बासामें राखल अछि। गाड़ी कने आगाँ बढ़ा लिअ। तावत ओहो लोकनि आबि जैताह।' मोख्तार साहेबक बासा लग जखन लॉरी पहुँचल त

ज्ञात भेलैन्ह जे मोख्तार साहेब घर बन्द कय राधा बाबूक ओहि ठाम गेल छथि। ड्राइवरकें अनुनय-विनय करऽ लगलथिन्ह। अहाँ त अपन लोक थिकहुँ। हम दौड़ले जाऽ क कुञ्जी लऽ अबैत छी।' ड्राइवर सम्भव हुनक अपेक्षित छल। कण्डक्टरकें टिकस चेक करऽ कहलकैक।

२० मिनट समय व्यतीत भेल। किएक केओ आपस आओत ? सवा सात बाजि गेल छल। ड्राइवरकें कहलिऐक जे आइ की लॉरी पुर्णियासँ बाहर नहिं हैतैक ? ओ कहलक, 'लोक पिण्डोग कऽ दैत अछि। ककर बात उठबियौक ? एके ठाम रहक अछि।' खिसिया कऽ जोर जोरसँ हार्न देम लगलैक। एगोटे पुछलथिन्ह, 'यदि देरी होइक त पेशकार साहेबसँ मोकदमाक तारीख बुझि आबी। आब अदालतसँ आबि गेल हैताह।' कण्डक्टर चिचिया कऽ बारण कलकैन्ह। लॉरी जखन स्टॉट भेल त देखलहुँ पौने आठ बाजि गेल छल। इच्छा भेल जे उतरि कऽ आपस जाइ। जाड़-ठाढ़क रातिमें कत जैब ? किन्तु लगले स्मरण भेल जे काल्हि सबेरे तारीख देने छिऐक। सैकड़ो आदमी आओत। रातिए नहिं पहुँचि गेलासँ बहुतो लोकक़ें कष्ट हैतैक।

लगभग दू माइल पश्चिम गेल छी कि कारी कोशीक एही पार लॉरी फेर ठाढ़ भऽ गेल। देखल, आगां हिमालयक चढ़ाइ छैक। रास्ताक गिट्टी पर्यन्त उखरि गेल छैक। कण्डक्टर छत पर बैसल मोसाफिर सभकें उतारऽ लगलैक। एक-दू गोटे बाजल,

'खेबो दी ! भसिआएलो जाइ। हमरा सभ की मोफतमें जाइत छी ? पहिने जे भीतर में बैसल छथि हुनका लोकनिकें उतारियौन्ह।' धर्मवट उपस्थित भेल। भीतर जे मोसाफिर गरमा कऽ बैसल छलाह, उतरऽसँ इन्कार भेलथिन्ह। प्रतिवाद कैलथिन्ह, 'हमरा सभ दुपहरेसँ मोटरमें एहिना बैसल छलहुँ ? जे सभ लोक पाछां आबि कऽ जबर्दस्ती छत पर बैसल अछि, तकरा सभकें उतारू।' कोनो उपाय नहिं देखि ड्राइवर फेर लॉरी स्टार्ट कैलक। मोमेन्टम (गति) लाबक हेतु कने पाछां हटा कऽ लॉरी कें फर्स्ट गियरमें दऽ देलकैक। ऐकसिलरेटरकें पूरा दबबैत दबबैत यावत दस डेग आगां बढ़बैत अछि कि कट-कट-कटाक ! बुझि पड़ल जे बेयरिंग नहिं त क्राउन पिनियन अवश्ये टूटि गेलैक। ड्राइवर तैखन लॉरी रोकलक। मशीनक परीक्षा कैलक। बांचि गेल छलैक। केवल एकटा तार दोसरासँ घर्राऽ नेने छलैक।

ड्राइवर छत पर बैसल मोसाफिर सभक दिस झुकल। "उतरैत जाउ अहाँ सभ। हौ राजवंशी, हिनका लोकनिकें कैंचा आपस कय दहुन्ह।' किन्तु केओ किएक उतरत ?

हमरा बगलमें बैसल भवानीपुर-राजधामक सज्जन कहलथिन्ह, "एहन चोरी आर सिनाजोरी त कहियो नहिं देखल। जबर्दस्ती मोटरो पर चढ़ब ! चलहु नहिं देबैक !!' छत परसँ एगोटे जबाब देलकैन्ह," एतेक पिंगल छटैत छी त स्वयं नहिं

किए पहिने उतरि जाइत छी ? चारि मन बोझ कम भऽ जैतैक।" ओ चुप भऽ गेलाह।

देखल जे आब समस्या जटिल भऽ रहल अछि। उतरि कऽ बाहर ऐलहुँ। भीतर बैसल मोसाफिर सभकें कहलिऐन्ह, 'आइ रातिमें एही ठाम रहबाक विचार अछि की ?' एके कथामें लोक उतरऽ लागल। छतो परसँ लोक ससरल। तीन गोट वृद्ध सेहो उतरि गेलाह। कहलिऐन्ह, 'बैस जाउ। अहाँ सभक बोझसँ गाड़ी नहिं रुकतैक।' भवानीपुर-राजधामक सज्जन डटले रहलाह। विचारलहुँ जे हिनका उतरऽ लेल बाध्य कैलासँ बहुत विलम्ब कऽ देताह। लॉरी खुजबामें फेर देरी भऽ जैतैक। छोड़ि देलिऐन्ह।

चढ़ाइक बाद पुलक ओहि कातसँ जखन लॉरी स्टार्ट होम लागल त पाछांसँ एगोटे चिचिया कऽ बजलाह, "ड्राइवर साहेब, कनेक थमल जाओ! झलारीक पण्डितजी नदी दिस गेल छथि।" घड़ी देखल। पौने नौ बाजि रहल छल। ड्राइवर सम्भव कथा नहिं सुनलक। लॉरी आगां बढ़ौलक। "रोकू, रोकू। पण्डितजीकें रतौन्ही होइ छैन्ह।" पाछांसँ केओ चीत्कार कैलक। हम विचारलहुँ, पण्डितजी बेचारे किए मारल जैताह ? यावत ड्राइवरकें रोकऽ लेल कहिते छिऐक कि छत परसँ एकटा बोरा झन्न दऽ नीचा खसि पड़ल। बुझि पड़ल कोनो ठठेरा वर्त्तन-वासन नेने जाइत अछि। लगले कण्डक्टरसँ ठठेरा त्वश्राहश्र

करऽ लागल। कहलकैक, 'आइ जे एकोटा वर्त्तन फूटल अछि त हम देखैत छी तों धमदाहासँ आगां लॉरी कोना लऽ जाइत छ!' तावत एगोटे पण्डितजीकें धरा कऽ लऽ अनलथिन्ह। लॉरी फेर चलल।

झाझा मीरगंजमें देखल लगभग २० गोट मोसाफिर सड़क पर ठाढ़ छथि। दू गोटे उतरलाह। चारि गोटे कोनो तरहें चढ़लाह। आओर गोटे ड्राइवरकें कहऽ लगलथिन्ह, "औ खूबलाल भाई, हम सब की एही ठाम रहब ? नुओ फट्टा किछु नहिं अछि।"

विचारल जे आब एही ठाम उतरि जाइ। किन्तु ज्ञात भेल जे राजक मैनेजर साहेब टूरमें बहरायल छथि। तथापि मनमें भेल जे कोनो तरहें राति बीच कचहरीमें रहि जाइ। सवेरे साइकिलक कोनो प्रबन्ध भइए जैतैक। १२ माइल जैबामें कतेक देरी लागत ? यावत हम एही तारतम्यमें रही कि लॉरी खुजि गेल।

झाझासँ पश्चिम होइतहिं मोटर लचका भऽ गेल। सड़कक हांचामें मोटरक ई मचकी मोसाफिरकें बहुत कम ठाम भेटतैन्ह। ड्राइवर पांच माइलक स्पीडमें हंकैत छल। किन्तु चक्काक स्प्रिंग एकदम सटि जाइत छलैक। बुझि पड़ल खाहें स्प्रिंग टुटतैक नहिं त टायर अवश्ये बर्स्ट हैतैक। मोटरक झोरानमें पेटो दुखाय लागल। ओहू पर खाली पेट। चाहो पीबाक मौका नहिं भेटल छल।

साढ़े चारि माइलक मचकीक रास्ता पार कऽ मोड़सँ आगाँ खालसाक लॉरी भेटल। भिनसरसँ खराब भेल पड़ल छलैक। कने आगाँ बढ़ाकऽ ड्राइवर लॉरी रोकलक। कन्डक्टरकेँ लऽक खालसाक मदतिमें चलल। पांच-सात गोटे आओरो ओकरा दुहूक संग संग गेलैक। घड़ी देखल पौने दस बाजि रहल छल। ३ घंटामें १३ माइलक सफर! छतो परसँ किछु लोक उतरि कऽ खालसाक मोटर दिस गेल। भीतरसँ दू चारि गोटे बुझि पड़ल नदी दिस गेलाह। १० मिनट, १५ मिनट, २० मिनट, आधा घंटा! मने मने विचारलहुँ जे आइ कि समस्त राति बाटेमें रहब? पछबा कने कने सिहिकलैक। गरमें मफलर लपेटल। अगिला बर्थ परक तेसर मोसाफिर अकबरपुरक एक प्रौढ़ व्यक्ति छलाह। बजलाह, "आइ ई मोटरवाला अपटी खेतमें हमरा सभक प्राण लेत। ई पछबा आब लोककें ऐंठ देतैक।"

लोक बैसल-बैसल थाकि गेल। ड्राइवर एखनो खालसेक मोटरमें लागल छल। मोसाफिर सभ मनमानी करैत छथिन्ह त ओ अपन सहयोगी खालसाकें मदति किएक नहिं देतैक? एतबहिमें सुनल, "हइ ओस्ताद! हइयो!!" खलसाक लॉरी ठेला रहल छलैक। इजोरिया शेष भऽ रहल छल। चारू दिस पटपट मैदान। समस्त मैदानमें 'हइ ओस्ताद! हइयो!! गूंजि उठल। हुड़-हुड़-हुड़-हुड़ङ। खालसाक लॉरी स्टार्ट भऽ गेलैक। दुइ-तीन

मिनटसँ लगातार हार्न दऽ रहल छलिऐक। ड्राइवर आबि कऽ कहलक, "की करियौक? बेर-विपत्तिमें यदि हम ओकरा सहायता नहिं देबैक त हमरा फेर कोना पूछत?" गोस्सासँ मिजाज चूर छल। किन्तु चुप्पे रहलहुँ।

लॉरी करीब आध माइल गेल हैत कि एगोटे ऊपरसँ बाजल, "हौ मामा, हमर जूता ओही गाड़ीमें छुटि गेल! रोकू, रोकू।" तीन चारि व्यक्तिक समवेत स्वरसँ हल्ला भऽ गेल।

अकबरपुरक रायजी कहलथिन्ह, "खालसा अपने लोक थिक। जूता कतहु चल जाइत अछि? कालिह लऽ लेब।" कन्डक्टरो चिचिया कऽ कहलकैक जे जूता कालिह भेटि जाएत। एखन अतिकाल भऽ रहल छैक। ड्राइवर आध माइल पाछू हांकि कऽ नहिं लऽ जा सकैत छल। घुड़बो जोग रास्ता नहिं छलैक। ड्राइवर गाड़ी रोकि देलक; किन्तु एंजिन बन्द नहिं कैलकैक। जूतावाला व्यक्ति आर ओकरा संगे एगोटे आओर कूदि कऽ खालसाक लॉरी दिस दौड़ल। ड्राइवर एहन सन क्रम कैलक जे भागिनकें विनु नेने आगां नहिं बढ़त। आब हमरा धैर्य नहिं रहल। ड्राइवरकें कहलिऐक, "खबरदार! आब जे गाड़ी रुकल त एकर नतीजा एकदम खराब हैतौह।" ड्राइवर मुँह लटका लेलक। मने मन खिसिया कऽ ३० माइलक स्पीडमें गाड़ी हंकलक। रास्ता एहन खराब। बोझ एतेक बेशी। छत पर मोसाफिर। स्थितिक ओकरा कनेको ज्ञान नहिं रहलैक।

मोरिकलसँ लॉरी आध माइल गेल हैत कि छत परक मोसाफिर सभक चीत्कार सुनाइ पड़ल। 'आस्ते आस्ते चलाउ। लोक खसऽ खसऽ पर अछि। पछुबोक कनकन्नीसँ लोक बेकल भऽ रहल अछि'। ड्राइवर चालि कने मद्धिम कैलक। तथापि औसत २० माइल रहैक। टायर बर्स्ट करतैक ताहि में हमरा कोनो सन्देह नहिं रहल। विचारलहुँ जे किं साइत टायर बर्स्ट करा कऽ हमरा छकावऽ चाहैत अछि। बुझैत अछि जे यावत स्टेपनिंग लगावत लगावत तावत ओकर भागिन आबि जैतैक। धमदाहा कोशीक घाटसँ लगभग २०० गज इम्हरे रही कि दागल बन्दूकक आवाज जकां शब्द सुनल। अगिलका एकटा टायर बर्स्ट भऽ गेल छलैक। जे हो, धर्म चेतलक। किछु दूर इम्हरे टायर बर्स्ट भेलासँ त मोसाफिर सबकें चढ़ावऽ उतारहिमें एक घंटा समय लागि जैतैक। घाट पर त प्रायः सब मोसाफिर उतरिए जाइत छथि। नाव पर लॉरी पार होइत छैक। लोक बांसक लचका परसँ पार होइछ।

एगारह बाजि रहल छल। विचारल जे पैदले डाक बँगला चल जाइ। दुइए माइल त छैक। किन्तु फेर गौर कैल। पहिया बदलऽमें कतेक समय लगतैक ?

सब लोक उतरि गेल ; किन्तु भवानीपुर-राजधामक सज्जन ओ मोगलिया पुरन्दाहाक दूगोटे उतरबे नहिं करथिन्ह। कहलथिन्ह, '१।।) टाका किराया कोन बातक देल अछि ? यैह चढ़-

उतर करऽ लेल ?' ड्राइवर जैक लगौलक। पहिया कने उठलैक ; किन्तु फेर ऊपर मुँहे टसकबे नहिं करैत छलैक। रायजी व्यंग्य कैलथिन्ह, 'बजरक धरी त अगेमें बैसल छथि त चक्का उठो कोना ?' हिनका लोकनिकें बुझा सुझाक कोनो तरहें उतारलहुँ। दोसर चक्का लगैत ओ लॉरी पार होइत आध घण्टा लागि गेलैक।

मोसाफिर भेड़ियाधसान भऽक लचकाक दिस चलल। पछुवाक संग रजनीगन्धाक सौरभ घाट दिससं अबैत छल। आगां बढ़िकऽ देखैत छी जे घाट पर एक छोट फुलबारी छैक। इजोरिया डूबि गेल छल। टॉर्चक रोशनीमें देखल जे लाल-पियर-हरियर-चितकाबर अनेको प्रकारक क्रोटन अछि। हजारा गेन्दा, चन्द्रकला, लंकेश्वर ओ ब्लैक प्रिन्स अपन अपन सौरभसँ उद्यानक हवाकें मधुमत्त कऽ रहल अछि। अंगरेजी फूल क्रिसन्थिमम सेहो अपन सुगन्धक प्रसार कऽ रहल अछि। शेफाली (हरसिंगार) क फूल टपटप चुबि रहल अछि। लोभ भेल जे एक-दूटा फूल तोड़ि ली। फुलबारीक मालिक दृष्टिगोचर नहिं भेलाह। विचारल, एहन चोरी नहिं धराइत छैक। किन्तु जहिना आगां बढ़ैत छी कि एकटा झबरा कुकुर भांउ भांउ कऽ उठल। आगां बढ़बाक साहस नहिं भेल।

डाक बंगला पहुँचैत पहुँचैत १२ बाजि गेल। अर्दली फूदनझा चौकीदारकें शोर करैत करैत थाकि गेल ; किंतु चौकी-

दारक कोनो चूलचालि नहिं पौलिऐक। डाक बँगलाक दुह कमरा भीतर सँ बंद छलैक। एकटासँ टिमटिमाइत बत्तीक कनेक प्रकाश बाहर अबैत छल। बुझि गेलों एहिमें कोनो सज्जन ठहरल छथि। दोसर कमराक दरबाजामें बाहरसँ लात मारलिऐक। तीन चारि बेरक आघातक पश्चात् दू गोट आदमी ओही में सँ बहराएल। एगोट छल डाकबँगलाक चौकीदार ओ दोसर बगलक कमरामें ठहरल मलेरियाक डाक्टरक नौकर।

अर्दली लालटेन मंगलकैक। चौकीदार जबाब देलकैक जे एकेटा लालटेन एखन निदग्ग छैक जे डाक्टर साहब नेने छथि। अर्दली पुर्णियासँ टेबुल लैम्प नेने आयल छल। कहलक जे लॉरीवाला काठक बाकसकें ऊपरसँ उतारैत काल खसा देलक तैं किरोसिन तेलक बोतल फुटि गेल अछि। तेल भेटलासँ लालटेनक फेर कोनो काज नहिं पड़त। चौकीदार कहलक जे ओवरसियर साहेब एक वर्षसँ डिस्ट्रिक्ट बोर्डसँ लिखा-पढ़ी कऽ रहल छथि; किंतु तेलक चिट्ठा एखन धरि नहिं आएल छैन्ह। बाजारमें लोककें चिट्ठा पर तेल भेटैत छैक। विचारल जे टॉर्चसँ कोनो तरहें काज चलि जायत। हंगामाक की प्रयोजन? फूदन झा आब वर्त्तन मंगलकैक। चौकीदार कहलकैक जे एकटा लोटा एवं एकटा फुट्टा गिलासक अतिरिक्त आर कोनो वर्त्तन डाक बँगलामें नहिं छैक। ओवरसियर साहेब बोर्डसँ

लिखा-पढ़ी करैत करैत थाकि गेल छथि। मलेरियाक डाक्टर साहेब नज्जू मियांक ओहि ठाम खाइ छथि।

देखल जे एहि ठाम [illegible] काज नहिं चलत। पूसक पहाड़ सन राति उपवास कऽ काटब असम्भव प्रतीत भेल। चौकीदारकें कहलिऐक, 'जेना होइ, भानसक एक टूटा वर्त्तन तोरा लाबहि पड़तौक।' एकटाकिया एकटा नोट ओकरा हाथ पर धऽ देलिऐक। औङ्घाइत छल। आब कने चेष्टगर बुझि पड़ल।

करीब १० मिनटक पश्चात एकटा ओझिया लाएल। फूदन झाकें कहलिऐन्ह, 'की करब? चटपट [illegible] बना लिअ। दू-चारिटा आलुओ अदहनमें दऽ देबैक। चोखा बनि जाएत।' फूदन झा कहलक जे स्पिरिटक बोतल फूटि गेल अछि। चौकीदारकें कहलिऐक, 'जारनक बन्दोवस्त करह।' ओ बाजल, 'बाजारमें जारन नहिं भेटैत छैक। हमर घरो एहि ठामसँ कोस भरि अछि।' महा पराभवमें पड़लहुँ। शीतक वायुसँ जठराग्नि आर द्विगुन जोरसँ प्रज्वलित भेल छल। जल्दी जल्दीमें किछु डेरोसँ बनबा कऽ नहिं लऽ लेने छलहुँ। मोरंगिया हवा! खाली पेट! शरीरक रक्ते सुखा जाएत!!! कने काल तारतम्य कैलाक बाद निश्चय कैल जे उमाकान्त बाबूकें खबरि दिऐन्ह। 'विकट पाहुन' बरनिक बुझथु। आत्मानं सततं रक्षेत्। देखल, एक बजैत अछि। फेर विचार बदलि गेल। एतेक रातिमें

हुनका उठा कऽ कष्ट देब की उचित हैत ? चौकीदारकें जायसँ मना कऽ देलिऐक। किन्तु नारायण ! नारायण ! हमर ई उपवास त देवाय धर्माय कोनोमें नहि लिखल जाएत ? किन्तु उपाय की ?

फ़ुदनझा पुछलक, "मोदीकें उठा कऽ मधुर आनू ?" चौकीदारो हमर वस्तु-जात देखि कऽ प्राय: अनुमान कऽ लेने छल जे एहि ठाम आमदनीक बेश जरिया अछि। कहलक, 'हुजूर जोगा साहु रसगुल्ला बहुत बढ़ियाँ बनबैत अछि। ओकरा उठबैत छी।" कहलिएक जे हलुआइक मधुर हम नहि खाइत छी।

चपरासी ओछायन कऽ देलक। सूतऽ जाइत छी कि सुनलहुँ, दोकानमें केओ मस्त भऽ क गबैत अछि—

'जो न पिये गांजे की कली,
उस लड़के से लड़की भली।'

कने हँसी लागि गेल। चौकीदार दौड़ल आबि कऽ कहलक 'हुजूर जोगा साहु एखन जगले अछि। खूब बढ़ियाँ दही बनबैत अछि। यदि हुकूम हो त......।"

कहलिऐक कोनो हर्ज नहिं। यदि टटका होइ त एक सेर लऽ आन। कने कालक बाद फ़ुदनझा ओ चौकीदार आपस आबि कऽ कहलक जे एक सेर नहि बेचऽ चाहैत अछि। कहैछ जे कटलासँ पानि छुटि जाएत। लेबाक हो त समूल छाँछ लऽ जाउ। मनीबैगसँ एकटा पचटकिया नोट बाहर कऽ चपरासीकें

देलिऐक। यावत ओ दुहू गोटे कने आगां बढ़ैछ कि जोगा साहुक दोसर सुभाषित सुनल।

'बम शंकर, दुश्मन को तंग कर।
आमद को बढ़ाकर, खरचे को कम कर।'

खुमारिक अवस्थोमें जोगा साहुक तिजारती बुद्धि देखि कऽ आश्चर्य भेल।

लगले चौकीदार ओ फ़ुदनझा एक भरल छाँछ दही लऽ क पहुँचल। जोगा साहु कहलकैक जे प्रात खलिया छाँछ लऽ क आएब। तौल कऽ बाद कऽ देब। बाकी-बकाया तकरो हिसाब तखने हैत। टेबुल पर छाँछ धऽ क दुहू गोटे जल लाबक हेतु इनार पर गेल। हम ओछायन पर पड़ले रहलहुँ। एही बीच दू टा बिलाड़ नहि मालूम कतऽसँ आबि टेबुल पर छड़पि कऽ लड़ऽ लागल। टॉर्चक बत्ती मुँह पर देलिऐक। ओओरो भयंकर भए गेल। यावत एहि उपद्रवकें शान्त करैक उपाय सोचिते छी कि छाँछ भूमि पर खसि कऽ चूर चूर भऽ गेल।

मन विषादसँ भरि गेल। दुहू बिलाड़ खपागप्प दही खा रहल छल। मुँह पर टॉर्च देलासँ करिक्का हमरा दिस गुर्रायल। रिवॉल्वर भरले छल। किन्तु अपने स्थिति पर हमरा हँसी लागि गेल। विचारलहुँ, एहि दू बजे रातिमें रिवॉल्वरक फायरसँ समस्त वस्तीमें आतङ्क फैल जैतैक। थाना सटले छैक। हो-हल्ला। चोर ! डाकू !! सेहो दुइटा बिलाड़क हेतु ?

धरमपुर परगनाक दही। सेहो जाड़कालाक ! बिलाड़ दुहू गटागट गिर रहल छल। एक आंगुर मोट छाली देखि ईर्ष्या भेल। फेर सन्तोष कैल। विचारल,

> अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम।
> दास मलूका कहिं गये, सबके दाता राम॥

फ़दनझा बिलाड़क काण्ड देखि अवाक भऽ गेल। मुसहरीक डण्टा लऽ क बिलड़वा पर हमला कैलकैक। एकटाकें लगलैक। दुहू गुरगुराइत पड़ाएल।

चौकीदार टेबुलक नीचा खसल दही ओ फुट्टा बरतनक टुकड़ी सभकें हटावऽ लागल। हम ठाढ़ भऽ क पंखाक कपड़ा दैवात् घरै छी कि एकटा बादुर खूब जोरसँ कनपट्टीमें झपट्टा मारलक। पंखा डोलितहिं एक, दू, तीन चारि, बाप रे बाप! समूचा घर बादुरे बादुर भऽ गेल !! चौकीदार कहलक, 'हुजूर ई सभ बहुत दिनसँ पंखामें घर बना लेलकैक अछि। अपने मुसहरीमें सूति रहल जाओ। सब फेर पंखामें चल जैतैक।"

कम्बल ओढ़ि कऽ सुतबाक चेष्टा कैलहुँ। भितरक ठंढइसँ कतहु निन्द आवे ? तथापि आँखि मोड़ि कऽ पड़ले रहलहुँ।

चुट्ट दऽ किछु काटि लेलक। टॉर्च बारि कऽ देखैत छी एकटा उड़ीस कम्बलमें सटल अछि। बुझि पड़ल जाड़े दुब्बर भऽ गेल अछि। ओकरासँ छुट्टी पावि फेर पड़ि रहलहुँ। अरे

राम ! राम !! एकटा, दूटा, तीनटा, चादर [illegible] देखैत छी त सोड़हीक सोड़ही ! विचारल प्रार्थना करिऐन्ह [illegible] रातुक अनशनसँ हमरा अपने शरीरक रक्त सुखा रहल [illegible]। [illegible] लोकनिकें कतयसँ भोजन देबैन्ह ? अरे बाप ! चुट्ट [illegible] काटि लेलक। मोट ऊनी मोजा पहिरने छलहुँ। बुझल [illegible] हमलाक सामना करब असम्भव हैत। विचारल टेबुल पर [illegible] रही। बादुरक स्मरण भेल। फेर साहस नहिं पड़ल।

ई पहाड़ सन राति कोना काटब ? तीन बजैत छल। फ़ूदन झा मोटर गराजमें पोआरमें घुसियाएल फोंफ कटैत छल। विचारल उठा दैत छिऐक। किन्तु एहिसँ फल की हैत ? नहि उठौलिऐक। बरण्डामें ओछायन कए पड़ि रहलहुँ। कोनो तरहक ओट नहिं छल। मोरंगिया उतरंग हवा सन्न सन्न लगैत छल। समस्त ओढ़ना-ओछायन लगले हिम भऽ गेल। अरे राम ! आइ भोर नहिं हैतैक की ? राति आगां बढ़बे नहिं करैछ ? बारम्बार घड़ी देखऽ लगलहुँ। ३-४५, ३-५०, ४-५, ४-१५। भेल जे कोनों पुस्तक पढ़ी। निन्द त अबिते नहिं छल। किन्तु बत्ती कहाँ ? टॉर्च कतेक काल चलत ? उठि कऽ टहलऽ लगलहुं। शरीरमें कने गर्मी त आओत ? डाकबंगलाक बरंडासँ सड़कक मोड़ पर्यन्त २०-२५ गज छलैक। दू-तीन सै बेर चक्कर देल। किन्तु राति त आओर नमरिते बुझि पड़ल। ओवरकोट हिम भऽ गेल। घड़ी देखल साढ़े चारिए बाजल छल ! दू घंटा राति कोना

कटत ? टहललासँ भूख ओओर तेज भऽ गेल। पेटमें बग्घा लागऽ लागल।

कुर्सी पर आबि कऽ बैस रहलहुँ। गाछ सभक दिस नजरि दौड़ौलहुँ। पीपर, बड़, जामुन, आम। हाय राम ! अमरुदोक एकोटा गाछ नहिं ? खिन्न भऽ बैसले छी कि सुनल,

'बम महादेव, टन गणेश।
नकद भेजो, हर-हमेश॥'

स्वर परिचिते जकाँ बुझि पड़ल। पूब दिससँ आएल छल। त की जोगा साहु जगले अछि ? विचारल, आइ हमहीं बोहनी कऽ दिएक। नकदे-नकदे टाका मेटतैक। प्राण जाइत अछि। एहना स्थितिमें बाजारक सधुरे सही। सड़क धरि बढ़लहुँ,। दोकान सभक दरबाजा बन्द छलैक। फेर विचारलहुँ जे जोगा साहु यदि स्वप्नावस्थामें हो ? बनिया त स्वप्नो देखैत अछि नकदे मालक ? दरबाजा खटखटबिऔक ? यदि चोर चोर कऽ घोल करै त ? हिम्मत नहिं पड़ल।

टहलबाक उद्देश्यसँ उत्तर मुँह भ गेलौं। करिका ओवर-कोट पहिरने रही; तथापि कनकन्नी हाड़ धरि पहुँचि रहल छल। अस्पतालकें बाम दिस छोड़ैत आगां बढ़लहुँ। कुहेस एकट्ठा भऽ रहल छल। देखलिऐक एक ओसारामें घूर तर बैसल दू गोटे फुसफुस कऽ रहल अछि। कान पाति कऽ सुनलहुँ। एगोटे कहै छैक, "दरोगाजी गस्तीमें बाहर भेल छथि।"

दोसर कहलकैक, "आइ सार रमकिसुने बुझताह। घरेमें सूतल सूतल चौकीदारी करैत छथि !" इच्छा भेल जे कहिऐक दरोगाजीकें की कुकुर कटने छैन्ह जे एहि कनकन्नीमें घरसँ बहरैताह ? किन्तु चुप्पे आगां बढ़ि गेलहुँ। कुहेस भरि गेल छलैक। डाक बँगला पहुँचैत पहुँचैत त हाथ हाथ सूझब कठिन भऽ गेल। घड़ी देखल। साढ़े पांच बाजल छल। नुड़िया-सुरिया कऽ ओछायन पर पड़ैत छी कि फुदन भा प्राती उठौलक,

'जागिये कृपानिधान ! पंछी बन बोले।'

उठिकऽ बैस गेलहुँ। कहलिऐक, 'जगले छी। चाउरवाला मोटरी नेने आउ।'

× × × ×

रातिक जगरनासँ थाकल अत्यन्त रुचिसँ जखन एक कप चाह पिबैत छलहुँ त देखल जे एगोटे शान्त भावसँ कनेक दूर पर ठाढ़ छथि। बुझि पड़ल, सद्यः स्नान, पूजा कैकऽ आबि रहल छथि। हमरा दिस आबऽ चाहैत छथि। ऐबाक संकेत कैलिऐन्ह। अत्यन्त विनीत भावसँ सामने ऐलाह। यावत विचारिते छी कि किछु पुछैत छिऐन्ह, ओ साञ्जलि भए आवृत्ति करऽ लगलाह,

'आयुस्ते नरवीर ! वर्द्धतु सदा हेमन्तरात्रिर्यथा।'

हेमन्तक रातिक स्मरण कय समस्त शरीर सिहरि उठल ! किन्तु ओ निर्विकार भावसँ आगां बढ़ि गेल छलाह—

'लोकानां प्रियवर्द्धनो भव सदा हेमन्तसूर्यो यथा॥'

विचारल जे कहिऐन्ह, अपनेक कविताक सत्कार त राजा भोजे सन काव्यप्रेमी कऽ सकितथि ? किन्तु हेमन्तक सूर्यसँ अपन तुलना होइत देखि मने मने गौरव अनुभव कैल। हेमन्तक सूर्य प्राणिमात्रकें आनन्द दैत छथि त की हम कवियोटाक 'प्रिय-वर्द्धन' नहिं हैब ?

संस्कृतक पण्डित। परम्परासँ अध्यापक। सात्विक ब्राह्मण। माछी माछ ने उपछी पानि। मारि-दंगामें जे समस्त गामकें सामूहिक जुरमाना भेल छैक ताहिमें हिनको २५) टाका ! कहलिऐन्ह, की करबैक ? सृष्टिक यैह नियम थिकैक। जौंक संगे त घून पिसैबे करैत अछि ?

दशाननोऽहरत् सीतां बन्धनं स्यान्महोदधेः।

पण्डितजी कने उत्साहित भए कहलन्हि 'किन्तु समुद्रकें बन्धन देब की रामकें उचित छलैन्ह ?'

हमरा कने हँसी लागि गेल।

एही समयमें उमाकान्त बाबू पहुँचलाह। एतुका हाल सूनि कऽ कहलन्हि, "हः ! एहनो काज लोक करैछ ? हमरा सभकें त खाइत-पिबैत एक बाजिए जाइत अछि। ताहू पर एखन वार्षिक परीक्षा छैक की नहिं ? विद्यार्थी सभ राति भर जगले रहैछ। अहाँ लेल त हमरा कोनो प्रयास नहिए करऽ पड़ैत ?'

हुनका संगे हेड पण्डितजी सेहो रहथिन्ह। बजलाह, 'अच्छा. की करबैक ? शनिक शेपमें चलल रही की नहिं तैं......।'
